श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

★ सनंध ★

ढूंढ़े सबे मेयराज[1] को, सबे मेयराज में सब ।
सो सबे मेयराज जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब ।।

श्री किताब कुरान माफक सनंधे असराफीलें आखिर में कुरान को गाया है, सो अपनी सरत पर जाहेर हुई है । तिनकी ए सनंधे दुलहिन किताब आसमानी हम नाजी फिरके में, आखिर को महंमद मेंहेंदी ले उतरे हैं, सो वास्ते रूहों के ।

सनंध-पेहेली अल्ला रसूल की

अल्ला मुहबा[2] मासूक[3], सो खासी खसम दिल ।
तो नाम धराया रसूलें, आसिक[4] अपना असल ।।१।।

आसिक कह्या अल्लाह को, मासूक कह्या महंमद ।
न जाए खोले मायने, बिना इमाम एक सब्द ।।२।।

आए रसूलें यों कह्या, काजी[5] आवेगा खुद सोए ।
पर फुरमान[6] यों केहेवहीं, जिन कोई केहेवे दोए ।।३।।

एक कह्या न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर ।
भेले जुदे जुदे भेले, माएने मुसाफ[7] इन पर ।।४।।

१. सबे मेयराज वह, जिस रात रसूल साहिब को अर्श अज़ीम में दर्शन हुआ । २. प्यारा । ३. प्रेयसी । ४. प्रेमी । ५. न्यायाधीश । ६. आदेशपत्र । ७. धर्म ग्रंथ कुरान ।

ऐसे माएने गुझ कई, तिन गुझोंमें भी गुझ ।
ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ ।।५।।
फुरमान ल्याया रसूल, तिनमें अल्ला-कलाम[1] ।
सो भेज्या मोमिनों पर, अंदर गुझ अलाम[2] ।।६।।
ए जिन भेज्या सो जानही, या जाने आया जिन पर ।
ए गुझ खसम मोमिन की, बिना रसूल न कोई कादर[3] ।।७।।
खसमें लिखी हकीकत, जोलों न पाइए सोए ।
तोलों असलू मोमिन को, चैन जो कैसे होए ।।८।।
माएने इन कुरान के, जोलों ना समझाए ।
तोलों सो रूह आपको, मोमिन क्यों केहेलाए ।।९।।
तो लिख्या आगूहीं थें, रसूलें अल्ला कलाम ।
करसी जाहेर मोमिन, आखिर आए इमाम ।।१०।।
हकीकत फुरमानकी, कहूं सुनो सब मिल ।
नूर[4] अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल ।।११।।
अब सो आखिर आइया, उठ खड़े रहो मुस्लिम ।
पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम ।।१२।।
सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख ।
अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख ।।१३।।
बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन ।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन ।।१४।।
बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान ।
सबको सुगम जान के, कहूंगी हिंदुस्तान ।।१५।।
बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर ।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर ।।१६।।

।।प्रकरण।।१।।चौपाई।।१६।।

१. ब्रह्म वाक्य । २. भेद । ३. सामर्थ्य वान । ४. अक्षरब्रह्म ।

सनंध आरबीकी

कलाम आरबी हक रसूल ना, फआल कसीदे कलम ।
बोली आरबी सच है रसूल मेरे की, करके सखियां कहत हों ।
लाकिन माय आरफो, मिन्हुम हिंद मुस्लिम ।।१।।
लेकिन, नहीं समझेंगे, इनमें हिंद के मुस्लमान ।।
इस्म्यो हिंद मुस्लिम, अना कलम सिदक ।
सुनो हिंद के मुस्लमानों, मैं कहुं सच ।
मा कलिम अना किजब, मा कुंम इन्द कलिमा हक ।।२।।
ना कहुंगी मैं झूठ जो, तुम पास कलमा सांच है ।।
अल्लजी मुस्लिम असलू, अना हवा मरा कुंम ।
जो कोई मुस्लिम असल हैं, मेरा प्यार बहुत तुम से ।
अना हाकी हकाईयां असलू, लिना इमाम इलंम ।।३।।
मैं कहूं बातें असल की, साथ मेरे इमाम का ग्यान है ।।
लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिमों हिंद कलाम ।
खातर हिंदके मुसलमानों के, मैं कहूं हिंद की बोली ।
अना कुल्ल सवा सवा, अना हुरम इमाम ।।४।।
मुझ को सब बराबर-बराबर है, मैं हुं औरत ईमाम मेंहदी की ।।
हिंद कलाम जिद हवा अना, लागिल हिंद मुस्लिम ।
हिंद की बोली ज्यादे प्यारी है, मुझे खातर हिंद के मुस्लमानों के ।
अल्लजी सिदक यकीन, हुब हक रसूल कदम ।।५।।
जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यार सांचा रसूल के कदमों पर ।।
बेन कुरान मकतूब, अल्लजी रसूल कवल ।
दरम्यान कुरान के लिखा है, जो कि रसूल ने आगे ही से ।
जाया मेहेदी कलम, लिसान लुगाद बदल ।।६।।
आए के मेंहदी कहेगा, जुबान बोल बदल कर ।।
वाहिद लिसान वाहिद लुगद, अल्लजी सेसमा उलगवर ।
एक जुबान एक बोल, जो कुछ आसमान जमीन में हैं ।
बेन हिम इमाम लुकनत, लिसान लुगाद ला कादर ।।७।।
दरम्यान इनों के इमाम मेंहदी तोतला, जुबान बोलने से ना समरथ ।।

कुल्ल आदम ओ कुल्ल गिरो, मा कुल सुर आ वाहिद ।
सारे आदमी और सब उम्मत जो कोई, है सब की राह एक है ।
लुगा तरीक मा मिसलहू, कमा फास काल महंमद ।।८।।
बोलना राह नहीं है उन जैसा, ऐसे जाहेर कह्या मुहम्मद साहेब ने ।।
अल्लजी मकतूब हाकिमा, बेन कुरान कलाम ।
जो कि लिख्या है ऐसा, दरम्यान कुरान के वचन ।
हाला अना कएफ कलमो, लुगाद बदल इमाम ।।९।।
अब मैं क्यों कर कहुं, एक बोल बिना इमाम मेंहदी ।।
हरफ कमा मकतूब, अल्लजी हक रसूल ।
सब्द जैसा कोई लिख्या है, जो सांचे रसूल अल्लाह ने ।
व ला इतरो मिन्हुंम लुगा, फआल इमाम कुल्ल कबूल ।।१०।।
कदी न जाबे इनमें से एक बोल, किए इमाम ने सब कबूल ।।
अल्लजी इमाम अगबू, हुब हस्ना हिंद मकान ।
जो इमाम मेहेंदी ने पसंद किया, प्यारी है वही हिंद की ठौर ।
कुल्लू लाए जाया कलाम गैर, मिसल हिंद इलाने कफयान ।।११।।
कही न आवे बोली और मानिंद, हिंद के नहीं तो बस है ।।
लागिल मुस्लिम कुरब ना, अना फाआली कुंम इसहल ।
खातर मुस्लिम कबीलें मेरे के, मैं कर देऊं तुम को सहल ।
अना कलिम कलाम कुंम, जालिक यकून कुम दीन सुगल ।।१२।।
मैं कहुं बोली तुम्हारी, ज्यों होवे तुम को दीन में सुख विलास ।।

।।प्रकरण।।२।।चौपाई।।२८।।

हिंदुस्तानी भाखा में चौपाई सुरू

भेख भाखा जिन रचो, रचियो माएने असल ।
भई रोसन जोत रसूल की, अब खुले माएने सकल ।।१।।
लिए माएने ऊपर के, एते दिन इन जहान ।
मूल माएने पाए बिना, सुध ना पड़ी बिरिध[१] हान[२] ।।२।।
करना सारा एक रस, हिंदू मुसलमान ।
धोखा सबका भान के, सब का कहूंगी ग्यान ।।३।।

१. लाभ । २. हानि, नुकसान ।

पैंडे सब देखाइए, ज्यों समझे सब कोए ।
मत सबन की देखाइए, ज्यों एक रस सब होए ।।४।।
मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंडे दरसन ।
देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन[1] सबन ।।५।।
एती जिमी सब छोड़के, जित आए मेंहेदी महंमद ।
सो भली जिमी भाखा भली, इत हद मेट होसी बेहद ।।६।।
एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए ।
सो ए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए ।।७।।

।।प्रकरण।।३।।चौपाई।।३५।।

सनंध इमाम के स्वाल जवाब की

सुनियो बानी मोमिनो, हुती जो अगम अकथ ।
सो बीतक कहूं तुमको, उड़ जासी गफलत ।।१।।
हुकम हुआ इमाम का, उदया मूल अंकूर ।
कलस होत सबन का, नूर पर नूर सिर नूर ।।२।।
कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन ।
सो तो अब जाहेर हुई, जो मेंहेंदी महंमद थें उतपन ।।३।।
मुझे मेहेर मेहेबूबे करी, अंदर परदा खोल ।
सो सुख निसबतियन सों, कहूं सो दो एक बोल ।।४।।
मासूकें मोहे मिल के, करी सो दिल दे गुझ ।
कहे तूं दे पड़ उत्तर, जो मैं पूछत हों तुझ ।।५।।
तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन ।।६।।
तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार ।
बिध सारी याकी कहे, इन जिमी के प्रकार ।।७।।

१. यकीन, विश्वास ।

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात ।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत ।।८।।

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल ।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल ।।९।।

मैं ना पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर ।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर ॥१०॥

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड ।
चौदे तबक चारों तरफों, प्रपंच खड़ा प्रचंड ॥११॥

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख ।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत ॥१२॥

यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र ।
तिमर तेज रूत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र ॥१३॥

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास ॥१४॥

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर ।
तिनथें कछू ना सूझहीं, जिमी आप ना घर ॥१५॥

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर ।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर ॥१६॥

काल न देखे इन फेरे, याही तिमर के फंद ।
ए सूरज आंखों देखिए, पर इन फंद के बंध ॥१७॥

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए ।
ए पांचों आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए ॥१८॥

या बिध अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसो दिस ।
ए मोहजल लेहेरां लेवही, सागर सबे एक रस ॥१९॥

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल ।
कहां कल किल्ली[1] कुलफ[2], जो द्वार न पाइए सूल[3] ॥२०॥

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर[4] ॥२१॥

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल[5] ।
ए सुध काहूं ना परी, कई गए कर कर बल ॥२२॥

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम ।
इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम ॥२३॥

ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्याध को रचियो रोग ।
छुटकायो छूटे नहीं, नहीं न देखन जोग ॥२४॥

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर ।
गुन पख अंग इंद्रियों, कियो अंधेरी में अंधेर ॥२५॥

तत्व पांचों जो देखिए, तो यामें ना कोई थिर ।
प्रले होसी पलमें, वैराट सचराचर ॥२६॥

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार ।
नेत नेत केहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार ॥२७॥

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार ।
निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार ॥२८॥

इत पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन ।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे न कोई निकसन ॥२९॥

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद ।
ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद ॥३०॥

दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान ।
ए राह दोऊ जुदी परी, मिले ना काहू तान ॥३१॥

१. चाबी । २. ताला । ३. ढ़ंग । ४. रास्ता । ५. सिलवट ।

दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान ।
दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान ॥३२॥

कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान ।
बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान ॥३३॥

ग्याने प्यारी स्यानप, दरदे सेती वैर ।
दरदें प्यारी दिवानगी[1], स्यानप लगे जेहेर ॥३४॥

इत जुध किए कई सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे[2] पाखर[3] ।
वचन बड़े रण बोलके, उलट पड़े आखिर ॥३५॥

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए ।
कई उदम जो करहीं, तो भी तिमर ना छोड़े ताए ॥३६॥

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद ।
खेल तो है एक खिन का, पर ए जाने सदा अनाद ॥३७॥

खेल खावंद जो त्रैगुन, जानों यार्थें जासी फेर ।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर ॥३८॥

ए द्वार कोई खोलके, कबहूं न निकस्या कोए ।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए ॥३९॥

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध ।
या बिध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध ॥४०॥

निज बुध आवे हुकमें, तोलों ना छूटे मोह ।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए ॥४१॥

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न ।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन ॥४२॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥७७॥

१. पागलपन । २. आयुध । ३. कवच ।

सनंध खोज की

पिया मैं विध विध तोको ढूंढ़िया, छोड़ धंधा सब और ।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बतावे पिया ठौर ।।१।।

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल ।
कोई ना कहे हम देखिया, जिन नीके कर खोजेल ।।२।।

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबन की मत ।
जोलों साहेब ना पाइए, तोलों कीजे कासों हेत ।।३।।

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार ।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार ।।४।।

ए झूठा छल कठन, कांहूं न किसी की गम ।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम ।।५।।

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत ।
इनमें सीधा दौड़ के, कोई ना निकस्या जीत ।।६।।

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए ।
इस मंडल में आतमा, चल्या न कोई जगाए ।।७।।

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार ।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक सिर मार ।।८।।

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट ।
तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं न देख्या दृष्ट ।।९।।

वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम[1] ।
एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम ॥१०॥

आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध ।
केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध ॥११॥

१. आदम की संतान (वंशज) ।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक ।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक ॥१२॥

बुध तुरिया[1] दृष्ट श्रवना, जहां लों पोहोंचे मन ।
ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन ॥१३॥

वेदांती भी केहे थके, द्वैत खोजी पर पर ।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर ॥१४॥

मन चित्त बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए ।
खट प्रमान ते रहित है, सो दृढ़ कैसे होए ॥१५॥

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतै को विस्तार ।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार ॥१६॥

ए अलख किने ना लखी, आदै थें अवल[2] ।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल ॥१७॥

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर आवे जाए ।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए ॥१८॥

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह ।
छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह ॥१९॥

जो कछू कहिए वचने, सो सब मिने गफलत ।
ना सरूप ना काहू वतन, तो क्यों कर जाइए तित ॥२०॥

पेड़ काली किन ना देखी, सब छायाही में रहे उरझाए ।
गम छायाकी भी ना पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए ॥२१॥

जाए ना उलंघी देखीती, ना कछु होए पेहेचान ।
तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान ॥२२॥

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत ।
किने ना कह्यो ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत ॥२३॥

१. चित्त । २. सर्व प्रथम (अव्वल) ।

या विध ग्यान जो चरचहीं, सो मैं देख्या चित ल्याए ।
ज्यों मनुआं सुपने मिने, बेसुध गोते खाए ॥२४॥

खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिनमें बंझा पूत ।
मदमाते मरकट[१] ज्यों, करे सो अनेक रूप ॥२५॥

खिनमें कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए ।
यों संग संसा दृढ़ हुआ, सो धोखे रहे फिराए ॥२६॥

खिनमें कहे है आप में, खिनमें कहे बाहेर ।
खिनमें माहें न बाहेर, यों सब्द न कोई निरधार ॥२७॥

खिनमें कछू और कहे, खिनमें और की और ।
सो बात दृढ़ क्यों होवही, जाको वचन ना रेहेवे ठौर ॥२८॥

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए ।
एसे साधू सास्त्रमें, दृढ़ न सब्दा कोए ॥२९॥

ए सबे सींग ससक[२], बंझा पूत वैराट ।
फूल गगन नाम धराए के, उड़ाए देवे सब ठाट ॥३०॥

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान ।
देखीतां छल छेतरे[३], हाए हाए ऐसी नार सुजान ॥३१॥

कोई ना परखे छल को, जिन छलमें हैं आप ।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात ॥३२॥

अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर ।
ए खोजें सब द्वैत में, ओतो अद्वैत लों अंधेर ॥३३॥

ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान ।
सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान ॥३४॥

ए खेल सारा कुदरती, फिराया फिरस्तों फेर ।
ए इंड गोलक बीच में, गिरद[४] गफलत की अंधेर ॥३५॥

१. बंदर । २. खरगोश । ३. धोखा खाना । ४. आस पास (चारों ओर) ।

कुदरत को माया कही, गफलत मोह अंधेर ।
या विध चौदे तबकों, कह्या फिरस्ते का मन फेर ॥३६॥

ए खेल सारा सुन्य का, फिरे मने मन फेर ।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर ॥३७॥

सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा ना निकस्या पार ।
खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार ॥३८॥

केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन्य को चाहें ।
सो गले सब इतहीं, आगे ना निकसे पाए ॥३९॥

फिरे जहां थें नारायन, नाम धराया निगम ।
सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम ॥४०॥

सुन्य की बिध केती कहूं, ए इंड जाके आधार ।
नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार ॥४१॥

अब नेक तो भी कहूं, सुन्य मंडल की सुध ।
जाको कोई ना उलंघे, अगम अगाध या बिध ॥४२॥

इत नहीं तत्व गुन निरगुन, पख नहीं परमान ।
अंग ना इंद्री जान ना आवन, लख नहीं निरमान ॥४३॥

इत आद अंत ना थिर चर, नर ना कोई नार ।
अंधेर ना कछू उजाला, ना निराकार आकार ॥४४॥

जिमी जल ना वाए अगनी, ना सब्द सोहं आसमान ।
ना कछू जोति रूप रंग, नहीं नाम ठाम कोई बान ॥४५॥

ना जीव करम ना काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान ।
तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावें सदा प्रवान ॥४६॥

बीज बिरिख[1] ना कमल फल, भंग ना कछू अभंग ।
मोहादिक एही सुन्य, बीच सरूप या संग ॥४७॥

१. वृक्ष ।

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नींद निदान ।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान ॥४८॥

ए ख्वाबी दम सब नींद लो, दम नींदै के आधार ।
जो कदी[1] आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार ॥४९॥

जिनहूं जैसा खोजिया, सब बोले बुध माफक ।
मैं देखे सबद[2] सबन के, सो गए जाहेर मुख बक ॥५०॥

ए पुकार खोजी सुनके, हट रहे पीछे पाए ।
पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए ॥५१॥

यामें जो बुजरक हुए, सो सीतल भए इन भांत ।
ना सुध छल ना पार की, यों गले सुन्य ले स्वांत ॥५२॥

या बिध तो भई नास्त, सो नास्त जानो जिन ।
सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन ॥५३॥

जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान ।
सो छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान ॥५४॥

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ ।
खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ ॥५५॥

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास ।
प्रेमै में मगन भए, ताए होए गयो सब नास ॥५६॥

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए ।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए ॥५७॥

सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल ।
या विध कोई न समझे, बात पड़ी है बल ॥५८॥

ए जो साधू सास्त्र पुकारहीं, सो तो सुनता है संसार ।
पर गुझ किनहूं न पाइया, सोई सबद हैं पार ॥५९॥

१. कभी भी । २. पद (वाक्य - वचन) ।

देखे सारे सास्त्र, सो तो गोरख धंध ।
मूल कड़ी पाए बिना, देखीते ही अंध ॥६०॥

ऐसा तो कोई ना मिल्या, जो दोनों पार प्रकास ।
मगन पिया के प्रेम में, भी स्यानप ग्यान उजास ॥६१॥

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध ।
माएने गुझ बताए के, कहे वतन की बिध ॥६२॥

सबद सारे वैराट के, बोलत अगम अगम ।
कोई न कहे रसूल बिना, जो खुद पें आए हम ॥६३॥

ए नबिएँ जाहेर कह्या, मैं पार से आया रसूल ।
खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल ॥६४॥

मैं कारज खसम के, ले आया फुरमान ।
आखिर इमाम आवसी, तब मैं भी संग सुभान ॥६५॥

मैं आया हुकम हाकिम का, पर आवेगा हाकिम ।
करसी कजा सबन की, तब संग आखिर हम ॥६६॥

ए फुरमान तब बांचसी, इमाम आवसी जब ।
लिखिया जो इसारतें, सब जाहेर होसी तब ॥६७॥

काजी कजा कर के, देसी परदा उड़ाए ।
परदा उड़े सब उड़सी, लेसी कयामत उठाए ॥६८॥

खसम सुध सब देवही, गुझ बतावे कुरान ।
बातें कहे वतन की, पैगंमर प्रवान ॥६९॥

ए सबद[1] तो जाहेर कहे, पर आया न किनो आकीन[2] ।
तो लगे सब छल को, हिंदू या मुसलमीन ॥७०॥

ए सबद मैं दृढ़ किए, पिया ना करें निरास ।
रूह मेरी यों कहे, होसी दुलहे सों विलास ॥७१॥

१. यथार्थ ज्ञान । २. यकीन ।

नबी सबद मोहे मद चढ़्यो, बढ़्यो बल महामत ।
अब एक खिन ना रहे सकूं, उड़ गई कहुंए स्वांत ॥७२॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥१४९॥

सनंध विरह तामस की

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,

अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर ।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर ॥१॥

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरों किने न अगमाए ।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए ॥२॥

सागर नीर खारे लेहेरें मार मारे फिरे, बेटों बीच बेसुध पछाड़ खावे ।
खेले मच्छ मिले गले ले उछाले, संधो संध बंधे अन्धों योंज भावे ॥३॥

दाहो दसे दसो दिस सब धखे, लाल झाला चले इंड न झलाए ।
फोर आसमान फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए ॥४॥

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली[१], तहां हाथ न टिके पपील[२] पाए ।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनल ना चले उड़ाए ॥५॥

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए ।
डार आकार संभार जिन ओसरे[३], दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए ॥६॥

बहुत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे ।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे ॥७॥

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास ।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पियाऐं अग्या जाग करूं विलास ॥८॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥१५७॥

१. फिसलने वाला । २. चींटी । ३. भूले ।

सनंध विरह इस्क वृध की

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे ।
सनमंध मूल जानके, सेज सुरंगी[1] पर ले ।।१।।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस ।
न आवे अंदर बाहेर, या बिध सूकत स्वांस ।।२।।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन ।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन ।।३।।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार ।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार ।।४।।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाए ।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाए ।।५।।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग ।
हेम हीरा सेज पसमी[2], अंग लगावे आग ।।६।।

विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए ।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए ।।७।।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आँगन न सोहाए ।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए ।।८।।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए ।
राज पृथी पांव दाब के, निकसी या बिध होए ।।९।।

विरहा न देवे बैठने, उठने भी ना दे ।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले ॥१०॥

आठों जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक ।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ॥११॥

१. रेशम की सुंदर शैय्या । २. मुलायम ऊन ।

ए बिध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान ।
परदा बीच का टालने, ताथें विरहा प्रवान ॥१२॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥१६९॥

राग मेंवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरो होए ।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए ॥ मेरे दुलहा ॥
तारूनी तलफे विलखे विरहनी, विरहनी विलखे कलपे कामनी ॥टेक॥१॥

बिछुरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सोहागिन ।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन ॥२॥

विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए ।
सो झालें बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए ॥३॥

विरहा न छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक ।
पिंड न देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक ॥४॥

विरहिन विरहा बीच में, कियो सो अपनो घर ।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर ॥५॥

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए ।
विरहिन गिरी सो ना उठ सकी, रही मूल अंकूर भराए ॥६॥

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार ।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट[1] न पाइए पार ॥७॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥१७६॥

राग मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान ।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान ॥१॥

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन ।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन ॥२॥

१. टापू ।

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद ।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद ।।३।।

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन ।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन ।।४।।

और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए ।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए ।।५।।

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन ।
इस्क आगे चल गया, सब्द समाना सुंन ।।६।।

सब्द जो सूक्या अंग में, हले नहीं हाथ पाए ।
इस्क बेसुध ना करे, रही अंदर विलखाए ।।७।।

पांपण[१] पल ना लेवही, दसों दिस नैन फिराए ।
देह बिना दौड़े अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाए ।।८।।

इस्क को एह लछन, जो नैनों पलक ना ले ।
दौड़े फिरे ना मिल सके, अंदर नजर पिया में दे ।।९।।

नजरों निमख ना छूटहीं, तो नहीं लागत पल ।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल ।।१०।।

जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो तासों प्यार ।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार ।।११।।

।।प्रकरण।।९।।चौपाई।।१८७।।

राग धना काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए ।
अब छल बल मोहे क्या करे, मोह आद थें दियो है उड़ाए ।।१।।

दरद जो तेरे दुलहा, कर डार्यो सब नास ।
पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास ।।२।।

१. आंखों की पलक ।

मैं कहावत हों सोहागनी, जो विरहा न देऊं जिउ ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ ।।३।।

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिया मिलन ।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सोहागिन ।।४।।

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस ।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिया विलास ।।५।।

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम ।
विरहा आगे क्या जीव, ए कहत लगत मोहे सरम ।।६।।

माया काया जीवसों, भान भूंन टूक कर ।
विरहा तेरा जिन दिस, मैं वारूं तिन दिस पर ।।७।।

जब आह सूकी अंगमें, स्वांस भी छोड़्यो संग ।
तब तुम परदा टाल के, दियो मोहे अपनो अंग ।।८।।

मैं तो अपनो दे रही, पर तुमहीं राख्यो जिउ ।
बल दे आप खड़ी करी, कछू कारज अपने पिउ ।।९।।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन ।
आस भी पूरी सोहागनी, वृध[1] भी राख्यो विरहिन ।।१०।।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर ।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर ।।११।।

।।प्रकरण।।१०।।चौपाई।।१९८।।

सनंध विरह के प्रकास की

एह बात मैं तो कहूं, जो केहने की होए ।
एह इमामें रीझ के, दया करी अति मोहे ।।१।।

सुनियो बानी मोमिनों, दीदार दिया हकें जब ।
परदा सारा उड़ गया, हुआ उजाला सब ।।२।।

१. टेक, लाज ।

कह्या जो नबिऐं इमाम, तिन खुद खोले द्वार ।
दरवाजे सब खोल के, मोहे देखाया पार ।।३।।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।
ता दिन थें मेहेर पसरी, पल पल चढ़ते रंग ।।४।।

मिलाप हुआ जब मेंहेंदी से, तब कह्या महामती नाम ।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम ।।५।।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान ।
नजरों सब जाहेर हुआ, उड़ गया उनमान[1] ।।६।।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत ।
ए मेहेर जुबां क्यों कर कहूं, गई मूल से गफलत ।।७।।

ए झूठी अबलों न जानती, क्या है क्यों उतपत ।
सो अब सब विध समझी, यों होसी फना कुदरत ।।८।।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप ।
कंठ लगाई कंठसों, या बिध कियो मिलाप ।।९।।

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम ।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम ॥१०॥

बीज रूह संग निज बुध, सो ले उठिया अंकूर ।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर ॥११॥

नातो एह बात जो गुझ की, सो क्यों होवे जाहेर ।
पर मोमिन प्यारे मुझ को, सो कर ना सकूं अंतर ॥१२॥

तो भी कहूं नेक नूर की, कछुक इसारत अब ।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी मिलसी सब ॥१३॥

ए जो विरहा बीतक कही, इमाम मिले जिन सूल ।
अब फेर कहूं निज नूर की, जासों पाइए माएने मूल ॥१४॥

१. अनुमान ।

सुनियो रूहें मोमिनों, जो इन मासूक की विरहिन ।
जो चाहे मेंहेंदी महंमद को, मैं ताए कहूं वचन ॥१५॥

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए ।
या विध विरहा उद्दम की, जो कोई किया चाहे ॥१६॥

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारो धरम ।
विरहिन कबूं ना करे, यों विरहा अनूकरम ॥१७॥

विरहा सुनते मासूक का, आह ना उड़ गई जिन ।
ताए वतन रूहें यों कहे, नाहीं न ए विरहिन ॥१८॥

जो होए आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध ।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां से बुध ॥१९॥

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए ।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे ॥२०॥

या तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें ।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए ॥२१॥

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे ।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए ॥२२॥

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राख के अंग ।
आए देवे सुध और को, ताए क्यों कहिए पतंग ॥२३॥

मैं तो बीतक तब कही, जब लई मासूकें उठाए ।
जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए ॥२४॥

ए तो विरहा उपज्या ख्वाब में, चढ़ते चढ़ते पाए ।
जब विरहा तामस बढ़्या, तब नींद दई उड़ाए ॥२५॥

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार ।
सोहागिन अंग इमाम को, वतन पार के पार ॥२६॥

अब कहूं मोमिन की, जाए कहिए सोहागिन ।
ए विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन ॥२७॥

सो सोहागिन जेतियां, इमाम की विरहिन ।
सो अन्तर हकें पकड़ी, ना तो रहे ना तन ॥२८॥

ए सुध दई इमामें, मोहे गुझ कियो प्रकास ।
तो ए जाहेर होत है, गयो तिमर सब नास ॥२९॥

मेंहेंदी महंमद प्यारे मोमिन, सो जुबां कह्यो ना जाए ।
पर हुआ है मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए ॥३०॥

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत ।
ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए देत ॥३१॥

छल तें मोहे छुड़ाए के, कछु दियो विरहा संग ।
सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनो अंग ॥३२॥

अंग नूर बुध देय के, कहे तूं प्यारी मुझ ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हूं तुझ ॥३३॥

तुम दुख पाया मुझे सालहीं[1], अब सब सुख तुम हस्तक ।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक ॥३४॥

दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए ।
हम भी होसी जाहेर, पेहेले सोहागनियां जगाए ॥३५॥

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन ।
प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देख मन ॥३६॥

तोसों ना कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार ।
माएने गुझ बताए के, खोल दे पार द्वार ॥३७॥

जो कबूं जाहेर ना हुई, सो ए करी तुझे सुध ।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध ॥३८॥

१. चुभते हैं ।

तोहे तो सब सुध परी, कहूं अटके नहीं निरधार ।
आगे होए सोहागनी, कराओ सबों दीदार ॥३९॥

चौदे तबक कायम होएसी, सब हुकम के प्रताप ।
ए सोभा तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप ॥४०॥

जो कोई सब्द संसारमें, ना खुले माएने कब ।
सो सब खातिर मोमिनों, तूं खोलसी माएने अब ॥४१॥

तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत ।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर भई महामत ॥४२॥

खेल किया तुम खातिर, सो तूं कहो आगे मोमिन ।
पेहेले खेल देखाए के, पीछे मूल वतन ॥४३॥

अंतर रूहोंसों जिन करो, जो मोमिन हैं अर्स घर ।
पीछे चौदे तबक में, जाहेर होसी आखिर ॥४४॥

बड़ा सुख आगे मोमिन, पीछे सुख संसार ।
एक दीन सब होएसी, घर घर सुख अपार ॥४५॥

तें वचन कहे जो मुख थें, होसी तिनसे बड़ो प्रकास ।
असत उड़सी तूल ज्यों, होसी कुफर सब नास ॥४६॥

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल ।
जो साख देवे रूह अपनी, तो लीजे सिर कौल ॥४७॥

देत हों बल सबन को, जो हैं असलू मोमिन ।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन ॥४८॥

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग ।
बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग ॥४९॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥२४७॥

सनंध-मोमिन को ढूंढ़ने की

अब ढूंढ़ों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर ।
सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर ।।१।।

नूर पार पिउ एक खुद हैं, और न दूजा कोए ।
और नार सब माया, यामें भी रूह दोए ।।२।।

इत असलू रूह विष्णु की, दूजी रूह कुफरान ।
इन दोऊ से न्यारे मोमिन, सो आगे कहूंगी पेहेचान ।।३।।

मोमिन सुख असल वतनी, विष्णु का सुख और ।
दुनी विष्णु कायम होएसी, कजा कहूंगी तिन ठौर ।।४।।

अब लछन[1] देखो मोमिन के, जो अरवाहें अर्स घर ।
ए वतनी वचन सुन के, आवत हैं तत्पर[2] ।।५।।

अटक रह्या साथ आधा, जिन खेल देखन का प्यार ।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार ।।६।।

भूल गइयां खेल में, जो मोमिन हैं समरथ ।
नूर इमाम को मुझ पे, केहे समझाऊं अर्थ ।।७।।

सबों को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन ।
खेल देखाऊं खोल के, जिन बिध ए उतपन ।।८।।

ए खेल है जोरावर, बड़ो ते रचियो छल ।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊँ बल ।।९।।

तुम नाहीं इन छल के, और छल को जोर अमल ।
सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल ॥१०॥

तुम आइयां छल देखने, भिल[3] गैयां मांहें छल ।
छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल ॥११॥

१. लक्षण । २. एक दम । ३. लिप्त होना ।

ए झूठी तुम को लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग ॥१२॥

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस ।
कमी कहे मैं ना करूं, पर तुम छल हुआ सिरपोस[1] ॥१३॥

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन ।
जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन ॥१४॥

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सब मोमिन ।
ए हांसी सत वतन की, कोई मोमिन कराओ जिन ॥१५॥

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दुजी बेर ।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो खसम सों बैठी मुख फेर ॥१६॥

तुमें सुध छल ना अपनी, ना सुध हक वतन ।
बताए देऊं या विध, ज्यों दृढ़ होवे आप मन ॥१७॥

ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल ।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल ॥१८॥

अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम ।
नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमिन मुस्लिम ॥१९॥

मोमिन मांग्या मोले[2] पें, सो भूल गैयां बातें मूल ।
सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल ॥२०॥

या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर ।
खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर मांहें बाहेर ॥२१॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥२६८॥

सनंध-खेल के मोहोरों की

अब निरखो नीके कर, जो देखन आइयां तुम ।
मांग्या खेल हिरस[3] का, सो देखावें खसम ॥१॥

१. सिर ढ़क लिया । २. धनी से । ३. चाहना ।

भोम भली भरथ खंड की, जहां आई निध नेहेचल ।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल ।।२।।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए ।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए ।।३।।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन ।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन ।।४।।

तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिंदुस्तान ।
जहां मेंहेंदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान ।।५।।

जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख से ना निकसे दम ।
अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुस्लिम ।।६।।

ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन ।
ए विध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन ।।७।।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान ।
खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान ।।८।।

स्वांग काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग ।
चले आप चित चाहते, और रहे भेले संग ।।९।।

कई दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक ।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ बसेक ॥१०॥

भेख सारे बनाए के, करें हो हो कार ।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार ॥११॥

विध विध के भेख काछें, सारे जान प्रवीन ।
वरन चारों खेलें चित दे, नाही न कोई मत हीन ॥१२॥

पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार ।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार ॥१३॥

वरन सारे पसरे, लगे लोभें करें उपाए ।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए ॥१४॥

नहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध ।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध ॥१५॥

सनमंध करते आप में, खुसाल हाल मगन ।
केसर कसूंबे पेहेर के, देखलावें लोकन ॥१६॥

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र ।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र ॥१७॥

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार ।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार ॥१८॥

गाड़े जालें हाथ अपने, रूदन करें जल धार ।
सनमंधी सब मिलके, टल वले नर नार ॥१९॥

जनम होवे काहू के, काहू के होए मरन ।
हांसी हिरदे काहू के, काहू के सोक रूदन ॥२०॥

जर[1] खरचें खाए गफलतें, करें बड़े दिमाक[2] ।
कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक ॥२१॥

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए ।
किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए ॥२२॥

कोई मिने वेहेवारिए, कोई राने राज ।
कई मिने रांक रलझलें, रोते फिरें अकाज ॥२३॥

कई सोवें सोने के पलंग, कई ऊपर ढोलें वाए ।
रहे खड़े आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए ॥२४॥

कई बैठें सुखपाल में, कई दौड़े उचाए[3] ।
जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए ॥२५॥

१. धन । २. अहंकार । ३. उठाकर ।

कोई बैठे तखतरवा[1], आगे तुरी गज पाएदल ।
अति बड़े बाजंत्र बाजहीं, जाने राज नेहेचल ॥२६॥

साम सामी करें फौजें, लरावें लोह अंग ।
जिमी खावंद नाम धरावने, कई लर मरें अभंग ॥२७॥

कोई मिने होए कायर, छोड़ सरम भाग जाए ।
कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए ॥२८॥

कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक ।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक ॥२९॥

कई करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध ।
मारते अरवाह काढ़हीं, ए खेल या सनंध ॥३०॥

जीते हरखे पौरसे, उमंग अंग न माए ।
हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए ॥३१॥

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग ।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग ॥३२॥

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत ।
पवाड़े[2] कई बिना हिसाबें, खेल होत या रीत ॥३३॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥३०१॥

सनंध-खेल में खेल की

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेले कर सांच ।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मजहबों[3] रांच ॥१॥

मैं बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए ।
नहीं पटंतर दीन पैंडे, सो जुदे कर देऊं दोए ॥२॥

इन खेल में जो खेल हैं, सो केहेत न आवे पार ।
इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार ॥३॥

१. सिंहासन (विशेष प्रकार का खुला तखत) । २. झंझट । ३. धर्म - संप्रदाय ।

कई बिना हिसाबे द्योहरे, जुदे जुदे अपने मजहब ।
कई भांतों कई जिनसों, करत बंदगी सब ।।४।।

खोजे कोई न पावहीं, वार ना पाइए पार ।
ले बुत बैठावें द्योहरे, कहें हमारा करतार ।।५।।

कई सराए अपासरे, कई ताल कुंड बिरबाव[१] ।
कई बिध बांधे बेरखे[२], कई साल पोसाल टिकाव ।।६।।

कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान ।
कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान ।।७।।

कई भेख जो साध कहावहीं, कई पंडित पुरान ।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान ।।८।।

कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख ।
सुध आप ना पार की, हिरदे अन्धेरी विसेख ।।९।।

कई लोचें कई मूड़ें, कई बढ़ावें केस ।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस ॥१०॥

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बहुत फारें कान ।
कई माला तिलक धोती, कई धरे बैठे ध्यान ॥११॥

कई लंगरी बोदले, कई सेख दुरवेस[३] ।
कई इलम कई आलम, कई पढ़े हुए पेस[४] ॥१२॥

कई जिंदे गोस कुतब, कई मलंग मीर पीर ।
कई औलिए कई अंबिए, कई मिने फकीर ॥१३॥

कई पैगंमर आदम, कई फिरे फिरस्ते फेर ।
तबक चौदे देखिए, किन ठौर न छोड़ी अन्धेर ॥१४॥

कई सीलवंती सती कहावहीं, कई आरजा अरधांग ।
जती वरती पोसांगरी, ए अति सोभावें स्वांग ॥१५॥

१. बावली । २. झंडे । ३. फकीर । ४. बूढ़े ।

कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास ।
कई जुगते देह दमें, पर छूटे नहीं जम फांस ॥१६॥
कई सिवी कई वैष्णवी, कई साखी समरथ ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ ॥१७॥
कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदांत ।
कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिधांत ॥१८॥
अनेक अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल ।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहूं छल ॥१९॥
कई होदी[1] बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड ।
बिना हिसाबे खेलहीं, जाहेर छल पाखंड ॥२०॥
कई डिंभ[2] करामात, कई जंत्र मंत्र मसान ।
कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान ॥२१॥
कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन ।
कई मठ वाले पिंड पाले, कई फिरे होए नगन ॥२२॥
कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद ।
कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द ॥२३॥
कई संत जो महंत, कई देखीते दिगंमर ।
पर छल ना छोड़े काहूं को, कई कापड़ी कलंदर ॥२४॥
कई आचारी अप्रसी[3], कई करे कीरंतन ।
यों खेलें जुदे जुदे, बस परे सब मन ॥२५॥
कई कीरंतन करें बैठे, कई जाग जगन ।
कई कथें ब्रह्म ग्यान, कई तपे पंच अगिन ॥२६॥
कई इंद्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह ।
कई ऊर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए ॥२७॥

१. होदी (हाथी पर बैठने की काठी) पर बैठने वाले साधु । २. पाखंड । ३. छुआ-छूत मानने वाला ।

कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस ।
कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंढ पाओस ॥२८॥
कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम ।
कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन[1] ॥२९॥
कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप ।
कई करें काल की साधना, जिया चाहें कलप ॥३०॥
कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन ।
कई सूकें बिना खाए, कई करें पिंड पतन ॥३१॥
यों वैराग जो साधना, कई जुदे जुदे उपचार ।
यों चलें सब पंथ पैंडे, खेले सब संसार ॥३२॥
खेले सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार ।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाए कतार ॥३३॥
कोई ना चीन्हें आप को, ना सुध अपनो घर ।
जिमी न पैंडा सूझे काहू, जात चले या पर ॥३४॥
बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर ।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ॥३५॥
आपे नाम जुदे जुदे, खुदा के धरे अनेक ।
अनेक रंगे संगे ढ़ंगे, बादे करे विवेक ॥३६॥
सुध इनको तो परे, जो ए आप सांचे होए ।
तो कुरान के माएने, इत खोल ना सके कोए ॥३७॥
ए देखो तुम मोमिनों, खेल बिना हिसाब ।
ए खेल तुम खातिर, खसमें रचिया ख्वाब ॥३८॥
मोमिनों के मेले मिने, कोई आए न सके रूह ख्वाब ।
ए ख्वाब नीके पेहेचानियो, ज्यों होवे दीन सवाब[2] ॥३९॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥३४०॥

१. चरित्र । २. पुण्य ।

सनंध-जुदे जुदे फिरकों के जिद की

अजूं देखाऊं नीके कर, ए जो खैंचा खैंच करत ।
ए झूठे झूठा राचहीं, पर सुध न काहूं परत ।।१।।
खेल खेलें और रब्दें, मिनो मिने करें क्रोध ।
जैसे मछ गलागल, छोड़े ना कोई व्रोध ।।२।।
कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान ।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरे सब उनमान ।।३।।
कोई कहे करम बड़ा, कोई केहेवे काल ।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल[1] ।।४।।
कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप ।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत ।।५।।
कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत ।
कोई केहेवे मत बड़ी, या विध कई जुगत ।।६।।
कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत ।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत ।।७।।
कोई कहे कीरंतन बड़ा, कोई कहे श्रवन ।
कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन ।।८।।
कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन ।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन ।।९।।
कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास ।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विस्वास ॥१०॥
कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस ।
कोई कहे पन बड़ा, यों खेलें परे परवस ॥११॥

१. झूठ ।

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन ।
कोई कहे आदे आद माता, यों करत तानों तान ॥१२॥

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम ।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन ॥१३॥

कोई कहे सकल व्यापक, देखीतां सब ब्रह्म ।
कोई कहे ए ना लह्या, यों करे लड़ाई भूले भरम ॥१४॥

कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन ।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन ॥१५॥

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार ।
कोई कहे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार ॥१६॥

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे परसोतम ।
वेद के वाद अन्धकारे, करें लड़ाई धरम ॥१७॥

जाहेर झूठा खेलही, हिरदे अति अन्धेर ।
कहे हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर ॥१८॥

पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट ।
ए जो विगत[1] खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ॥१९॥

कोई हेम गले अगनी जले, भैरव करवत ले ।
खसम को पावें नहीं, जो तिल तिल काटे देह ॥२०॥

भेख जुदे जुदे खेलहीं, जाने खेल अखंड ।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड ॥२१॥

खसम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए ।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥२२॥

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल ।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल ॥२३॥

१. हाल ।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन ।
तो ए क्यों पावें खुद को, जाको मूल मोह सुंन ॥२४॥

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर ।
ए छल मोहोरे छल के, खेलत हैं सत कर ॥२५॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥३६५॥

सनंध-वैराट की जाली

ए खेल रच्यो हम खातिर, सो देखन आइयां हम ।
ए जो प्यारे मेंहेंदी महंमद, जेती रूह मुस्लिम ॥१॥

ए खेल को कौन देखावहीं, कौन कहे याकी सुध ।
इमाम आप आए बिना, क्यों आवे वतनी बुध ॥२॥

आई बुध वतन की, तब खुले माएने कुरान ।
भी नेक बताऊं खेल या बिध, ज्यों होवे सब पेहेचान ॥३॥

वैराट का फेर उलटा, याको मूल है आकास ।
डालें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास ॥४॥

फल डाल अगोचर, आड़ी अन्तराए पाताल ।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल ॥५॥

बिध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख ।
गूंथी जालें दोऊ जुगते, मान लिए दुख सुख ॥६॥

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद ।
जीव जालों जाली बंधे, कोई जाने न याको भेद ॥७॥

देखलावने मोमिन को, कोहेड़े किए एह ।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह ॥८॥

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों[1] ले ।
रूह झूठी देखहीं, सांची देखे देह ॥९॥

१. अधिक शक्ति से ।

करे सगाई देहसों, नहीं रूहसों पेहेचान ।
सनमंध पालें इनसों, एह लई सबों मान ॥१०॥

न्हवाए चरचे अरगजे[१], प्रीते जिमावें पाक ।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक ॥११॥

रूह गई जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें ।
सेवा जो करते सनेहसों, सो सनमंध ऐसा पालें ॥१२॥

हाथ पांव मुख नेत्र नासिका, सोई अंग के अंग ।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग ॥१३॥

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए ।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए ॥१४॥

सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए ।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए ॥१५॥

छोड़ सगाई रूह की, करें सगाई आकार ।
वैराट कोहेड़ा या विध, उलटा सो कई प्रकार ॥१६॥

कई विध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध ।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध ॥१७॥

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल ।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल ॥१८॥

चंडाल हिरदे निरमल, संग खेले भगवान ।
देखावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम ॥१९॥

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचो रंग ।
रात दिन नजर रूह की, नहीं वजूद सों संग ॥२०॥

विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट करम पाले वेद ।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद ॥२१॥

१. सुगंधित लेप ।

उदर कुटम कारने, उतमाई[1] देखावे अंग ।
व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग ॥२२॥

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत ।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत ॥२३॥

पेहेचान सबों वजूद की, नहीं रूह की दृष्ट ।
वैराट का फेर उलटा, या विध सारी सृष्ट ॥२४॥

एक देखो अचरज, चाल चले संसार ।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए दिल विचार ॥२५॥

सांचे को झूठा कहे, झूठे को कहे सांच ।
ए भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच ॥२६॥

आकार को निराकार कहे, निराकार को आकार ।
आप फिरे सब देखे फिरते, ए असत यों निरधार ॥२७॥

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार ।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार ॥२८॥

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास ।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास ॥२९॥

जिन रांचो मृग जल दृष्टें, जाको नाम प्रपंच ।
ए छल गफलत को कियो, ऐसो रच्यो उलटो संच ॥३०॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥३९५॥

सनंध-वेद के कोहेड़े की

ए खेल देख्या ख्वाब का, ए जो लरे लोक विवाद ।
पर लराए इनको जिने, नेक कहूं तिनकी आद ॥१॥

जिन बंधे हुए अंधे, फिरे सो उलटे फेर ।
सो नेक बताए पीछे, उड़ाए देऊं अन्धेर ॥२॥

१. अच्छाई ।

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल ।
याकी भी नेक केहे के, देऊं सो आंकड़ी टाल ।।३।।

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।
मन नारद फिरे दसो दिस, वेदें बांध किए बेसुध ।।४।।

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अन्धकार ।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ।।५।।

बंध जो बांधे या बिध, हर वस्त के बारे नाम ।
सो बानी ले बड़ी कीनीं, ए सब छल के काम ।।६।।

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार ।
उरझाए मूल माएने, बांधे अटकलें[1] अपार ।।७।।

अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने ।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस[2] बीच में आने ।।८।।

ऐसी अनेक आंकड़ियों मिने, बोले बारे तरफ ।
रेहेस रंचक धरे बीच में, समझाए ना किने हरफ ।।९।।

बारे तरफों बोलते, एक अखर एक मात्र ।
ऐसे बांध बत्तीस श्लोक में, बड़ा छल किया यों सास्त्र ॥१०॥

बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बत्तीस ।
छल एते आड़े अर्थ के, और खोज करें जगदीस ॥११॥

अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल ।
अखरा अर्थ ना होवहीं, कियो भावा अर्थ अटकल ॥१२॥

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत ।
सो हरफ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत ॥१३॥

सो पढ़े पंडित जुध करे, एक कांने[3] को टुकड़े होए ।
आपस में जो लड़ मरे, एक मात्र ना छोड़े कोए ॥१४॥

१. अनुमान । २. गूढ़ ज्ञान । ३. मात्रा ।

ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान ।
स्वांत त्रास न आवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान ॥१५॥

ए वानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान ।
सो खैंचा खैंच ना छुटही, लिए क्रोध गुमान ॥१६॥

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ ।
बड़े होए करे माएने, एह चली छल रूढ़ ॥१७॥

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित ।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़े नहीं पंडित ॥१८॥

एक अर्थ न कहे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान ।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़े छल बान ॥१९॥

ए छल देखो मोमिनों, और है सब छल ।
रूह छल न छूटे छल थें, जो देखो करते बल ॥२०॥

एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन ।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन ॥२१॥

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन ।
और सुध इनों क्यों होए, ए खेलें गफलती जन ॥२२॥

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह ।
देव जैसी पातरी[1], ए चलत दुनियां जेह ॥२३॥

जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।
ए मोहोरे उपजे अंधेर से, ताको ए सब सत ॥२४॥

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लो वचन ।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन ॥२५॥

ए देखो तुम मोमिनों, पांचो उपजे तत्व ।
ए गफलत में रूह खेलहीं, सब रूहों की उतपत ॥२६॥

१. पूजने वाला ।

रूह सबों में पसरी, थावर और जंगम ।
पेड़ याको जुलमत, मलकूत में खसम ॥२७॥

दसो दिसा भवसागर, देखत एह सुपन ।
गिरदवाए आवरण गफलत, निराकार कहावे सुंन ॥२८॥

तबक चौदे कोहेड़ा, ए सबे कुदरत ।
सुर असुर कई अनेक विध, खेलें ख्वाबी दम गफलत ॥२९॥

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत ।
मछ कछ सब सागर, रच्यो एह प्रपंच ॥३०॥

रूह मिने जुदी जिनसों, कहियत चारों खान ।
जड़ चलें पेट पांउ परे, लाख चौरासी निरमान ॥३१॥

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल ।
खेलें सब ख्वाबी पुतले, रूह आड़ी गफलत पाल ॥३२॥

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को दंड ।
कोई दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड ॥३३॥

लाठी[1] तेरे लोक पर, संजम पुरी सिरदार ।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार ॥३४॥

ए छल बनज छोड़ के, करें बैकुंठ को बेपार ।
ए सत लोक याही को, कोई गले निराकार ॥३५॥

चौदे तबक इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ वास ॥३६॥

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत ।
ए निरमान बांध के, ले ख्वाब किया सत ॥३७॥

देखे सातों सागर, देखे सातों लोक ।
पाताल सातों देखिए, ए गफलत उड़े सब फोक ॥३८॥

१. राज्य (हुकम - सत्ता) ।

ए छल बल देखिया, धखत आग को कूप ।
ए नख सिख लों देखिया, बड़ा दज्जाल का रूप ॥३९॥

ताए नारायन कर सेवहीं, ऐसी ए कुफरान ।
पीर जैसे मुरीद तैसे, एक रस ए निरवान ॥४०॥

ए झूठे झूठा खेलहीं, नहीं सांच की सुध ।
ए पीर मुरीद देखिए, कही दोऊ की बिध ॥४१॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥४३६॥

सनंध - हांसी की

मोमिन यामें न रांचहीं, जाको सांचसों सनेह ।
निपट ए कछुए नहीं, भी देखो नेक बिध एह ॥१॥

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल ।
अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल ॥२॥

ए छल ऐसा तो रच्या, जो तुम मांग्या देखन ।
जिन तुम बांधो आप को, अर्स के मोमिन ॥३॥

जो कोई रूहें निसबती, ए हांसी का है ठौर ।
खसम वतन आप भूल के, कहा देखत हो और ॥४॥

मोमिनों तुम को उपज्या, खेल देखन का ख्याल ।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए तो हांसी का हवाल ॥५॥

मांग्या खेल खुसाली का, तिन फेरे तुमारे मन ।
सो सब तुमको बिसरे, जो कहे मूल वचन ॥६॥

गूंथो जालें दोरी बिना, आप बांधत हो अंग ।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग ॥७॥

आप बंधाने आप से, इन कोहेड़े अंधेर ।
चढ़्या अमल जानों जेहेर का, फिरत वाही के फेर ॥८॥

अमल[१] चढ़या क्यों जानिए, कोई फिसलत कोई गिरत ।
कोई सावचेत होए के, हाथ पकर सीढ़ी चढ़त ।।९।।

ना सीढ़ी ना पावड़ी, ए चढ़त पड़त क्यों कर ।
ए देखन जैसी हांसी है, देखो मोमिनों दिल धर ॥१०॥

एक पड़त बिना पावड़ी, वाको दूजी पकड़े कर ।
सो खाए दोनों गड़थले[२], ए हांसी है इन पर ॥११॥

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जाए ।
उलट पड़ी सो उलटी, ए हांसी यों हँसाए ॥१२॥

ओठा[३] लेवे जिमी बिना, पांव बिना दौड़ी जाए ।
जल बिना भवसागर, तिनमें गोते यों खाए ॥१३॥

अमलक[४] देखो खड़ियां, हाथ बिना हथियार ।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार ॥१४॥

एक नई कोई आवत, सो कहावत आप अबूझ ।
दूजी ताए समझावने, ले बैठत सब सूझ ॥१५॥

वचन करड़े कोई कहे, किनसों सहे न जाए ।
पीछे कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए ॥१६॥

लर खीज रोए रोलावहीं, दुख देखे दोऊ जन ।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन ॥१७॥

हांसी होसी मोमिनों, इन खेल के रस रंग ।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई खैंच निकाले अभंग ॥१८॥

ना जल ना कछू पूर है, कौन बहे कौन आड़ी होए ।
ए अमल इन जिमी का, तुमें देखावत विध दोए ॥१९॥

होसी खुसाली मोमिनों, करसी मिल कलोल ।
ए हांसी या बिध की, कोई नाहीं खेल या तोल ॥२०॥

१. नशा । २. टकरा कर गिरना । ३. सहारा । ४. अधर में ।

ए खेल देखो हांसी का, आसमान लों पाताल ।
फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल न डाल ॥२१॥
ए बिरिख तो या बिध का, ताको फल चाहे सब कोए ।
फेर फेर लेने दौड़हीं, ए हांसी या बिध होए ॥२२॥
बंध ना खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर ।
ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर ॥२३॥
अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार ।
पेहेचान कराए इमाम सों, सुफल करूं अवतार ॥२४॥
वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान ।
इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान ॥२५॥
हकें कह्या अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत[1] ।
तुम अर्स भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत[2] ॥२६॥
हम अर्स रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर ।
क्या चले खेल फरेब का, तुम आगूं देत हो खबर ॥२७॥
ए जिमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत ।
इमाम को सुख महामती, तुमको जगाए के देत ॥२८॥

॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥४६४॥

सनंध - कलमें की

ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब ।
ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब ॥१॥
ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ ।
बंध पड़े नजर देखते, तामें आई रूहें जमात ॥२॥
खेल देखन कारने, करी उमेद एह ।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह ॥३॥

१. परम धाम । २. मृत्यु लोक ।

ए खेल किया रूहों वास्ते, ए जो मोमिन आइयां जेह ।
खेल देख जाए वतन, बातें करसीं एह ।।४।।

मोमिन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए ।
पर अब कहूं नेक दीन की, जो रसूलें राह चलाए ।।५।।

जो अलहा किनहूं न लह्या, मैं तिनका कासद[1] ।
अर्स रूहों वास्ते आइया, मेरे हाथ कागद ।।६।।

कह्या रसूलें जाहेर, खबर खुद की मुझ ।
कोई और होवे तो पोहोंचही, अब जाहेर करहों गुझ ।।७।।

जो चौदे तबकों में नहीं, वार न काहूं पार ।
सो अलहा हम आवसी, खातिर सोहागिन नार ।।८।।

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल ।
ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावें भूल ।।९।।

काफर मुस्लिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान ।
हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान ॥१०॥

अबलों बेवरा ना हुआ, कई चली गई जहान ।
एक दीन जब होवहीं, तब होसी सबों पेहेचान ॥११॥

जो माएने न पाए बातून, तो हुए जुदे जुदे मांहें दीन ।
फिरके हुए तिहत्तर, एक नाजी में कह्या आकीन ॥१२॥

और बहत्तर नारी कहे, करी एक को हकें हिदायत ।
कुरान माजजा नबी नबुवत, सो नाजी करसी साबित ॥१३॥

सो साबित तब होवहीं, जब सब होवे दीन एक ।
पेहेले कह्या रसूल ने, एही उमत नाजी नेक ॥१४॥

सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब ।
तिन सबों समझावहीं, एक दीन होसी तब ॥१५॥

१. संदेश वाहक ।

झूठ सबे उड़ जाएसी, ना चले तिन बखत ।
हक हादी के प्रताप थें, क्यों रेहेवे गफलत ॥१६॥

तब लों रसमें लरत हैं, जब लों है उरझन ।
रूहअल्ला कुंजी ल्याइया, तब जोरा न चलसी किन ॥१७॥

जब सांच उठ खड़ा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर ।
जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर ॥१८॥

ए खेल हुआ जिन खातिर, सो गए खेल में मिल ।
जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल ॥१९॥

महंमद पेहेलें आए के, बरसाया हक का नूर ।
कई बिध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर ॥२०॥

ए सहूर तो करे, जो होए अर्स अरवाहें ।
जिन उमत के खातिर, आवसी इत खुदाए ॥२१॥

जो अर्स रूहें आईं होती, तो काहे को कौल करत ।
सो कह्या पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत ॥२२॥

अर्स रूहें होए सो मानियो, अंदर आन आकीन ।
ए कलमा जो समझहीं, सोई महंमद दीन ॥२३॥

ए कलमा मुख लाखों कहे, पर माएने न समझे कोए ।
इन कलमें मगज सो समझहीं, जो अर्स अजीम की होए ॥२४॥

जो लों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब[1] पकर ।
मैं हुकम छोड़ चलसी, फेर आवसी भेले आखिर ॥२५॥

एक ए भी रसूलें कह्या, करी आगे की सरत ।
साथ आवसी इमाम के, रूह मोमिन बड़ी मत ॥२६॥

नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखिर ।
तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातिर ॥२७॥

१. हिदायत ।

इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग ।
वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग ॥२८॥

इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन ।
देसी सुख मोमिन को, कजा होसी सबन ॥२९॥

एता भी रसूलें कह्या, मोमिनों में आकीन ।
बिना आकीन सब उड़सी, एक रेहेसी हमारा दीन ॥३०॥

जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम ।
इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम ॥३१॥

जिन ए कलमा हक किया, मैं तिनका जामिन[1] ।
सो आपे अपने दिल में, साख जो देसी तिन ॥३२॥

इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए ।
तिन मोमिन को खसम, सुख जो देसी ताए ॥३३॥

कहा कहूं इन कलमें की, मोमिनों में पेहेचान ।
जब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान ॥३४॥

जिन ए मेरा कलमा, लिया न मांहें बाहेर ।
सो दुनियां आखिर दिनों, जलसी आग जाहेर ॥३५॥

तब ए होसी आजिज[2], और मौला तो मेहेरबान ।
तब लेसी सबों को भिस्त में, देकर अपनों ईमान ॥३६॥

कछुक करके आकीन, कलमा सुनसी कान ।
तिनभी सिर कजा समें, लगसी जाए आसमान ॥३७॥

एह बात तेहेकीक है, मोमिनों दिल साबित ।
सब्द जो सारे मुझ पें, एक जरा नहीं असत ॥३८॥

देखन मोमिन खातिर, रचिया खेल सुभान ।
अब मोमिन क्यों भूलहीं, पाई हकीकत फुरमान ॥३९॥

१. उत्तरदायी । २. लाचार ।

जो सबों को अगम, सो सब रसूल नजर ।
तो रसूल मुस्लिम को, फिरे सों फुरमाए कर ॥४०॥

॥प्रकरण॥१९॥चौपाई॥५०४॥

सनंध - फुरमान की

फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझया नाहीं कोए ।
जिन खातिर ले आइया, ए समझेगी रूह सोए ॥१॥

कछुक नबिऐं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरियान[1] ।
केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेंहेंदी बयान ॥२॥

और भी केतेक सुने रसूलें, पर सो चढ़े नहीं फुरमान ।
सो मेंहेंदी अब खोलसी, इमाम एही पेहेचान ॥३॥

माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और ।
कह्या रसूलें इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर ॥४॥

मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन ।
सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहू जन ॥५॥

गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेंहेंदी इमाम ।
ए रूह अल्ला जानहीं, मेरे अल्ला के कलाम ॥६॥

ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों कयामत संग सुभान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥७॥

क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥८॥

रूह कौन मोमिन कौन मुस्लिम, कौन रूह कुफरान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥९॥

तीन रूहों की तफावत, कौन कौन ठौर निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१०॥

१. कर्मकांड (शरीयत से सम्बंधित) ।

क्यों इस्क क्यों बंदगी, क्यों गफलत गलतान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥११॥
क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१२॥
क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१३॥
क्यों कसौटी अंग की, क्यों रोजे रमजान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१४॥
क्यों सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद[1] आन ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१५॥
क्यों तसबी[2] क्यों फेरनी, क्यों कर नाम लेहेलान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१६॥
क्यों डर क्यों बेडर, क्यों खूंनी मेहेरबान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१७॥
क्या खाना क्या पीवना, क्या जो सुनना कान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१८॥
क्या लेना क्या छोड़ना, क्या इलम क्या ग्यान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥१९॥
क्यों भली बुरी क्यों, क्यों कर जान अजान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२०॥
कौन वैरी कौन सजन, क्यों कर सब समान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२१॥
क्या हक क्या हराम, क्या नफा नुकसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२२॥

१. मर्यादा, बंधन । २. माला का फेरना ।

क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२३॥
एक खेल दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२४॥
ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२५॥
कौन आप और कौन पर, कौन सकल जहान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२६॥
क्यों बाहेर क्यों अंदर, क्यों अंतर के निसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२७॥
कहां भिस्त कहां दोजख, क्यों जलसी कुफरान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२८॥
क्यों आदम क्यों पैगंमर, क्यों फिरस्ते पेहेचान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥२९॥
कलमें दीन रसूल की, सुध मुस्लिम फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३०॥
रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३१॥
क्यों हुकम क्यों कर हुआ, किन बिध लीजे मान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३२॥
एकों क्यों कर मानिया, क्यों लिया न दूजे मान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३३॥
किन मान्या न मान्या किन, किन फेरया फुरमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३४॥

क्यों कैद बेकैद क्यों, क्यों दोऊ दरम्यान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३५॥
क्यों ए इंड खड़ा किया, क्यों करी सरत फना निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३६॥
क्यों बड़ी अकल आगे आवसी, क्यों आखिर के निसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३७॥
बंदगी वजूद नफसानी, नासूत बीच सरियान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३८॥
क्यों दिल की बंदगी तरीकत, मलकूत या ला-मकान[१] ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥३९॥
नासूत[२] मलकूत[३] जबरूत[४], लाहूत[५] चौथा आसमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४०॥
क्यों रूहें भेद छिपी हजूरी, बंदगी हादी संग आसान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४१॥
मलकूत ऊपर जो जुलमत[६], नाम बुरका ला-मकान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४२॥
सरियत[७] तरीकत[८] हकीकत[९], मारफत[१०] हक पेहेचान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४३॥
बेचून बेचगून बेसबी, कहे बेनिमून निदान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४४॥
निराकार निरंजन सुन्य की, ब्रह्म व्यापक मांहें जहान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४५॥
पुरूख प्रकृती काल की, ईश्वर महाविष्णु उनमान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४६॥

१. निराकार । २. मृत्यु - लोक । ३. वैकुंठ । ४. अक्षरधाम । ५. परमधाम । ६. मोह तत्व । ७. करम कांड । ८. उपासना । ९. ज्ञान । १०. विज्ञान ।

सदरतुल मुंतहा[1] अर्स अजीम, नूर जमाल सूरत सुभान ।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान ॥४७॥

नूर पार नूर तजल्ला, पोहोंचे रसूल रूहअल्ला हजूर ।
ए सब इमाम खोलसी, जो दोनों किया मजकूर ॥४८॥

क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम ।
खोलसी माएने इमाम, खातिर मोमिनों हम ॥४९॥

चौदे तबक की बात जो, सो तो केहेसी सकल जहान ।
पर लैलतकदर मेंहेदी बिना, क्यों खुले माएने कुरान ॥५०॥

ए जो पूछे माएने, खोल दिए कदी सोए ।
तो इनसे चौदे तबक में, क्यों कर कजा जो होए ॥५१॥

लुगे लुगे के माएने, जो कोई निकसे बोल ।
ए कजा तब होवहीं, जब दीजे माएने सब खोल ॥५२॥

ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम ।
एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम ॥५३॥

जब माएने खुले मुसाफ के, बैठे इमाम जाहेर होए ।
तब ए दुनी जुदी जुदी, क्यों कर रहसी कोए ॥५४॥

सो इमाम जाहेर हुए, ले माएने कुरान ।
नूर सबों में पसरया, एक दीन हुई सब जहान ॥५५॥

ए तो करी इसारत, पर बोहोत बड़ी है बात ।
नूर बड़ो इमाम को, सो या मुख कह्यो न जात ॥५६॥

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए ।
नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए ॥५७॥

इमाम आए तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।
तब जानों आखिर हुई, सुख दिया सब जहान ॥५८॥

१. अक्षरधाम ।

आद करके अबलों, परदा न खोल्या किन ।
सो बरकत मेंहेंदी महंमद, खुल जासी सब जन ॥५९॥

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत ।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत ॥६०॥

ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल ।
अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल ॥६१॥

॥प्रकरण॥२०॥चौपाई॥५६५॥

सनंध - मुस्लिम की रेहेनी

सुनियो अब मोमिनों, ए केहेती हों सब तुम ।
जब तोड़ी[1] आइयां नहीं, इमाम के कदम ॥१॥

मैं चाहों मोमिन को, हम तुम एकै अंग ।
मैं तबहीं सुख पाऊंगी, मेंहेंदी महंमद मोमिन संग ॥२॥

आए ईसा मेंहेंदी महंमद, मोमिन आवसी कदम ।
हनोज[2] लों कबूं ना हुई, सो होसी नई रसम ॥३॥

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम ।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम ॥४॥

नेक कहूं राह मुस्लिम की, जो देखाई रसूलें मेहेर कर ।
भूले अवसर पछताइए, सो कहूं सुनो दिल धर ॥५॥

पेहेले तो सब भूलियां, मैं तो कहूं तुमें हक ।
देखो हाथ में नूर खुदाए का, फरेब में हुए गरक ॥६॥

केहे फुरमान इनों हाथ में, मेहेर कर दिया रसूल ।
जाहेर तुमको बताइया, सो भी गैयां तुम भूल ॥७॥

जो जाहेर है तुम पे, माएने इन कुरान ।
एते दिन न समझे, अब नेक देऊं पेहेचान ॥८॥

१. तक । २. अभी तक ।

फैलाव ऊपर का न करूं, नेक देऊं मगज बताए ।
ज्यों वतन की सुध परे, सब पकड़ें इमाम के पाए ।।९।।

ए जो तुमको रसूलें, दिए माएने खोल ।
जाहेर किए न ले सके, कहूं सो दो एक बोल ॥१०॥

कहो कलमा हक कर, ल्यो माएने कुरान ।
पाक दिल रूह पाक दम, या दीन मुसलमान ॥११॥

पांच बखत सल्ली[1] करे, दिल दरदा आन सुभान ।
सुने ना कान कुफार की, या दीन मुसलमान ॥१२॥

कसनी लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान ।
रात दिन याही जोस में, या दीन मुसलमान ॥१३॥

माएने[2] ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान ।
वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान ॥१४॥

रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान ।
ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान ॥१५॥

किन भेज्या आया कौन, ल्याया हक का फुरमान ए सहू ।
र करके समझहीं, या दीन मुसलमान ॥१६॥

सारे सबद रसूल के, सिर लेवे हक जान ।
नूर नबी के मगन, या दीन मुसलमान ॥१७॥

कलाम अल्ला कुरान में, दिल दे करे प्रवान ।
अंदर आकीन उजले, या दीन मुसलमान ॥१८॥

ए जो कुदरत गफलती, चौदे तबक की जहान ।
ए फरेब नीके समझहीं, या दीन मुसलमान ॥१९॥

ए सब खेल खसम का, बनिआदम हैवान ।
एकै नजरों देखहीं, या दीन मुसलमान ॥२०॥

१. निमाज । २. अर्थ ।

न्यारा रहे सबन थें, ए जो बीच जिमी आसमान ।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान ॥२१॥

भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान ।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान ॥२२॥

यामें कोई ना बिराना अपना, ए देखे सब समान ।
यासें न्यारे जाने मोमिन, या दीन मुसलमान ॥२३॥

ए जुदे नीके जानहीं, मोमिन[१] मुस्लिम[२] कुफरान[३] ।
पेहेचान जुदी सब रूहों की, या दीन मुसलमान ॥२४॥

मेहेर दिल मोमिन के, इस्क अंग रेहेमान ।
दाग न देवे बैठने, या दीन मुसलमान ॥२५॥

जो रूह होवे मुस्लिम, सो संग ना करे कुफरान ।
आसिक खुद खसम की, या दीन मुसलमान ॥२६॥

जो रूह भूली आप को, मुस्लिम कलमे पेहेचान ।
तिनको वतन बतावहीं, या दीन मुसलमान ॥२७॥

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान ।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान ॥२८॥

रेहेवे निरगुन होए के, और निरगुन खान पान ।
नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान ॥२९॥

प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान ।
रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान ॥३०॥

दरदा ले द्वारे खड़ी, खसम की गलतान ।
रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान ॥३१॥

हराम छोड़ हक लेवही, ए जो करी बयान ।
आपा रखे आप वस, या दीन मुसलमान ॥३२॥

१. ब्रह्म सृष्टी । २. ईश्वरी सृष्टी । ३. जीव सृष्टी ।

साफ दिल ईमान सों, करे बावन मसले अरकान ।
ए बिने जाने इसलाम की, या दीन मुसलमान ॥३३॥

मुस्लिम सारे केहेलावहीं, पर ना सुध हकीकत ।
ना सुध रसूल ना खसम, ना सुध या गफलत ॥३४॥

जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर ।
तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर ॥३५॥

तो होए कबूल मुस्लिम, जो पोहोंचे मजल इन ।
जोलों होए न हजूर बंदगी, खुले मुसाफ हकीकत बिन ॥३६॥

इसलाम बड़ा मरातबा, जो करे अपनी पेहेचान ।
जुलमत नूर उलंघ के, पोहोंचे नूर बिलंद मकान ॥३७॥

केहेलाए मुस्लिम पकड़े वजूद, पाँउ चले राह ऊपर ।
क्यों न कटाए पुलसरातें, जो रसूलें देखाई जाहेर कर ॥३८॥

जिन दिल पर सैतान पातसाह, सो ना पाक बड़ा पलीत[1] ।
खूंन करे खिन में कई, दिल पाक होए किन रीत ॥३९॥

दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए ।
धोए वजूद पाक दिल, कबहूं न हुआ कोए ॥४०॥

पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब ।
हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं नापाकी कब ॥४१॥

हलाल हलाल सब कोई कहे, पूछो हादी सिरदार ।
जिन दिल हुआ अर्स हक का, तिन दुनी करी मुरदार ॥४२॥

दिल अर्स मोमिन कह्या, तित आए हक सुभान ।
सो दिल पाक औरों करे, जाए देखो मगज कुरान ॥४३॥

पाँउ तो कोई ना भर सक्या, उमेद करी सबन ।
सो महंमद मेंहेंदी आए के, नीयत[2] पोहोंचाई तिन ॥४४॥

१. अपवित्र । २. आकांक्षा एवं आचरण ।

ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख ।
तो मुस्लिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख ॥४५॥

ए कलमा जिन जिमिऐं, किया होए पसार ।
तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार ॥४६॥

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए ।
सो रूह आखिर कजा[1] समें, औरों भी लेसी बचाए ॥४७॥

इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार ।
तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार ॥४८॥

ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर ।
तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर ॥४९॥

तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल ।
इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल ॥५०॥

दीन[2] होए के चलसी, दरदी रसूल रेहेमान ।
बोहोत कह्या है रसूलें, ताकी नेक करी है बयान ॥५१॥

ए तो जाहेर की कही, अब गुझ कहूंगी तुम ।
जो बयान रसूलें ना किए, मोमिन वतन खसम ॥५२॥

गुझ माएने कौन लेवहीं, जो जाहेर लिए न जाए ।
ए सब खोले रसूलें, जो मैं दिए बताए ॥५३॥

कोई जाहेर ना ले सके, तो गुझ होसी किन पर ।
हम जो लिए जाहेर, नेक ए भी सुनो खबर ॥५४॥

॥प्रकरण॥२१॥चौपाई॥६१९॥

सनंध - अर्स अरवाहों के लछन

गुझ तो तुमको कहूंगी, सक न राखूं किन ।
पर पेहेले कहूं नेक मोमिनों, जो हमारा चलन ॥१॥

१. न्याय, इन्साफ । २. नम्रता पूर्वक ।

बयान किए जो रसूलें, हम सोई लिए जाहेर ।
लाख बेर कह्या रसूलें, जन जन सों लर लर ।।२।।
कोट बेर जाहेर सबों, रसूलें फुरमाया जेह ।
सो कलमा सिर लेए के, पाँउ भरे हम एह ।।३।।
बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पें ल्याया फुरमान ।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान ।।४।।
खातिर तुम अर्स मोमिन, मैं ल्याया हक फुरमान ।
कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान ।।५।।
जो किनहूं पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान ।
तिन का जामिन होए के, मैं इत मिलाऊं आन ।।६।।
अब रूहें जो अर्स मोमिन, तिन कहा चाहियत है और ।
रसूल कहे जानो हक, काजी कजा होसी इन ठौर ।।७।।
जाहेर हक देखाइया, हम लिए माएने ए ।
एही कलमा रसूल का, हम सिर चढ़ाया ले ।।८।।
जाहेर दुलहा छोड़ के, ढूंढ़त माएने गुझ ।
ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ ।।९।।
हम याही फुरमान के, लिए माएने जाहेर ।
रूह बांधी रसूल सों, जिन हक की कही खबर ॥१०॥
हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान ।
ए छोड़ और जो ढूंढ़हीं, तिन दिल आंख न कान ॥११॥
मोमिन थे सो समझे, ए तो सीधा कह्या महंमद ।
ना मैं जिमी आसमान का, खबर जो ल्याया खुद ॥१२॥
और माएने सो ढूंढ़हीं, ठौर ना जाको दिल ।
रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढ़े कहा बेअकल[1] ॥१३॥

१. अज्ञानी, मूर्ख ।

हम तो एही हक किया, जाहेर रसूल बोल ।
ए छोड़ और ना देखहीं, हम एही लिया सिर कौल ॥१४॥

एही हमारा आकीन, हम लिया हक कर ।
आकीन कह्या रसूल का, सब देखावे नजर ॥१५॥

देखाया रसूल ने, सो लीजो आप चेतन ।
अंकूर अपना देखिए, ज्यों याद आवे वतन ॥१६॥

जिन खातिर ए रसूल, ले आया फुरमान ।
हम ले आकीन चले जिन बिध, नेक ए भी करूं बयान ॥१७॥

अर्स अरवाहें मेरी बोहोत हैं, नेक तिनके कहूं लछन ।
वतन हक आप भूलियां, तो भी मोमिन एही चलन ॥१८॥

अर्स अजीम की जो रूहें, तिनकी ए पेहेचान ।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान ॥१९॥

आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन ।
ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अर्स रूहन ॥२०॥

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन ।
पर हकें पकड़ी अंतर, ना तो रहे ना तन ॥२१॥

ऊपर काहूं ना देखावहीं, जो दम न ले सके खिन ।
सो आसिक जाने मासूक की, एही मोमिन विरहिन ॥२२॥

मोमिन आकीन न छूटहीं, जो पड़े अनेक विघन ।
आसिक मासूक वास्ते, जीव को ना करे जतन ॥२३॥

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन ।
साफ दिल रूह मोमिन, कबहूं न दुखावे किन ॥२४॥

मोमिन खोजे आप को, और खोजे कहां है घर ।
खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर ॥२५॥

खोज मोमिन ना थके, जोलों पार के पारै पार ।
नित खोजे चरनी चढें, नए नए करे विचार ॥२६॥

खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद ।
पल पल नूर बढ़ता, श्रवनों एही स्वाद ॥२७॥

फुरमान हाथों ना छूटहीं, जोलों पाइए हक वतन ।
मासूक वतन पाए बिना, दरद ना जाए निसदिन ॥२८॥

मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास ।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस ॥२९॥

ज्यों ज्यों माएने विचारहीं, त्यों बेधे सकल संधान ।
रोम रोम ताए बेधहीं, सब्द रसूल के बान ॥३०॥

मोमिन अंग कोमल, ताए बान निकसें फूट ।
गलित गात सब भीगल, सब अंगों टूक टूक ॥३१॥

खिन खेलें खिन में हंसें, खिन में गावें गीत ।
खिन रोवें सुध ना रहे, एही मोमिन की रीत ॥३२॥

हक बातें खेलें हंसें, और गीत पिया के गाए ।
रोवें उरझे पिउ की, और बातन सों मुरछाए ॥३३॥

मोमिन दरदा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ ।
मोमिन अंग पिउ का, पिउ मोमिन अंग जिउ ॥३४॥

जोलों सुध ना मासूक की, मोमिन अंग में पिउ ।
जब मासूक जाहेर हुए, आसिक ले खड़ी अंग जिउ ॥३५॥

बोहोत निसानी और हैं, अर्स अरवा मोमिन ।
सो इन जुबां केते कहूं, मेरे वतनी के लछन ॥३६॥

जो होवे अर्स अजीम की, सो निरखो अपने निसान ।
ए लछन मोमिन वतनी, सो देखो दिल में आन ॥३७॥

मोमिन रूहें अर्स की, ए समझ लीजो तुम दिल ।
ठौर ठौर से आए मोमिन, सुख लेसी सब मिल ॥३८॥

ए केहेती हों मोमिन को, जिन अर्स बका में तन ।
सो कैसे ढांपी रहें, सुन के एह वचन ॥३९॥

ए सब्द सुन मोमिन, रेहे न सकें पल ।
तामें मूल अंकूर को, रहे न पकर्‌यो बल ॥४०॥

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए ना रह्यो रूहन ।
ओ ख्वाबी दम भी ना रहें, तो क्यों रहें अर्स मोमिन ॥४१॥

मोमिन पाए कदम हादी के, खोल द्वार लिए हजूर ।
पट खोल दिया फुरमान का, पल पल बरसत नूर ॥४२॥

खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार ।
एक दोस्ती जानें हक की, दुनी सब करी मुरदार ॥४३॥

केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास ।
पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास ॥४४॥

कोई दिन हम छिपे रहे, सो भी मोमिनों के सुख काज ।
जो होवें नेक जाहेर, तो रहे न पकर्‌यो अवाज ॥४५॥

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम ।
सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम ॥४६॥

रूहों को अर्स देखावने, उलसत मेरे अंग ।
करने बात मासूक की, मावत नहीं उमंग ॥४७॥

नए नए रंग रूह मोमिन, आवत हैं सिरदार ।
बड़ो सुख होसी कयामत, नहीं इन सुख को पार ॥४८॥

आसिक आवत मासूक की, ताको छिपो राखों उजास ।
राह देखों और रूहन की, सब मिल होसी विलास ॥४९॥

नूर इमाम इन भांत का, कबूं जो निकसी किरन ।
तो पसरसी एक पलमें, चारों तरफों सब धरन ॥५०॥

क्यों रहे प्रकास पकरयो, इमाम नूर अति जोर ।
मैं राखत हों ले हुकम, ना तो गई रैन भयो भोर ॥५१॥

नूर बड़ो इमाम को, सो क्यों ढ़ांपूं मैं अब ।
सुख लेने को या बखत, पीछे दुनी मिलसी सब ॥५२॥

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम ।
या बिध अर्स अरवांहों का, तसीहा[1] लेवें खसम ॥५३॥

सबद[2] हमारे सुन के, उठी ना अंग मरोर ।
आसिक मासूक सब देखहीं, तुम इस्क का जोर ॥५४॥

ए सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर ।
जैसा इस्क जिनपें, सो अब होसी जाहेर ॥५५॥

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार ।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानो निरधार ॥५६॥

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे ।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले ॥५७॥

लाहा[3] तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए ।
ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए ॥५८॥

जिन उपजे मोमिन को, इन हांसी का भी दुख ।
सो दुख बुरा रूहन को, जो याद आवे मिने सुख ॥५९॥

ना तो जिन जुबां में दुख कहूं, सो ए करूं सत टूक ।
तो एता रूहों खातिर, बिध बिध करत हों कूक ॥६०॥

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे ।
हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए ॥६१॥

१. परीक्षा । २. यथार्थ ज्ञान । ३. लाभ ।

पेहेले फरेब देखाइया, पीछे महंमद दीन ।
कलमा जाहेर करके, देखाया आकीन ॥६२॥

माएने जाहेर कुरान के, कही बात नेक सोए ।
और गुझ भी करों जाहेर, अर्स वतनी जो कोए ॥६३॥

॥प्रकरण॥२२॥चौपाई॥६८२॥

सनंध - दिल मोमिन अर्स सुभान की

दिल हकीकी रूहें अर्स की, जामें आप आसिक हुआ सुलतान ।
तो कही गिरो ए रबानी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१॥

जेता कोई दिल मजाजी, चढ़ सके न नूर मकान ।
दिल हकीकी पोहोंचे नूर तजल्ला, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२॥

रूहें उतरी लैलत कदर में, सो उमत रबानी जान ।
इनको हिदायत हक की, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३॥

होवे फारग[1] दुनी के सोर से, ए दिल हकीकी निसान ।
करें हजूर बातून बंदगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४॥

हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान ।
जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥५॥

याही वास्ते इमाम रूह अल्ला, आए उतर चौथे आसमान ।
कौल किया लाहूत में इनों से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥६॥

ए गिरो कई बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान ।
एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥७॥

एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान ।
खोलें हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥८॥

हरफ मुकता[2] इनों वास्ते, रखे बातून मांहें फुरमान ।
सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥९॥

१. निवृत्त । २. मुक्तआत्हरूफ (वे शब्द जो क्यामत के समय स्वयं खुदा तआला खोलेंगे) ।

हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान ।
सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल अर्स सुभान ॥१०॥

एही भांत महंमद उमत की, कही सिफत रसूल समान ।
धरे बोहोत नाम उमत के, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान ॥११॥

जबराईल असराफील, हक नजीकी निदान ।
सो भी आए उमत वास्ते, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१२॥

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान ।
सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१३॥

निसान लिखे कयामत के, फुरमान हदीसों दरम्यान ।
सो भी खोले एही उमत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१४॥

उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बखत रेहेमान ।
देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१५॥

कहूं बेवरा मोमिन दुनी का, जो फुरमाया फुरमान ।
सक सुभे इनमें नहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१६॥

दिल मजाजी[1] दुनी सरियत, सो सके ना पुल हद भान ।
याको तोड़ उलंघे ले हकीकत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१७॥

दिल मुरदा मजाजी जुलमत से, पैदा कुंन केहेते कुफरान ।
क्यों होए सरभर मोमिनों, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१८॥

ए जो कही गिरो मलकूती, पैदा जुलमत से दुनी फान ।
रूहें फिरस्ते उतरे अर्स से, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥१९॥

दिल मजाजी गोस्त टुकड़ा, किया रसूलें मुख बयान ।
सो क्यों उलंघे जुलमत को, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२०॥

जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान ।
सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२१॥

१. झूठा ।

जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान ।
नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२२॥

कह्या पर जले जबराईल, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ।
रूहें बसें तिन लाहूत में, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२३॥

मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंच में, ना जबराईल तिन समान ।
ए माएने मेयराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२४॥

पोहोंचे महंमद मेयराज में, दो गोसे फरक कमान ।
इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२५॥

नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान ।
सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२६॥

किए आपस में रूहें गवाही, हकें अपनी जुबान ।
याको जाने दिल हकीकी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२७॥

दिया जवाब रूहों हक को, ए सुकन दिल बीच आन ।
ए रूहें रहें हक हजूर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२८॥

कह्या मोतिन[१] के मोंहों कुलफ[२], ए माएने तोड़त पढों गुमान ।
ए अर्स तन रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥२९॥

पोहोंच्या मेयराज[३] में गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान ।
ठौर गुन्हे न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३०॥

हकें हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड़या गुमान दे नुकसान ।
तित बैठे अपना अर्स कर, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३१॥

पोहोंची तकसीर[४] रूहें अर्स में, हके फुरमाया फुरमान ।
तित दूजा कोई न पोहोंचिया, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३२॥

आसिक नाचे अर्स अजीम में, दूजा नाच न सके इन तान ।
और राहै में जलें आवते, बिना दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३३॥

१. रूहें । २. ताला, फरामोसी । ३. दर्शन, दीदार । ४. गुनाह ।

जो गिरो भाई कहे महंमद के, ताको इस्कै में गुजरान ।
वाको एही फैल एही बंदगी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३४॥

एही खासलखास गिरो महंमदी, जाकी बंदगी इस्क ईमान ।
इनों फैल ऊपर का ना रहे, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३५॥

दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत का मैदान ।
तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३६॥

महंमद क्यों ल्याए खासी उमत, इन बीच जिमी हैवान ।
ए उमत जाने इन स्वाल को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३७॥

गलित गात अंग भीगल, ए दिल हकीकी गलतान ।
ए वाहेदत[१] हक हादी रूहें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३८॥

बका तरफ कोई न जानत, पढ़े ढूंढ़ ढूंढ़ हुए हैरान ।
सो बका[२] हदें सब बेवरा किया, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥३९॥

अर्स बका के बयान की, हुती न काहूं सुध सान ।
सो जरे जरा जाहेर करी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४०॥

लिखी हकें इसारतें रमूजें, सो किन खोली न फिरस्ते इंसान ।
सो दुनी सब बेसक हुई, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४१॥

रूह अल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान ।
ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४२॥

तो हुई दुनी सब हैयाती[३], जो उड़ाए दिया उनमान ।
पट खोले महंमद भिस्त के, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४३॥

सब जिमी पर सिजदा, किया फिरस्ते घस पेसान[४] ।
पर होए न हकीकीं दिल बिना, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४४॥

कलमा निमाज रोजा दिल से, दे जगात[५] आप कुरबान ।
करे हज बका हमेसगी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४५॥

१. एकदिली । २. अखंड । ३. कायम । ४. माथा घिसना । ५. जकात (दान) ।

जिन चांद नूर देख्या महंमदी, सोई जाने रोजे रमजान ।
न जाने दिल मुरदा मजाजी, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४६॥

सुध ना रोजे रमजान की, ना चांद सूरज पेहेचान ।
करें सरीकी गिरो रबानी, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४७॥

जब ले उठसी रूहें लुदंनी, तब होसी सब पेहेचान ।
दई हैयाती सबन को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४८॥

ईसे आब हैयाती पिलाइया, काढ़या कुफर जिमी आसमान ।
दीन एक किया सब इसलाम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥४९॥

सेहेरग से हक नजीक, कह्या खासलखास मकान ।
इत हिसाब इत कयामत, जो दिल मोमिन अर्स सुभान ॥५०॥

कहे महंमद सिफत उमत की, करें अपने मुख मेहेरबान ।
सोई जाने जामें हक इलम, ए दिल मोमिन अर्स सुभान ॥५१॥

॥प्रकरण॥२३॥चौपाई॥७३३॥

सनंध - रसूल साहेब की पेहेचान बातूनी

केहेती हों मोमिन को, सुनसी सब जहान ।
माएने गुझ या जाहेर, कोई ले न सक्या फुरमान ॥१॥

जाहेर माएने कलमें के, रसूलें कहे समझाए ।
सो भी कोई न ले सक्या, तो क्यों देऊं बातून बताए ॥२॥

नेक तो भी कहूं जाहेर, मेरे मोमिनो के कारन ।
अंतर मैं ना कर सकों, अर्स रूहें मेरे तन ॥३॥

जाहेर कह्या सो देखाइया, बातून जाहेर कर देऊं तुम ।
आगूं अर्स रूहें मेले मिने, देखाऊं बका वतन खसम ॥४॥

जिन जानो बिना कारने, खेल जो रचिया एह ।
ए माएने गुझ फुरमान के, समझ लीजो दिल दे ॥५॥

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत ।
हक भेजे अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत ।।६।।

दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान ।
तो रसूल आया किन वास्ते, हक पे ले फुरमान ।।७।।

ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह ।
देखो आंखें दिल खोल के, कोई मतलब बड़ा है एह ।।८।।

दुनियां कहे ए हम पर, ल्याया है किताब ।
ऐसे रसूल को तो कहें, जो बोलत मिने ख्वाब ।।९।।

क्यों मुख ऐसा बोलहीं, जो समझे होंए कागद ।
ना सुध रसूल ना फुरमान, तो यों कहें सब्द ॥१०॥

आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर ।
तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवे क्यों कर ॥११॥

बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल ।
तो कहे महंमद को कासिद, जो लानत ऊपर अकल ॥१२॥

सो घर कह्या दुनी का, जो फुरमाने कह्या मुरदार ।
तो आदम काढ़्या भिस्त से, ए दादा आदमियों सिरदार ॥१३॥

मोर सांप जिद ले निकस्या, और भिस्त सेंती सैतान ।
हिरस हवा साथ आदम, लोक ताए कहें मुसलमान ॥१४॥

इन आदम की औलाद, मारी अजाजीलें लानत ले ।
तिन सब दिलों पातसाह, हुआ अजाजील ए ॥१५॥

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जो कहे भाई महंमद के ।
महंमद आया इनों पर, खेल किया इनों वास्ते ॥१६॥

महंमद कहे मैं उनों से, ओ मुझ से जानो तुम ।
मुरदार करी जिनों दुनियां, करे बंदगी हजूर कदम ॥१७॥

महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पे फुरमान ।
सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान ॥१८॥

ए जो खेल कबूतर, कहे अर्स से आया रसूल ।
सो कहे हमारा रसूल, दोजख में जले इन भूल ॥१९॥

पढ़े कलाम अल्लाह को, ले माएने अपनी अकल ।
जो कही मुसाफें मुरदार, ताए छोड़े न दुनी एक पल ॥२०॥

किस्सा लिख्या अजाजील का, किया सिजदा सब जिमी पर ।
तिन मारी राह सब दुनी की, इन ए फल पाया क्यों कर ॥२१॥

कोई केहेसी ए फल गया गुमाने[1], पर सो दोजख जले गुमान ।
फल एता बड़ा बंदगी का, खोवे नहीं मेहेरबान ॥२२॥

दो अंगुल जिमी छोड़ी नहीं, इन सकसे सिजदे बिगर ।
एती एके बंदगी क्यों होवहीं, तुम क्यों ना देखो दिल धर ॥२३॥

ए बंदगी ना होए कई करोरों, ऐसी हक पर करी बेसुमार ।
तिन बंदगी बदला ए पाया, राह देत सबों की मार ॥२४॥

ऐसी बंदगी खोए के, हक क्यों दे फल नुकसान ।
ए माएने जाहेर तो कहे, जो अजाजीलसों नहीं पेहेचान ॥२५॥

ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचानें हादी हक ।
ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक ॥२६॥

अजाजील जीव दुनी का, ए जो कह्या माहें सब ।
किया भूल पत्थर पर सिजदा, कहे हम किया ऊपर रब ॥२७॥

बाहेर देखावें अबलीस, वह कह्या बैठा दिल पर ।
कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर ॥२८॥

अब सुध होसी सबन को, खुली बातून हकीकत ।
इमाम रूहों पे लुदंनी, जित अर्स हक मारफत ॥२९॥

१. अहंकार ।

दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जो पढ़े चौदे किताब ।
सब जिमिऐं करे सिजदा, दिल पावें ना अर्स खिताब ॥३०॥

हक हादी ना चीन्ह सके, ना कछू चीन्हे मोमिन ।
भूले मोमिन का सिजदा, तो हुई दस बिध दोजख तिन ॥३१॥

फैल हाल न देखें अपने, कहें अजाजीलें फेरया फुरमान ।
अपनी दोजख देवें औरों को, पर हक पे सब पेहेचान ॥३२॥

ज्यों फरेब देवें दुनी को, त्यों हक को देने चाहें ।
पर हक की आग जो दोजख, फैल माफक चुन ले ताए ॥३३॥

कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन ।
दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन ॥३४॥

एती सुध ना हमको, खोलसी कौन हकीकत ।
कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत ॥३५॥

माएने न पावें सब्द के, बड़े सब्द रसूल ।
पर दम ना समझें ख्वाब के, जाको जुलमत मूल ॥३६॥

ए माएने सो लेवे सब्द के, जो रूह अर्स की होए ।
एक रसूल आया नूर पार से, और ख्वाब दुनी सब कोए ॥३७॥

क्यों कर आवे झूठ पर, जो अर्स बका का होए ।
ए गुझ माएने मोमिन बिना, क्यों लेवे हवा दम सोए ॥३८॥

दुनियां कही सब ख्वाब की, सो नाहीं झूठ सब्द ।
तबक चौदे हद के, हक बका पार बेहद ॥३९॥

चौदे तबक कहे फरेब के, काहूं न किसी की गम ।
ना गम रसूल फुरमान, कहां हक कौन हम ॥४०॥

पैगंमर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल ।
संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल ॥४१॥

मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम ।
इनों को मेरी खातिर, देसी भिस्त खसम ॥४२॥

ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात ।
ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई न नबी की बात ॥४३॥

नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए ।
पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए ॥४४॥

ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अंतर ।
पर जिन आंख कान न अकल, सोए समझे क्यों कर ॥४५॥

ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब ।
पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब ॥४६॥

और जो टेढ़ा कहे रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल ।
पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल ॥४७॥

ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अर्स मोमिन ।
सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन ॥४८॥

सो भी इत जाहेर कह्या, पैगंमर पुकार ।
रूहें अर्स से उतरी, रस इस्क लिए सिरदार ॥४९॥

ए माएने सो समझहीं, जो नूरजमाल से होए ।
ए वतनी रूहें मोमिन, और ख्वाबी दम सब कोए ॥५०॥

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, जाको एतो बड़ो मरातब ।
करसी पाक सब जिमी को, ताकी सरभर[1] न होए किन कब ॥५१॥

दुनी दिल कह्या सैतान, दिल मोमिन अर्स हक ।
सो सरभर क्यों इनकी करे, जाए आगे पीछे दोजक ॥५२॥

बड़ी बड़ाई मोमिनों, जाके बड़े अंकूर ।
तो इन पर रसूल भेजिया, अपना अंगी नूर ॥५३॥

१. बराबरी ।

सो आए अब रूह मोमिन, जाको अर्स वतन ।
ए फुरमान आया इनका, क्यों खुले माएने या बिन ॥५४॥
खेल किया जिन खातिर, सो आइयां देखन अब ।
ए खेल अर्स रूहें देखही, और खेल है सब ॥५५॥
कोई केहेसी खेल कदीम[1] का, सो अब आइयां क्यों कर ।
ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊं खबर ॥५६॥
खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए ।
ए वतन के पाव पल में, कई पैदा फना हो जाए ॥५७॥
करी बाजी चौदे तबकों, रूहों देखलावने खसम ।
सो रूहें तब ना हुती, पेहेले तो न हुआ हुकम ॥५८॥
कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान ।
सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पें पेहेचान ॥५९॥
जिन कोई कहे रसूल को, परदा खुद दरम्यान ।
आसिक ए मासूक कह्या, सो बिन देखे मिले क्यों तान ॥६०॥
इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब ।
तो इत आखिर इमाम, काहे को आवत अब ॥६१॥
जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर ।
जो अर्स अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखिर ॥६२॥
ताथें गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए ।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों होए ॥६३॥
एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग ।
एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग ॥६४॥
तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखिर ।
महंमद मेंहेंदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातिर ॥६५॥

१. हमेशा (प्राचीन काल) से ।

तो ए माएने ना खुले, रसूल मुख फुरमान ।
चौदे तबक की दुनियां, सो इत हुई हैरान ॥६६॥

नूर पार अर्स मोमिन, हुते ना तिन बखत ।
तो महंमद मेंहेंदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत ॥६७॥

बात बड़ी मोमिन की, जिनके अर्स में तन ।
ए रूहें दरगाह की, जिनको अर्स वतन ॥६८॥

अर्स खावंद एक मासूक, दूसरा नाहीं कोए ।
और खेल सब नूरियों किया, यामें भी विध दोए ॥६९॥

यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान ।
तीसरा दम देखन का, ना कछूए हैवान ॥७०॥

हैवान ना कछू तो कहे, जो उनको ना कछु बुध ।
जो जाने ना वेद कतेब को, सो उसी दाखिल बेसुध ॥७१॥

जो रूह अर्स अजीम की, सो मिले नहीं कुफरान ।
ए बेवरा इमाम बिना, करे सो कौन बयान ॥७२॥

सांचे सुख मोमिन के, अजाजील और सुख ।
पर जो सुख मोमिन के, सो कहे न जाए या मुख ॥७३॥

अजाजील और काफर, तिनों भी सुख नेहेचल ।
बरकत इन मोमिन की, साफ किए सब दिल ॥७४॥

करके साफ सबन को, भिस्त देसी सबन ।
पर रूहों सुख हमेसगी, जहां मौला महंमद मोमिन ॥७५॥

नूर सरूपें रसूल, हक आगे खड़ा हुकम ।
मूल मेला महंमद रूहों का, सब बैठियां तले कदम ॥७६॥

नूर के एक पल में, इत इंड चले कई जाए ।
ए भी मोमिनों खेल देखाए के, देसी सबे उड़ाए ॥७७॥

रूहें फरिस्ते वास्ते, खेल किया चौदे तबक ।
दुनी सक लिए खेलत, किन तरफ न पाई बका हक ॥७८॥

सो सक भानी सब दुनी की, महंमद मेंहेंदी ईसा आए ।
अर्स कायम सूर हुआ रोसन, दिया काफरों कुफर उड़ाए ॥७९॥

काफर रूह भी पाक होएसी, अंदर आग जलाए ।
मोमिनों मुस्लिम खातिर, भिस्त जो देसी ताए ॥८०॥

बड़े नसीब रूहें अर्स की, जिन जावें खेलमें भूल ।
मोमिन वास्ते अर्स से, आए इमाम ईसा रसूल ॥८१॥

ए सब हुआ मोमिनों खातिर, पेहेले भेज्या कागद ।
ए तमासा देखाए के, उड़ाए देसी ज्यों गरद ॥८२॥

जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड ।
बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड ॥८३॥

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मोमिन अर्स अंकूर ।
आया इमाम सबन का, किया जो परदा दूर ॥८४॥

ए जो नसीब मोमिन का, सो लिख्या मिने फुरमान ।
पर जहान में गुझ जाहेर हुई, अब मोमिनों की पेहेचान ॥८५॥

गिरो मोमिन नाम अनेक हैं, जुदे जुदे कहे नाम ।
बोहोत नामों बुजरकियां, लिखी मांहें अल्ला कलाम ॥८६॥

तारीफ ईसा मेंहेंदी की, सो इन जुबां कही न जाए ।
पेहेचान रसूल खुदाए की, अर्स वतन दिया बताए ॥८७॥

तारीफ काजी कजाए की, क्यों कहूं या मुख ।
नाबूद को कायम किए, दिए रूहों कायम सुख ॥८८॥

माएनें इन कुरान के, गुझ रही थी बात ।
सो अर्स रूहें जाहेर हुई, सब जन में फैलात ॥८९॥

नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए ।
पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए ॥९०॥

ए किया तुम खातिर, समझ लीजो दिल माहें ।
रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नाहें ॥९१॥

॥प्रकरण॥२४॥चौपाई॥८२४॥

सनंध - नबी नारायन की

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम ।
पर कहे कोई ना समझया, अब कर देखाऊं तुम ॥१॥

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल ।
भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल ॥२॥

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन ।
निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन ॥३॥

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक ।
खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बान पुस्तक ॥४॥

बैकुंठ से पाताल लों, बनि आदम हैवान ।
इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रूद्र नारायन ॥५॥

अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुएं नांहें ।
पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें ॥६॥

जब जाग अर्स हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब ।
पर जोलों हुकमें है खड़ा, तोलों क्यों होए झूठा अब ॥७॥

ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित ।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत ॥८॥

जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बड़ाई बुजरक ।
पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियों महंमद बरहक ॥९॥

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें ।
पर इन खेल में का नहीं, सो भी सक राखों नांहें ॥१०॥

नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर ।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर ॥११॥

सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल ।
अपने अपने मुख से, जाहेर करें मजल ॥१२॥

सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख ।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख ॥१३॥

मैं ना किसी की कम कहूं, ना किसी की कहूं बढ़ाए ।
जो जैसा तैसा तिन, दोऊ कहूं दृढ़ाए ॥१४॥

एते दिन ढांपे हते, सब्द सत असत ।
सो अब जाहेर हुए, आई सबों की सरत ॥१५॥

हकीकत हिंदुअन की, सो देखो चित ल्याए ।
और जो मुस्लिम की, सो भी देऊं बताए ॥१६॥

हिंदू जोडू जब करें, ले देवें मन के बंध ।
जिन कोई छोड़े किनको, यों पड़ें गफलत फंद ॥१७॥

मुस्लिम जोडू[1] जब करें, मिल पेहेले बांधे सरत ।
जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत[2] ॥१८॥

भी हिंदू मुस्लिम की, कहूं तफावत तुम ।
हिंदू हिसाब जमपुरी, मुस्लिम हाथ खसम ॥१९॥

हिंदुओं ए दृढ़ कर लिया, इत जो करसी करम ।
सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम ॥२०॥

सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख ।
मन वाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक[3] ॥२१॥

१. पत्नी । २. संसारी प्रपंच । ३. मरते हैं (आवागमन के चक्कर में पड़े रहना) ।

हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उड़ाए ।
जो डंड जम का छूटहीं, तो भी दिल सुन्य को चाहे ॥२२॥

हिसाब मुस्लिम कहावहीं, ए किया दृढ़ दिल ।
खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल ॥२३॥

दूजा देह धरन का, रसूलें किया नहीं हुकम ।
ताए दूजा[1] देह क्यों होवही, जाको हिसाब हाथ खसम ॥२४॥

मुस्लिम मुए गाड़हीं, बांध उमेद खसम ।
तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम ॥२५॥

मन के हारे हारिए, मन के जीते जीत ।
मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत[2] ॥२६॥

चल देखाया बड़कों, सब चले जाएं तिन लार ।
अब सो क्यों ए ना छूटहीं, जो बांध दई कतार ॥२७॥

कोई हिंदू जो बैकुंठ जावहीं, सो भी खेल के मांहें ।
ए फना आखिर कहावहीं, पर कायम भिस्त तो नांहें ॥२८॥

बैकुंठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद ।
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद ॥२९॥

नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद ।
नबी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद ॥३०॥

ए नबिऐं जाहेर कह्या, मैं हक पे आया रसूल ।
दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल ॥३१॥

मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम ।
याको मेरी खातिर, भिस्त देसी खसम ॥३२॥

कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुस्लिम में आकीन ।
हुकम सिर चढ़ाइया, जो सबसे बड़ा दीन ॥३३॥

१. पुनर्जन्म । २. अपमानित करना ।

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया दृढ़ाए ।
जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए ॥३४॥

हिंदू और मुस्लिम के, बीच पड़्यो है भरम ।
रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें दृढ़ाए करम ॥३५॥

रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल ।
करम दृढ़ाए निगमें दिए, हिंदुओं सिर डमडोल ॥३६॥

हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद ।
सो ग्यान हिंदुओं आड़ा पड़्या, हुआ बड़ा छल भेद ॥३७॥

तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द[1] ।
वैर लगाया या विध, कोई सुने न काहू को सब्द ॥३८॥

तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए ।
डूबे हिंदू स्यानपें, सो गए प्यारी उमर खोए ॥३९॥

जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात ।
और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात ॥४०॥

तारी अरवाहें सबन की, चौदे तबक की सृष्ट ।
अवतार तीर्थंकर हो गए, किन तारे ना गछ इष्ट ॥४१॥

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम ।
यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम ॥४२॥

सो वैराट चौदे तबकों, थावर और जंगम ।
सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम ॥४३॥

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान ।
आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान ॥४४॥

भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन ।
देसी ब्रह्मा रूद्र नारायन को, आखिर दे आकीन ॥४५॥

१. जबरदस्ती ।

ए अव्वल का हुकम, आखिर होसी जाहेर ।
करसी साफ सबन को, अंतर मांहें बाहेर ॥४६॥

॥प्रकरण॥२५॥चौपाई॥८७०॥

सनंध - दोजख की

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान ।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन ॥१॥

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास ।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विश्वास ॥२॥

कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए ।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए[1] ॥३॥

याही दोजख अगनी जलें, और जलें दुनी के दम ।
आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम ॥४॥

खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर[2] ।
पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर ॥५॥

खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर ।
सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झालें बढ़े त्यों जोर ॥६॥

जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम ।
कलमा रसूल का सुन के, हाए हाए पकड़े नहीं कदम ॥७॥

ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख ।
ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख ॥८॥

खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन ।
अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन[3] ॥९॥

एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटा फंद ।
दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बड़े अंध ॥१०॥

१. इश्क और ईमान (प्रेम और विश्वास) दोनों की धूप । २. गुनाह । ३. पहचानना ।

जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात ।
दिल दे कबहूं ना सुनी, हाए हाए पैगंमर की बात ॥११॥

ले ले छुरी पेट डारहीं, आकीन न आया अंग ।
कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग ॥१२॥

बात न सुनी रसूल की, तिन सीखां लगियां कान ।
इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान ॥१३॥

बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध ।
सो गुन अंग इंद्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध ॥१४॥

आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन ।
और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन ॥१५॥

धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत ।
सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत ॥१६॥

बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन ।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन ॥१७॥

मैलाई ना छूटी मन की, ऊपर भए उज्जल ।
ना आया आकीन रसूल पर, हाए हाए छेतरे[1] छल ॥१८॥

हराम न छूट्या दिल से, छल दृष्ट हुई बाहेर ।
राह भूले मुस्लिम की, हाए हाए बुरी हुई जाहेर ॥१९॥

ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल ।
सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खांए गोते बिना जल ॥२०॥

सब्द जो अगुओं सुन के, भूले मुस्लिम की राह ।
इन दीन कलमें आखिर, आवसी इत खुदाए ॥२१॥

कुरान जिनों न विचारिया, जलो सो तिनकी मत ।
जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत ॥२२॥

१. छले गये ।

बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल ।
आखिर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल ॥२३॥

जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन ।
हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जिन रसूल को न चीन ॥२४॥

सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल ।
तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल ॥२५॥

खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर ।
सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर ॥२६॥

देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नांहें ।
पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल मांहें ॥२७॥

कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन ।
तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन ॥२८॥

कई महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे ।
तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जले ए ॥२९॥

कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन ।
सो भी आग छोड़े नहीं, हाए हाए तांबा जिमी हुई तिन ॥३०॥

जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर ।
सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर ॥३१॥

दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे ।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए ॥३२॥

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए ।
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए ॥३३॥

यों आखिर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान ।
तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान ॥३४॥

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल ।
सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल ॥३५॥

॥प्रकरण॥२६॥चौपाई॥९०५॥

सनंध - अगुओं ग्यानी की

अब नींद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध ।
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध ॥१॥

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल ।
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल ॥२॥

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान ।
ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान ॥३॥

बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ ।
बलि बलि जाऊं काजी की, जिन आए किया इंसाफ ॥४॥

ताथें इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत ।
ए जुलम किन विध कहूं, जिन या विध फेरी मत ॥५॥

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत ।
ए होसी सब जरदरूं[1], अबहीं इन आखिरत ॥६॥

जब काफर देखे अगुओं, तब जाने काले नाग ।
करी दुनी को जरदरूं, इनहूं लगाई आग ॥७॥

दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर ।
यों दुनियां बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी वैर ॥८॥

ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब ।
त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब ॥९॥

आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए ।
एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए ॥१०॥

१. लज्जित ।

और आग सब सोहेली[1], पर ए आग सही न जाए ।
अब देखोगे आपहीं, रेहेसी सब तलफाए ॥११॥

आग सबों को विरह की, देकर करसी साफ ।
जिन जैसी तैसी तिनों, आखिर ए इंसाफ ॥१२॥

विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक[2] ।
सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक ॥१३॥

आखिर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख ।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख ॥१४॥

अव्वल जो रसूलें कह्या, आखिर सोई प्रवान ।
इस्क सांचा हक का, और आग सब जान ॥१५॥

जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए ।
महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए ॥१६॥

रसूल बड़ा सबन में, जिन हक की दई खबर ।
कह्या मासूक का सब हुआ, आई कजा[3] आखिर ॥१७॥

तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए ।
या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं ना बोल्या कोए ॥१८॥

या सुध पार के पार की, किन मुख ना निकसे दम ।
बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम ॥१९॥

महंमद दीन की पेहेचान, काहूं हुती न एते दिन ।
ना पेहेचान कुरान की, नातो देख थके कई जन ॥२०॥

पेहेलें ए सस्ती हती, मुस्लिम दीन कुरान ।
पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान ॥२१॥

सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल ।
किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल ॥२२॥

१. आसान । २. अहंकार । ३. न्याय (इंसाफ) ।

सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी वैराट ।
अकस[1] सबों का भान के, सब चलसी एक बाट ॥२३॥

छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान ।
जात पांत ना भांत कोई, एक खान पान एक गान ॥२४॥

एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार ।
याही सदी आखिर की, हक सुख देसी पार ॥२५॥

नूर सबों में पसरया, सो कहूं सब सनंध ।
याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद ॥२६॥

॥प्रकरण॥२७॥चौपाई॥९३१॥

सनंध - बिना एक महंमद की

इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास ।
तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास ॥१॥

प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख ।
चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख ॥२॥

इमाम मोमिन इस्क, सब मुख एही सब्द ।
सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद ॥३॥

आलम सब अल्लाह की, तामें छोड़ी ना काहूं हद ।
दौड़ के कोई न पोहोंचिया, बिना एक महंमद ॥४॥

कई जातें दौड़ी जहान में, पर आया न काहूं दरद ।
तो किनहूं न पाइया, बिना एक महंमद ॥५॥

पंथ पैंडे दीन मजहब, कर कर गए रब्द ।
पर हुआ न कोई काम का, बिना एक महंमद ॥६॥

बड़े बड़े ग्यानी गुनी मुनी, पर पाया न काहूं हारद[2] ।
कथ कथ सब खाली गए, बिना एक महंमद ॥७॥

१. दुश्मनी (प्रतिविम्ब) । २. परमात्मा ।

कई पोथी पढ़ पढ़ पढ़हीं, पर न सुध हद बेहद ।
मेहेनत सीधी न हुई, बिना एक महंमद ।।८।।

कई जुदी जुदी जिनसों खोजिया, सबों आप अपने मद ।
तिनसे कछुए न सरया, बिना एक महंमद ।।९।।

कई पढ़े किताबें सहीफे[१], पर हुआ न काहूं मकसद[२] ।
बका तरफ किन पाई नहीं, बिना एक महंमद ॥१०॥

कई बंदे एक हादी के, जुदे पड़े कर जिद ।
पर हक किने न पाइया, बिना एक महंमद ॥११॥

कई पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ़ ढूंढ़ हुए सरद ।
सुन्य सुरिया पार न ले सके, बिना एक महंमद ॥१२॥

कई नाम इमाम धर धर गए, बोल बोल गए बेरद ।
ठौर कायम किने न पाइया, बिना एक महंमद ॥१३॥

बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद ।
जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद ॥१४॥

केतेक पर सिर बांध के, कर कर गए जब्द ।
सो सारे बेसुध गए, बिना एक महंमद ॥१५॥

अंग मार जार उड़ावहीं, जो हते जोर जलद ।
पर ए सुध काहू ना परी, बिना एक महंमद ॥१६॥

कई रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद[३] ।
कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद ॥१७॥

कई लालै[४] लाल कहावते, सो हो गए सब जरद[५] ।
और लाल कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ॥१८॥

ए खेल खावंद जो त्रैगुन, कहें हम ही हैं परमपद ।
और खावंद कोई ना हुआ, बिना एक महंमद ॥१९॥

१. संतवाणी । २. उद्देश्य । ३. खुदा (परमात्मा) का साक्षात्कार । ४. साधना और तपस्या की लालिमा (लाली) । ५. पीला पड़ना ।

कई वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद[1] ।
और मुरसद कोई न हुआ, बिना एक महंमद ॥२०॥

औलिए अंबिए फिरस्ते, जेता कोई पैद ।
पर अलहा[2] किनहूं न लह्या, बिना एक महंमद ॥२१॥

आद मध और अबलों, कोई न पोहोंच्या कद ।
खुद खबर किन न दई, बिना एक महंमद ॥२२॥

चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद ।
सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद ॥२३॥

ऊपर तले माहें बाहेर, ए उड़ जासी ज्यों गरद ।
सो फेर कायम कौन करावहीं, बिना एक महंमद ॥२४॥

जो दुनियां खाकें रल गई, सबों कर डारी रद ।
सो फेर कौन उठावहीं, बिना एक महंमद ॥२५॥

तबक चौदे ख्वाब के, ए खेल झूठा है सब ।
सो बका कौन करावहीं, बिना एक महंमद ॥२६॥

तत्व सबन को नास है, जाको मूल मोह मद ।
सो नेहेचल कौन करावहीं, बिना एक महंमद ॥२७॥

ऐसा हुआ न कोई होएसी, जो जावे छोड़ सरहद[3] ।
फुरमान ल्यावे नूर पार का, बिना एक महंमद ॥२८॥

पांच चीज जीव सब उड़ गए, मसी बका से ल्याए औखद[4] ।
सो खिलाए जिवाए कोई न सक्या, बिना एक महंमद ॥२९॥

सो रसूल तुम खातिर, होए आया कासद ।
ए सब मासूक के हुकमें, हुआ जाहेर महंमद ॥३०॥

मोमिन तुम सूते क्या करो, ए कागद ए कासद ।
काजी कजा पर आइया, दे मुबारकी महंमद ॥३१॥

१. धर्मगुरू । २. अलभ्य (अगोचर) । ३. शून्य - निराकार । ४. अखंड औषधि (तारतम ज्ञान) ।

उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनंद ।
इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद ॥३२॥

॥प्रकरण॥२८॥चौपाई॥९६३॥

सनंध - अब सो कहां है महंमद

अब सो कहां है महंमद, तुम उठ क्यों न देखो जाग ।
कह्या कौल सो आए मिल्या, अब नहीं नींद को लाग ॥१॥

तुम जो अरवाहें अर्स की, पर छलें किए हैरान ।
बाहेर देखना छोड़ के, तुम अंतर करो पेहेचान ॥२॥

हकें लिख्या फुरमान में, मेरा अर्स मोमिन कलूब[1] ।
क्यों न जागो देख ए सुकन[2], दिल में अपना मेहेबूब ॥३॥

ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध ।
तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध ॥४॥

जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान ।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान ॥५॥

काजी कजा जो करसी, तब कह्या रसूलें संग हम ।
ए सोई दिन आइया, अब क्यों भूलें कदम ॥६॥

कह्या रसूलें आवसी, आखिर ए मेहेरबान ।
नजर जाहेरी क्यों देखोगे, जोलों बातून नहीं पेहेचान ॥७॥

पेहेले क्यों थे रसूल हक पें, क्यों ल्याए फुरमान ।
अब कौन सरूपें आखिर, ए सब करो पेहेचान ॥८॥

वजूद आवे जो ख्वाब में, सो सब ख्वाब के जान ।
ख्वाब देखे जो पार थें, तुम तासों करो पेहेचान ॥९॥

जो हक सूरत देखिए इनमें, तो ख्वाब[3] देवें सब भान ।
ले माएने देखो बातून, ज्यों होवे सब पेहेचान ॥१०॥

१. दिल । २. वचन । ३. सुपन ।

ए तो आगे थें कई उड़हीं, नूरै की नजर ।
तो नूर-तजल्ला की नजरों, ए रेहेसी क्यों कर ॥११॥

हक नजर या पर पड़े, तो उड़े जिमी आसमान ।
नूर आगे अंधेरी ना रहे, तुम दिल दे करो पेहेचान ॥१२॥

अब बताऊं या बिध, देखो दिल में आन ।
जाहेर मैं देखाऊंगी, मेरे इमाम की पेहेचान ॥१३॥

आवे अर्स से हुकम, तिन हुकमें चले हुकम ।
फिरे सो मतलब करके, जाए मिले खसम ॥१४॥

भी तितथें रूह आवहीं, आवें नूर से जोस कूवत[1] ।
सो फुरमाया सब करे, पकड़ के सूरत ॥१५॥

नूर मकान से फरिस्ता, आवे असराफील[2] ।
सब उड़ावे सूर बजाए के, पलक न होवे ढील ॥१६॥

भी इत अर्स अजीम से, मसी ल्यावें कुंजी रोसन ।
सो तोड़ कुफर आलम[3] का, साफ करें सबन ॥१७॥

जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग ।
सरूप मेंहेंदी याही को, यामें देखोगे कई रंग ॥१८॥

याही साथ मिलावा मोमिनों, सबों खास बंदों सोहोबत ।
बंदगी जाहेर या बातून, सब बेवरा होसी इत ॥१९॥

औलिए अंबिए आसिक, जो खास बंदे सिरदार ।
हक बिना कछू ना रखें, इनों दुनी करी मुरदार ॥२०॥

ए माएने ले रसूलें, आए केता किया पुकार ।
ए सो किन खातिर किया, रूहें अजूं न करें विचार ॥२१॥

ए किन भेज्या कौन आइया, ए सो कौन कारन ।
अब कहे कौन कासों कहे, तुम उठ देखो वतन ॥२२॥

१. ताकत । २. एक नूरी फिरस्ता (बुधजी) । ३. दुनियां ।

तुमें सूती कौन जगावहीं, केहे केहे मगज कुरान ।
सुध देवे काजी कजाए की, ले माएने करो पेहेचान ॥२३॥

पेहेले ओलखो आपको, पीछे करो मोसों पेहेचान ।
देखो अपने अर्स को, याद करो निसान ॥२४॥

यामें रूह कई भांत के, लेत लज्जत[1] खान पान ।
अंदर बैठा ताए देखहीं, तुम सब बिध करो पेहेचान ॥२५॥

कहां इनों की असल, दृढ़ करो सोई निसान ।
पार अर्स जो कायम[2], तुम तासों करो पेहेचान ॥२६॥

रूहें फरिस्ते पैगंमर, सुध होवे नूर मकान ।
सो नूर छोड़ आगे चले, तब होवे पेहेचान ॥२७॥

ए सुध सब बिध ल्याइया, रसूल हाथ फुरमान ।
काजी कजा भिस्त पार की, ले माएने करो पेहेचान ॥२८॥

बात रसूल की जो सुने, ताको तअजुब[3] बड़ा होए ।
हक बका सुध देवहीं, सो कहे न दूजा कोए ॥२९॥

एक पैंडे[4] चले दुनियां, रसूल सामी बल ।
नबी नजर देखे चलें, दुनियां चले अटकल ॥३०॥

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक ।
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख ॥३१॥

क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार ।
छाया पार किरना रहें, सूरज किरनों पार ॥३२॥

पैदास जुलमत[5] काल की, सो तो है सब नास ।
खेलें काल के मुख में, ताए अबहीं करेगो ग्रास[6] ॥३३॥

हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध ।
चौदे तबक छाया मिने, इनें नहीं सूर की सुध ॥३४॥

१. स्वाद । २. स्थिर, अखंड । ३. आश्चर्य । ४. रास्ते । ५. निराकार । ६. कौर ।

कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन ।
याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन ॥३५॥
बात बड़ी है काल की, ऐसे कई ब्रह्मांड उपाए ।
काल भी आखिर ना रहे, पर ए पेहेले सब को खाए ॥३६॥
रसूल बिना इन काल को, किने न उलंघ्यो जाए ।
ए सब्द काल के पार हैं, सो क्यों औरों समझाए ॥३७॥
छाया की जो दुनियां, ताए अचरज होए सबन ।
काल के पार जो पोहोंचहीं, सो क्यों कर रेहेवे तन ॥३८॥
हक की खबर जो ल्यावहीं, सो तेहेकीक न रहे आकार ।
जो कदी[1] रहे तो बेहोस, पर कर ना सके पुकार ॥३९॥
जिन कोई सक तुमे रहे, मैं सब विध देऊं समझाए ।
माएने इन रसूल के, भांत भांत देऊं बताए ॥४०॥
सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए ।
ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए ॥४१॥
पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल ।
सो तो पार से आया हक पे, याको जुलमत[2] ना मूल ॥४२॥
बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग ।
कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग ॥४३॥
सो बात करे मेहेबूब की, वाको अंग न कोई उरझाए ।
ज्यों किरने सूरज देखहीं, त्यों त्यों जोत चढ़ाए ॥४४॥
सो जाने सुध पार की, हक मिलिया जिन ।
किरना सूरज ना अंतर, यों मासूक आसिक तन ॥४५॥
सीधे सब्द रसूल के, पर ए समझे कछू और ।
जोलों सब्द ना चीनहीं, तोलों न पाइए ठौर ॥४६॥

॥प्रकरण॥२९॥चौपाई॥१००९॥

१. कदाचित । २. निराकार ।

सनंध - इमाम रसूल की

खातिर प्यारी रूहें मोमिन[१], मैं कहूं अर्स सब्द ।
बका सब्द कहे बिना, उड़े ना सरियत हद ।।१।।

सुध दुनी हद ना बेहद, कौन रसूल कौन हम ।
कागद ल्याया किनका, कहां सो अर्स खसम ।।२।।

ए सुध किन पाई नहीं, जो लिखी माहें कागद[२] ।
ए सब खेलें ख्वाब में, कोई न छोड़े हद ।।३।।

हद की बांधी सब दुनियां, हक तरफ न करे नजर ।
पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवें खबर ।।४।।

हाए हाए किनें ना पेहेचानिया, ए जो रसूल रेहेमान[३] ।
कहे किताबें जाहेर, सब पर ए मेहेरबान[३] ।।५।।

सब्द रसूल क्यों चीनहीं, ए जो चाम के दाम ।
ख्वाबी दम क्यों समझहीं, ए जो अल्ला के कलाम ।।६।।

जो दम होवें ख्वाब के, तिन क्यों उपजे विचार ।
ए सब ढूंढ़ें ख्वाब में, माएने हवा नूर पार ।।७।।

ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम ।
फरिस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम ।।८।।

आप रसूल नहीं हद का, इनों अर्सअजीम[४] असल ।
दुनी सुरिया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल ।।९।।

ए सब्द पार बेहद के, ताके माएने करसी सोए ।
सब्द महंमद जानें मेंहेंदी, दूजा हद का न जाने कोए ॥१०॥

हद बेहद दोऊ जुदे, मेंहेंदी महंमद बिना न होए ।
अब देखो जाहेर हुए, रह्या सब्द न हद का कोए ॥११॥

१. ब्रह्म सृष्टि । २. कुरान, संदेश । ३. दयावान । ४. परमधाम ।

एही किताब बोहोतन पे, पर माएने न पाए किन ।
अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन ॥१२॥

जो दम होवें ख्वाब के, सो क्यों करसी पेहेचान ।
चीन्ह्या[१] नहीं रसूल को, किन हिंदू न मुसलमान ॥१३॥

केतेक संग रसूल के, रेहेते रात दिन मांहें ।
नातो ओ बुजरक हुते, पर कछू अली बिन चीन्ह्या नांहें ॥१४॥

तबक चौदे हद के, चौगिरद निराकार ।
ए सब्द हदी क्यों समझहीं, जो निराकार के पार ॥१५॥

बेहद को सब्द न पोहोंचही, ए हद में करें विचार ।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार ॥१६॥

फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून ।
क्या है सुन्य निरंजन, कछू खबर न दई इन ॥१७॥

निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम ।
ना सुध छल ना वतन, ए बुजरकों बड़ी गम ॥१८॥

खासा नूरी खुदाए का, ए बोल्या सब्दातीत ।
सब मिल सब्द विचारहीं, पर पावें ना वे रीत ॥१९॥

आदम मिलो कई औलिए, अंबिए बड़े आकीन[२] ।
नूरी कहावें फरिस्ते, पर किन रसूल को ना चीन[३] ॥२०॥

सिफत बड़ी रसूल की, निराकार के पार अखंड ।
ऐसा कोई न हुआ, ना तो हुए कई ब्रह्मांड ॥२१॥

दीन दरसन[४] फिरके मजहब[५], और मिलो कई जात ।
पढ़ पढ़ सिर बांधे पर[६], पर पाई ना नबी की बात ॥२२॥

चौदे तबक की रूह में, ऐसा ना कोई समर्थ ।
सब्द महंमद मेंहेंदी बिना, करे सो कौन अर्थ ॥२३॥

१. पहचाने । २. विश्वास । ३. पहचाना । ४. शास्त्र । ५. पंथ, संप्रदाय । ६. पंख (ज्ञान का भार सिर पर रखना) ।

ए माएने इमाम बिना, कोई कर ना सके और ।
अब देखोगे इन माएनों, सुख लेसी सब ठौर ॥२४॥

नूर बड़ा इन सब्द में, सो देख थके सब कोए ।
इमाम बिना इन नूर को, रोसन क्यों कर होए ॥२५॥

इन जुबां मैं क्यों कहूं, मुसाफ मगज नूर ।
कुफर चौदे तबक का, किया इमामें दूर ॥२६॥

फुरमान नूर के पार का, सो क्यों कर इनों समझाए ।
ए माएने रोसन तब होवहीं, जब बैठे इमाम इत आए ॥२७॥

ल्याए खजाना वतनी, करसी आए इंसाफ ।
देसी सुख कायम[१], आवसी सो असराफ[२] ॥२८॥

ए रसूलें पेहेले कह्या, खोलसी माएने इमाम ।
उमेदां मोमिन दुनी की, होसी जाहेर हुए कलाम ॥२९॥

मोमिन कारन आवसी, आखिर करी सरत ।
हम भी फेर तब आवसी, सुख देसी कर सिफायत[३] ॥३०॥

जो सुख देसी इमाम, सो या जुबां कह्यो न जाए ।
उमेदां मोमिन की, पूरी ईसा इमामें आए ॥३१॥

नूर बड़ो इन माएनों, सो अब हुआ रोसन ।
तबक चौदे गरजिया, बरस्या नूर वतन ॥३२॥

कह्या जो इमाम आवसी, सो सरत हुई सत ।
आगे इन इमाम के, जाहेर होसी बड़ी मत ॥३३॥

एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत ।
आगे ही थें सब कह्या, पर क्यों समझे रूह[४] गफलत[५] ॥३४॥

अब सो इमाम आइया, याही दिन आखिर[६] ।
सब्द रसूल के जाहेर, फिरवलसी सब पर ॥३५॥

१. अखंड । २. भले मनुष्य (पहचान करने वाले) । ३. सिफारिश । ४. जीव । ५. मायावी । ६. अंतिम ।

पैंडा बताया रसूलें, पर कोई न समझया तब ।
तिन राह सब चलसी, राजी हो हो अब ॥३६॥

धंन रसूल धंन फुरमान, धंन आया जिन खातिर[1] ।
धंन मेंहेंदी महंमद रूहअल्ला, धंन धंन ए आखिर ॥३७॥

अब सब में जाहेर हुए, बड़े रसूल के सब्द ।
इमाम आए फजर हुई, उड़ गई अंधेरी हद ॥३८॥

एते दिन ढांपे हते, मगज माएने बातन ।
आए इमाम बखत बदल्या, सैतान मारया सबन ॥३९॥

जाहेर साहेब हुए पीछे, चले न दूजी बाट ।
पंथ पैंडे मजहब सब उड़ गए, सब हुआ एकै ठाट ॥४०॥

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद ।
महंमद मेंहेंदी आए बिना, कौन मिटावे वाद ॥४१॥

घर घर होसी सादियां[2], उड़ गई गफलत[3] ।
जो कह्या सो सब हुआ, आई ए आखिरत ॥४२॥

तारीफ महंमद मेंहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें ।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें ॥४३॥

॥प्रकरण॥३०॥चौपाई॥१०५२॥

सनंध - दज्जाल की

जिन मोमिन के कारने, रचिया एह मंडल ।
तिनकी उमेदां पूरने, मेंहेंदी महंमद आए मिल ॥१॥

अब नेक कहूं आखिर की, जो होसी सब जाहेर ।
बांधे दज्जालें मोमिन, अंतर मांहें बाहेर ॥२॥

आया इमाम आलम[4] का, तब कुफर रेहेवे कित ।
पर कहूं मोमिन दज्जाल की, नेक हुई लड़ाई इत ॥३॥

१. वास्ते । २. खुशियां । ३. अंधेर, अज्ञानता । ४. संसार ।

क्यों कहूं बल दज्जाल का, जाहेर बड़ा पलीत[1] ।
जोर न चले काहू का, लिए जो सारे जीत ।।४।।

अंग जो बांधे या बिध, पेहेले पेड़ से फिराई बुध ।
उलटाए सबों या बिध, परी न काहूं सुध ।।५।।

दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल ।
जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल ।।६।।

अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत ।
सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत ।।७।।

मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत ।
आउध ए दज्जाल के, स्यानप[2] ग्यान असत ।।८।।

भी आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल ।
कोमल कुटिल अंग सीतल, चंचल चतुर चपल ।।९।।

जाकी अग्याएँ अगनी चले, चले जिमी और जल ।
वाउ भी हुकम पर खड़ा, ऐसा दज्जाल का बल ॥१०॥

ए दज्जाल बड़ा जोरावर, मूल गफलत याके साथ ।
मनसा वाचा करमना, ए सब इनके हाथ ॥११॥

जुध बड़ा दज्जाल का, लिए जो सारे जीत ।
भागे भी ना छूटहीं, कोई ऐसा बड़ा पलीत ॥१२॥

सूर बड़े इन जहान में, जिन किए सामें बल ।
ताबे अपने कर लिए, बाए गले सांकल ॥१३॥

छीन लिए बल सबन के, जो सूरमें बड़े केहेलाए ।
बांध्या जो कोई बल करे, तो बड़े जो गोते खाए ॥१४॥

जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल ।
सो फरिस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत[3] दिल ॥१५॥

१. नीच । २. चतुराई । ३. भूल, अज्ञानता ।

ए जुध करे सबनसों, आप नजर न आवे किन ।
दज्जाल जोर करामत, सब किए आप से तन ॥१६॥

कोई न छोड़्या दज्जालें, जीत लिए सकल ।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल ॥१७॥

सब अंग बांधी दुनियां, सारे हुए बेअकल ।
अबलों किन देख्या नहीं, कुफर करामात कल ॥१८॥

या बिध बांधी दुनियां, खोल ना सके कोई बंध ।
राह हक की छुड़ाए के, ले डारे गफलत फंद ॥१९॥

दुनियां बाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दज्जाल ।
बंदगी करते आवसी, तब लड़सी तिन नाल ॥२०॥

खाए गया सबन को, अजूं देखत नाहीं ताए ।
तिनसे लड़ने बाहेर, बांध बांध कमरें जाए ॥२१॥

जुध याको जाहेर कह्या, देसी बंदगी छुड़ाए ।
आप अंदर से उठसी, जीत्यो न काहू जाए ॥२२॥

जाहेर कहे जो माएने, ए तित भी रहे उरझाए ।
लिखियां जो इसारतें, सो इनों क्यों समझाए ॥२३॥

तो कह्या नबिऐं इमन को, ला[1] बारकला[2] मुसल्मीन ।
दई बारकला हिंद मुस्लिम, लिए सिर कलाम आकीन ॥२४॥

कहा कहूं बल दज्जाल को, जोर बड़ा जालिम ।
पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड़्या न कोई आलम[3] ॥२५॥

नाम इमाम धरावहीं, पर फुरमान की ना सुध ।
बरकत कलमें रसूल के, साफ होसी सब बिध ॥२६॥

नजरों काहू न आवहीं, करत गैब[4] की मार ।
कोई छूट्या मोमिन भाग के, और कर लिए सब कुफार ॥२७॥

१. नहीं । २. ईश्वरी बरकत । ३. संसार । ४. गुप्त ।

फरिस्ता चौदे तबकों, फिरवल्या[१] सब पर ।
हुकम चलाया अपना, कोई रह्या न ताबे[२] बिगर ॥२८॥

ओ जाने हम सीधा चलें, इन बिध राह मारत ।
तो कही पुल-सरात[३], तरवार धार है इत ॥२९॥

ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें ।
क्यों छूटे बंध दुस्मन के, तो किन चल्या ना इनसें ॥३०॥

क्यों करें जंग दज्जाल सें, काफर या मुसलमान ।
औलाद आदम सब ताबीन[४], पातसाह दिलों सैतान ॥३१॥

तो क्या चले बंदन का, जिन दिल पर ए पातसाह ।
सब जानें दुस्मन मारसी, हक तरफ चलते राह ॥३२॥

दिल मोमिन हक अर्स कह्या, तो इन दुनियां करी हराम ।
पीठ दई मुरदार को, जिन दिलों अर्स आराम ॥३३॥

जो दिल कह्या अर्स हक का, तिन तरफ जले काफर ।
मार ना सके राह मोमिनों, सब बंधे इनों बिगर ॥३४॥

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कह्या अर्स कलूब[५] ।
तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब ॥३५॥

सब साफ किए दिल मोमिन, जब इत आए इमाम ।
जिन दिल पातसाह सैतान, किए पाक जलाए तमाम ॥३६॥

खबर न पाई काहूं ने, जो दिल ऊपर सैतान ।
साफ किए सबन को, जाहेर कर हुकम सुभान[६] ॥३७॥

जाहेर काहूं ना हुआ, छिप कर लिए सब ।
इमाम आए जाहेर हुआ, ए जो दज्जाल न देख्या किन कब ॥३८॥

जब इमाम इत आए, तब क्यों रहे ढांप्या चोर ।
मोमिन पेहेले छुड़ाए के, दिए दुनी के बंध तोर ॥३९॥

१. छा गया । २. आधीन । ३. कर्मकांड का रास्ता रूपी पुल (कर्मकांड रूपी कठीन रास्ता) । ४. अधीन । ५. दिल । ६. धनी, परमात्मा ।

ए जो जीती दज्जालें दुनियां, कर लई थी निरबल[1] ।
सो बल सबको देय के, दिए सुख नेहेचल ॥४०॥

लिख्या है फुरमान में, मेंहेंदी आवेगा आखिर ।
उड़ाए मारसी दज्जाल को, राह देसी सीधी कर ॥४१॥

अब हुए सब जाहेर, कुफर करामात कल ।
महंमद मेंहेंदी के प्रताप से, जासी बंध सब जल ॥४२॥

कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए ।
तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए ॥४३॥

इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद ।
इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद[2] ॥४४॥

जब इमाम जाहेर हुए, तब क्यों रेहेवे अंधेर ।
अपनी तरफ सबन के, लिए दुनी दिल फेर ॥४५॥

जो कबहूं प्रगटे होते, तो होत कुफर को नास ।
जब इमाम जाहेर हुए, तब नूर हुआ उजास ॥४६॥

मेंहेंदी महंमद ढांपे ना रहें, जासों झूठ भी सांच होए ।
ऐसा खसम जोरावर, यासें सुख पावे सब कोए ॥४७॥

॥प्रकरण॥३१॥चौपाई॥१०९९॥

सनंध - इमाम के प्रताप की

प्रताप इमाम कहा कहूं, इन जुबां कह्यो न जाए ।
तो भी नेक रोसन करूं, तुम लीजो चित ल्याए ॥१॥

ए नेक करूं इसारत, तुम सुनियो आखिर दिन ।
पेहेले मिलसी रूह मोमिन, पीछे तो सब जन ॥२॥

ए सरत सोई जो आगे करी, हक इलम होसी जाहेर ।
लिख्या है कुरान में, आया सो आखिर ॥३॥

१. कमजोर । २. नाचीज ।

सब्द गुझ पुकारहीं, सब में सचराचर ।
सो सारे कदमों तले, जब आए इमाम आखिर ।।४।।

खेल पाया इप्तदाए[1] से, आप असल बका[2] घर ।
सब सुध हुई प्रताप तें, जब आए इमाम आखिर ।।५।।

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर ।
सो उड़ाए दई पेड़ जुलमत[3], जब आए इमाम आखिर ।।६।।

त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहां तें हुई किन पर ।
सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखिर ।।७।।

निरंजन निराकार तें, खेल रच्यो नारी नर ।
ए सुध हुई सबन को, जब आए इमाम आखिर ।।८।।

ए जो फरिस्ते नूर से, खेल तिने किया पसर ।
ए गुझ सारों ने पाइया, जब आए इमाम आखिर ।।९।।

काल सुन्य जड़ चेतन, ए सब हुए जाहेर ।
ए धोखा किन का ना रह्या, जब आए इमाम आखिर ॥१०॥

वेद कतेब के माएने, सब दृढ़ हुए दिल धर ।
किए मगज माएने जाहेर, जब आए इमाम आखिर ॥११॥

इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर ।
सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखिर ॥१२॥

गैबी[4] मार दज्जाल का, सब में गया पसर ।
सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखिर ॥१३॥

आग बिना सब दुनियां, अगिन हुई जर बर ।
सो सारे ठंढ़े किए, जब आए इमाम आखिर ॥१४॥

दुनियां गोते खावहीं, बिन जल भवसागर ।
सो सारे ही थिर किए, जब आए इमाम आखिर ॥१५॥

१. शुरु से, आदि से । २. अखंड । ३. निराकार । ४. गुप्त ।

क्यों पैदा क्यों होसी फना, ए ना काहू को खबर ।
सो सारों को सुध हुई, जब आए इमाम आखिर ॥१६॥

छिपिया सांच सबन से, झूठ गया पसर ।
सो सारे सत ले खड़े, जब आए इमाम आखिर ॥१७॥

काम क्रोध दिमाग में, सब धखे निस[१] वासर[२] ।
सो सारे ठंढ़े हुए, जब आए इमाम आखिर ॥१८॥

सब्द न लगे काहू को, ऐसे हिरदे भए बजर[३] ।
सो गलित गात हुए निरमल, जब आए इमाम आखिर ॥१९॥

मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर[४] ।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर ॥२०॥

मने फिराई दुनियां, रेहे ना सक्या कोई थिर ।
सो मन सारे थिर किए, जब आए इमाम आखिर ॥२१॥

अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर ।
सो सक सुभे सब उड़ गई, जब आए इमाम आखिर ॥२२॥

सुध आतम परआतमा, सक्या ना कोई कर ।
सो सारे धोखे मिटे, जब आए इमाम आखिर ॥२३॥

हद बेहद के पार की, सब देख थके फेर फेर ।
सो सारों ने देखिया, जब आए इमाम आखिर ॥२४॥

पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर ।
सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखिर ॥२५॥

ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत-कदर[५] ।
ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखिर ॥२६॥

कहांतें नूर-तजल्ला[६] की, जो नूर[७] की भी नहीं खबर ।
सो परदे उड़े सबन के, जब आए इमाम आखिर ॥२७॥

१. रात । २. दिन । ३. कठोर । ४. तरह । ५. मोह की रात्रि । ६. अक्षरातीत । ७. अक्षरब्रह्म ।

कहांतें अछरातीत की, जो सुध ना अछर छर ।
सो सारे जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर ॥२८॥

इस्क खसम बतावहीं, उड़ाए दिया सब डर ।
कायम सुख सब लेवहीं, जब आए इमाम आखिर ॥२९॥

मोमिन पीछे ना रहें, ताए सके ना कोई पकर ।
उमेदां पूरी सबन की, जब आए इमाम आखिर ॥३०॥

बड़े सुख मोमिन लेवहीं, रस इस्क पिएं भर भर ।
औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखिर ॥३१॥

ए सुख कह्यो न जावहीं, रह्यो न कछू अंतर ।
मोमिन रूहें जाहेर हुए, जब आए इमाम आखिर ॥३२॥

सुख आसिकों क्यों कहूं, जो लेवें मासूक अंदर ।
सुन मोमिन टूक होवहीं, जब आए इमाम आखिर ॥३३॥

पीछे जहान इन दुनी की, दौड़ी आवे एक दर ।
तब तो सुख सागर हुआ, जब आए इमाम आखिर ॥३४॥

चौदे तबक हुई कजा, एक जरा ना रह्यो कुफर ।
सो साफ किए सबन को, जब आए इमाम आखिर ॥३५॥

ए जो काजी कजा करी, सो भी मोमिनों की खातिर ।
औरों पाया मोमिन बरकतें, जब आए इमाम आखिर ॥३६॥

बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर ।
सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखिर ॥३७॥

सेहेरग[1] से हक नजीक, ए खोली ना किन नजर ।
सो पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखिर ॥३८॥

कई आलम[2] पल में पैदा फना, करें हक कादर[3] ।
सो देखाए दुनी कायम करी, जब आए इमाम आखिर ॥३९॥

१. सहूर, शाहरगें । २. दुनियां । ३. सामर्थ्य ।

थी उरझन चौदे तबक में, सब जाते थे मर मर ।
दई हैयाती[1] सबन को, जब आए इमाम आखिर ॥४०॥

किन पाया ना मगज मुसाफ[2] का, जो ल्याया आखिरी पैगंमर ।
किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखिर ॥४१॥

लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले ना इन बिगर ।
सो खोलके भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर ॥४२॥

थी रात अंधेरी सबन में, बका दिन देखाए करी फजर ।
मकसूद[3] किया सबन का, जब आए इमाम आखिर ॥४३॥

इलम लदुन्नी काहूं ना हुता, कर जाहेर मिटावे कुफर ।
दिया सुख कायम सब को, जब आए इमाम आखिर ॥४४॥

कोई बेसक दुनी में ना हता, गई दुनियां एती उमर ।
सो दृढ़ कर दई हक सूरत, जब आए इमाम आखिर ॥४५॥

इमाम नूर है अति बड़ो, पर सो अब कह्यो न जाए ।
मेला होसी जब मोमिनों, तब देऊंगी नीके बताए ॥४६॥

॥प्रकरण॥३२॥चौपाई॥११४५॥

सनंध - कजा की

सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम ।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम ॥१॥

कई राए राने पातसाह, छत्रपति चक्रवर्त ।
ताए हक सुपने नहीं, सो गए लिए गफलत ॥२॥

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार ।
किन सुपने ना श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार ॥३॥

करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन ।
तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन ॥४॥

१. कायमी । २. कुरान, धर्म ग्रंथ । ३. आशा (उद्देश्य) ।

चौदे तबक के खावंद, कर कर गए उपाए ।
तित परदा सबन पर, सो इत दिया उड़ाए ।।५।।

तुम जानते थे मलकूत को, हम सिर एही बुजरक ।
तिनको न बका ख्वाब में, सो इत पाया सबों हक ।।६।।

मारता था राह दुनी की, सबका था दुस्मन ।
जित हिदायत एक हादी की, तित भी मारे तिन ।।७।।

एक राह थी अव्वल, तित भी दिए फिराए ।
कई इलम देखाए जुदे डारे, बल सैतान कह्यो न जाए ।।८।।

बैठ दुनी के दिल पर, चलाया हुकम ।
हक राह छुड़ाए डारे उलटे, ए दुस्मने किया जुलम ।।९।।

ए दुस्मन देखाया रसूलें, पर इनसों चल्या न किन ।
आप जैसा होए के, राह मारी सबन ॥१०॥

सो काफर उड़ाए दिया, जिन मारी थी सबकी राह ।
सो जानिए हता नहीं, जब आया हक पातसाह ॥११॥

मैं बड़ भागी तुमें तो कहे, जो आए इन आखिर ।
तो कहूं जो दूर होवही, अब देखोगे नजर ॥१२॥

यामें बड़े रूह मोमिन, सो जुबां कह्यो न जाए ।
अबहीं इमाम के कदमों, देखोगे सब आए ॥१३॥

ए कह्या रसूलें अव्वल, ए जो चौदे तबक ।
इनमें काजी आखिर दिनों, इत कजा जो करसी हक ॥१४॥

रसूलें इत आए के, पेहेलें किया पुकार ।
आवसी रब आलम का, तब हूजो खबरदार ॥१५॥

लिख्या आगम कदीम[१] का, सो आए मिल्या दिन ।
याही सदी आखिर की, पुकार करे सब जन ॥१६॥

१. पहेले से (प्राचीन काल से) ।

नूर अकल ले लदुन्नी[१], हुकमें किया पसार ।
महंमद मेंहेंदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार ॥१७॥

आप इमाम अजूं गोप है, होत आगे रोसन नूर ।
रात अंधेरी क्यों रहे, जब ऊग्या कायम[२] सूर ॥१८॥

साँच झूठ तफावत, जैसे दिन और रात ।
साँच सूर जब देखहीं, तब कुफर रात मिट जात ॥१९॥

जो लों थे परदे मिने, दुनियां उरझी तब ।
सो परदा अब खोलिया, दिया मन चाह्या सुख सब ॥२०॥

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक ।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक ॥२१॥

जब कुफर कछू ना रह्या, तब दुनियां हुई एक दीन ।
ए नूर कजा का झिल मिल्या, आया सबों आकीन ॥२२॥

दुनियां टेढ़ी मूल की, ताको गयो पेड़ से बल ।
पाक किए सब इमामें, कुफर गया निकल ॥२३॥

पुकार कह्या वेद कतेबों, पर बस न किया काहूं दिल ।
कर कर मेहेनत कई थके, पर हुआ न कोई निरमल ॥२४॥

ना तो कई बुजरक हुए, कैयों करियां नसीहत[३] ।
ओ मुरीद[४] विचारे क्या करें, किनें पीर[५] न पाई मारफत[६] ॥२५॥

सो इमामें इत किए, सब जन के मन बस ।
होए ना किन इमाम को, इन जुबां ए जस ॥२६॥

सो इमाम इत आइया, इन जिमी हिंदुस्तान ।
सब तलबें[७] याही दिसा, चौदे तबक की जहान ॥२७॥

पर मुझे प्यारी बरारब, जिन जिमी आए रसूल ।
मेहेर नजर महंमद की, पर काफर गए सब भूल ॥२८॥

१. तारतम । २. अखंड । ३. शिक्षा । ४. शिष्य । ५. गुरु । ६. सतज्ञान । ७. आकांक्षा (तीव्र इच्छा) ।

पीछे केहेर नजर करी, सो भी वास्ते मेहेर ।
पर काफर जो उलटे, सो देखे सब जेहेर ॥२९॥

केहेर नजर देखाए के, फेर लिए मेहेर मांहें ।
मुस्लिम नाम धराए के, बैठे मुस्लिम की छांहें ॥३०॥

अब तो लगे सब बंदगी, आया भला आकीन ।
नर नारी हक कलमें, कायम खड़े हैं दीन ॥३१॥

पेहेले बीतक रसूलसों, सो भी सुनो नेक बोल ।
आरब समझें आरबी, दोए कहूँ लुगे दिल खोल ॥३२॥

॥प्रकरण॥३३॥चौपाई॥११७७॥

सनंध आरबी की

सम्मेन कलिम कलामी, नास कुरब अना कसीर ।
नेक मैं कहुँ बोली मेरी, आदमी कबीले मेरे बहुत हैं ।
अना हाकी हकाइयां कलूब अना, लिसान इस्म कबीर ॥१॥
मैं कहुँ बातें दिल मेरे की, साथ मेरे नाम बड़े हैं ॥
फआल नफस इस्म इमाम, बाद कलिम कुल्ल नास ।
धरया अपना नाम इमाम, पीछे कहेंगे सब आदमी ।
बला किन ला अरफ कुरान, अना मिन्हुम कुल्ल लिरास ॥२॥
ए पर नहीं समझें कुरान, मैं इनमें से सब लिए साथ सिरके ॥
अल्लजी हकाइयां कलूब अना, मा खफी मिन्कुम ।
जो बातें दिल मेरे की हैं, ना छिपाऊँ तुम से ।
कुम्यकून कुरब अना, अल्लजी रूह मुस्लिम ॥३॥
तुम हो कबीलें मेरे के, जो कोई रूहें मुस्लिम हैं ॥
लेस खबर मा कुम कमा, अल्लजी बरारब ।
नहीं हैं खबर तुमको ऐसी, जैसी कछू जिमी अरब की ।
हाजा मुस्लिम कुल्ल हुंम, फआल अली मिन्जरब ॥४॥
ए मुसलमान सारे जो हैं, किए अली ने मोहों मार के ॥

व ला लहुमा ऐयून, खारज व ला दखल ।
और नहीं हैं इनको आंखें, बाहेर की और नहीं है अन्दर की ।
व लहुम लेस इगनू, व लहुम लेस अकल ।।५।।
और इनोंके नहीं है कान, और इनोंको नहीं है अकल ।।
जरब अना वज्हे मिन्सेफ, फआल अना मुसलमीन ।
मारे मैं मोहों समसेर के से, किए मैंने मुसलमान ।
लाकिन जाहिल इमन, व ला ए जाआ यकीन ।।६।।
पर मूरख जो हैं इमनके, और नहीं इनोंको आया आकींन ।।
लिहाजा कमा काल इमन, ला बारकला मुसलमीन ।
इस वास्ते ऐसा कह्या इमनको, नहीं है बरकत इन मुसलमानों को ।

बारकला धन्य ला बारकला धृक

कुलू बारकला हिन्द मुस्लिम, खुजू रास कलाम यकीन ।।७।।
कही बरकत हिन्द के मुसलमानों को, लिए सिर कलाम आकीन करके ।।
हाजा फास खबर इन्द कुंम, यज्लिस हिन्द सुब्हान ।
ए जाहेर खबर पास तुमारे है, बैठेंगे हिन्द में खावंद ।
कमा अवल काल रसूल, अना हस्ना हिन्द मकान ।।८।।
ऐसा पहले कह्या रसूलने, मेरा नेक हैं हिंद स्थान ।।
व ला लेतनी मौला रदो, अल्लजी हाकीयतो महंमद ।
और न कदी खावन्द रद्द करे, जो कछू कह्या है महंमद ने ।
लागिल मुस्लिम इमाम, जा आ हिंदल अर्ज ।।९।।
वास्ते इन मुसलमानों के इमाम मेंहदी, आया हिन्द की जिमी ।।
कुंम अल्लजी मुस्लिम, रसूल कुल्लहो कलिम ।
तुम जो कोई मुस्लिम हो, रसूलने सबको कहा है ।
यजाआ यकीनल्कुम, खैर तल्बो हिन्द मुस्लिम ।।१०।।
आवेगा यकीन तुमारे तांई, पनाह मांगो हिन्दके मुसलमानों से ।।
यव्सरो हाजा कलमा, दाखल कलूब कुम्म ।
देखो एह वचन, बीच दिल तुमारे के ।
सैयबो विलाद कुल्हुम, खैर तलबो हिन्द मुस्लिम ।।११।।
छोड़ो विलायत सबकी, बखसीस मांगो हिंद के मुसलमानों पें ।।

अल्लजी कलिमा रसूलना, खुजू मुहव्ब कलाम ।
जिन किनों ने वचन रसूल मेरे के, लिए प्यारसों बोल ।
लागिल हिन्द मुस्लिम, हुबहुम जाआ इमाम ॥१२॥
वास्ते हिंद के मुसलमानों के, प्यार कर इनों पर आये इमाम मेंहदी ॥
अल्लजी रसूल सैयबो, ऐया अना फआली हुम ।
जो रसूल ने छोड़ दई, क्या मैं करूं उसको ।
खला अना अर्ज आरब, जाआ अना इन्द कुम ॥१३॥
छोड़ी हम जिमी अरब की, आए हम पास तुमारे ॥
इस्मयो हिन्द मुस्लिम, अनी कलिम सिदक ।
सुनो हिन्द के मुसलमानों, मेरे कहना है सांच ।
यकीन कान इन्द कुम, व कायमुल्कलमे हक ॥१४॥
अकीन है पास तुमारे, और कायम हो साथ कलमे हक के ॥
अवल स्वाल रसूल ना, व लाए आरफ अहद ।
पहले बोल रसूल मेरेके, और नहीं समझया कोई आदमी ।
दलहिन कुल्ल य आरिफो, जाआ कलिम महंमद ॥१५॥
अब सब यह समझेंगें, आया वचन महम्मद साहेब का ॥
अल्लजी जाआ कुम मुस्लिम, हाजा लागिल कुम फआल सुगल ।
जो आए हो तुम मुस्लिम, यह खातिर तुमारे किया है खेल ।
इब्सर सुगल अना यरजा, अल्लजी मुस्लिम कुल्ल ॥१६॥
देख खेल हम फिरेंगे, जो कोई है मुस्लिम सो सब ॥
अनी कुल्ल मुस्लिम वादेह, अस्लू वाहिद मकानी ।
हम सब मुस्लिम एक हैं, असल एक है ठौर हमारा ।
कांन हक वाहिद अना, गैर मुस्लिम लेस सांनी ॥१७॥
है खसम एक हमारा, बिना मुस्लिम नहीं कोई दूसरा ॥
अनी हबो कुल्ल मुस्लिम, लाकिन जायद सिंध ।
मेरे प्यारे तमाम मुस्लिम, लेकिन अधिक हैं सिन्ध के ।
हाल अना कलिमे सिंध मुस्लिम, बाद कलिम अना हिन्द ॥१८॥
अब मैं कहत हूं सिंध के मुसलमानों को, पीछें कहुंगी मैं हिंदके मुसलमानों को ॥

॥प्रकरण॥३४॥चौपाई॥११९५॥

सनंध - सिन्धी भाखा

कारण अरवा अर्सजी, चुआं[१] सिन्ध गालाए ।
जिन कलमें रसूल जे, सचो आकीन आए ।।१।।

मोमिन बलहा[२] महंमद, जे सदाई जाण ।
थियो सुहाग सभ केई, मेहेबूब अचो पाण ।।२।।

चुआं कुजाडो हिंद के, सांई वडो डिंन्यो सुहाग ।
आयो रब आलम जो, सभनी उघड़्यो भाग ।।३।।

अदयूं रसूल पांहिजो, कोठे[३] आयो इमाम ।
आलम सभे उलट्यो, अची करे सलाम ।।४।।

सिंधडी थियूं वधाइयूं, मीर पीर फकीर ।
पुन्यूं उमेदूं सभनी, खिल्ली थेयां सभ खीर[४] ।।५।।

अची विठो हिंद में, त्रूठो चोडे तबक ।
थेयूं सुहाग सिंधडी, जिन कलमें यकीन हक ।।६।।

ईं अरब रसूलजी, बलही[२] सिंध सुजाण ।
यकीने पण अगरी[५], इस्क सिंधी खांण ।।७।।

आऊं[६] जोए इमाम जी, सिंधाणी[७] सिरदार ।
डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंही हथ मुदार ।।८।।

आयो मिठडो मेहेबूब, आऊं पण पिरन[८] सांण ।
अची बिठासी हिंद में, डिजां सिंधडी जांण ।।९।।

डिजां संडेहो सिंधडी, तूं घणूं बलही इमाम ।
सिंध हिंद माधा[९] थेई, पोरया जेदां रूम स्याम ॥१०॥

हांणें चुआं सचो सांईजी, जे अची[१०] बिठो हिंद ।
ईसे मांधा[११] अची करे, भगो दज्जाल जो कंध ॥११॥

१. कहता । २. प्यारे । ३. बुलाने । ४. प्रसन्न । ५. अधिक । ६. मैं । ७. सिंध की (इंद्रावती) । ८. प्रीतम । ९. आगे । १०. आकार । ११. आगे ।

दीन कियाऊं हिकडो, भनी सभे कुफरान ।
अर्स बका केयाऊं जाहेर, जित हक बिठो पांण ॥१२॥

आसमान जिमी जे विचमें, व्यो कोए न चाए हक ।
से हंद सभे उडी वेयां[१], जे सिजदा कंदी हुई खलक ॥१३॥

सचो सांई जडे आइयो, तडे व्यो पुजाए केर ।
सुज कायम उगी थ्यो जाहेर, तडे[२] उडी वेई सभे अंधेर ॥१४॥

धणी जमाने जो आइयो, तडे छुटी वेई तांणों[३] बांण ।
तित मोमिन उथी ऊभा थेयां, दोजख थेई कुफरान ॥१५॥

हित के के बुजरक आइया, जे नजीकी हक जा ।
ए वडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा ॥१६॥

सेर[४] सरे[५] मके मुलक, आई तेहां पुकार ।
रह्या ईमान से सतजणां[६], व्या काफरे मार केयां कुफार ॥१७॥

सिंधमें अदियूं पांहिंज्यूं, हे खबर डिजां[७] तिन ।
असां गाल सुणी दम ना रहे, जा हुंदी[८] रूह मोमिन ॥१८॥

सुख बका अर्स हिन जिमी, हिए गिनणजी[९] वेर ।
पोए[१०] आलम जडे उलट्यो, तडे लखे पूछे चोए केर[११] ॥१९॥

निसबती अची गडवी, पण ही सुख फजर कित ।
सुख बका अर्स केर गिंनी[१२] सगे[१३], जे नूर जमाल बुठडो हित ॥२०॥

हे सुख मोमिन हमेसगी, अर्समें सभे गिनन ।
पण जे सुख अर्सजा हिन जिमी, से व्या रे न्हाए रूहन ॥२१॥

हकें डिंना सुख आलम में, त्रभेरका[१४] पांणके[१५] ।
से सुख गिडां रात निद्रमें, के भत चुआं सुख ए ॥२२॥

जीं सुख सोणेंमें[१६] गिंनजे, तीं सुख गिडां रात ।
डींहें सुख गिनजे जागंदे, ही आए रेहेमानी दात ॥२३॥

१. गये । २. तब । ३. खेंचा खेंच । ४. आगे चाल । ५. शरा । ६. सात जने । ७. दी । ८. होगी । ९. लेने का । १०. पीछे । ११. कौन । १२. ले । १३. सके । १४. तीसरे । १५. आवन को । १६. सुपन ।

जे सुख डिंना हकें रातजा, तेजी पण हित लज्जत ।
अर्सजा पण सुख हिंनमें, गिडां कई कोडी[१] भत ॥२४॥

ए सिफत न जिभ चई सगे, सोई जांणे गिडां[२] जिन ।
सुख कीं चुआं[३] हिन भूंअ जा, सुख डिंना[४] महें बका वतन ॥२५॥

बरकत हिन रूहनजी, सुख गिडां सभनी मुलक ।
सिफत न थिए हिन सुखजी, हे जा पेराई सभे खलक ॥२६॥

कागर केयां सभ पधरो, खोल्या हकजा गंज ।
सुख डिंनाऊं सभ बका, जिंनी रात डींहें[५] हुआ डुख[६] रंज ॥२७॥

कारैं[७] सदीमें कयामत, लिखी मंझ कुरान ।
से सभ केयांऊं पधरा, जे गुझ हुंदा निसान ॥२८॥

सदी बारैं बी खलक, जिमी या आसमान ।
आखिर थेई सभनी, समझे जा सुजान ॥२९॥

कायम सदी तेरहीं, उथींदा[८] निरवाण ।
महामत जोए[९] इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान ॥३०॥

॥प्रकरण॥३५॥चौपाई॥१२२५॥

सनंध - ईसा इमाम के कजा की

इत ईसा मसी आए के, पेहेले किया सरंजाम[१०] ।
काटे आउध दज्जाल के, पीछे आए रसूल इमाम ॥१॥

अब सब्दातीत की सब्दमें, सोभा बरनी न जाए ।
जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए ॥२॥

खूबी तखत ना केहे सकूं, इन जुबां के जोर ।
जांनूं रात कुफर की मिट गई, हुआ दिन जाहेर भोर ॥३॥

हिसाब नहीं उजास को, आगे ले खड़ा लदुन्नी नूर ।
जाए ना बरन्यो इन जुबां, खड़ी अर्स अरवा हजूर ॥४॥

१. करोड़ो । २. लिया । ३. कहूं। ४. दिया । ५. दिन । ६. दुःख । ७. ग्यारमी । ८. उठेंगे । ९. पत्नी ।
१०. कार्य सम्पन्न (पूर्ण व्यवस्था) करना ।

आगे खड़ा असराफील, और जबराईल हुकम।
जोस सब रूहन पर, वतन बका खसम ।।५।।

यों बैठे तखत इमाम, सिर छत्र कई चंवर।
रसूल अली आए मिले, हुई बधाइयां घर घर ।।६।।

गुझ थे मोमिन अर्स के, ताकी जाहेर हुई खबर।
सो बैठे घेर इमाम को, हुई बधाइयां घर घर ।।७।।

कई औलिए कई अंबिए, कई फरिस्ते पैगंमर।
सो सब आगे आए खड़े, हुई बधाइयां घर घर ।।८।।

आइयां किताबें जिन पर, बुजरक जो मेहेत्तर[1]।
मुसलमान आए संग, हुई बधाइयां घर घर ।।९।।

मुसलमान कई भेखसों, पीर मरद फकर।
पीछा कोई ना रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर ॥१०॥

जुदी जुदी जातें जहानमें, सब आवत हैं मिल कर।
होत दीदार सबन को, हुई बधाइयां घर घर ॥११॥

दुनियां चारों खूंट की, सब आवत हैं एक दर।
मंगल गावें सब कोई, हुई बधाइयां घर घर ॥१२॥

जिन्होंने कबूं कानों ना सुनी, जात बरन[2] भेख धर।
आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर ॥१३॥

बिना हिसाबें आलम, वैराट सचराचर।
दौड़त सब दीदार को, हुई बधाइयां घर घर ॥१४॥

अरवा चौदे तबकों, जो कोई नारी नर।
इन तखत इमाम के कदमों, हुई सारों की नजर ॥१५॥

जब आया रब[3] आलमीन, तब आया सबों आकीन।
और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन ॥१६॥

१. श्रेष्ठ। २. वर्ग। ३. परमात्मा।

जात एक खसम की, और न कोई जात ।
एक खसम एक दुनियां, और उड़ गई दूजी बात ॥१७॥

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान ।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान ॥१८॥

खाए पिऐं सब मिलके, बंदगी एक खसम ।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम ॥१९॥

मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान ।
सेहेदाने[1] सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान ॥२०॥

आए इमाम बाजे बजे, सो केते कहूं विचित्र ।
बिना हिसाबें बाजहीं, हिसाब बिना बाजंत्र ॥२१॥

कजा हुई तब जानिए, जब खुले माएने कुरान ।
तब आगे तें उड़ गई, जाने हती नहीं कुफरान ॥२२॥

मगज माएने किन ना खुले, अव्वल बीच और अब ।
ए कजा तब होवहीं, जब खुले माएने सब ॥२३॥

कछुक रखे रसूलें, माएने सब थें गुझ ।
सो इमाम मुख खोलाए के, करत काजीकी सुझ ॥२४॥

गुझका गुझ और जो सुन्या, सो लिख्या न रसूले कुरान ।
जांने काजी जुबां केहेलाए के, कर देऊं काजी[2] की पेहेचान ॥२५॥

याही वास्ते गुझ रख्या, ए बात दिल में आन ।
कसनी सेती परखिए, काजी कसौटी कुरान ॥२६॥

मोमिनो सो असल का, महंमद सदा सनेह ।
सो आखिर लों फुरमान, लिए खड़ा है एह ॥२७॥

महंमद बिना मेंहेदीय की, करदे कौन पेहेचान ।
इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वल की जान ॥२८॥

१. मंगल गान । २. न्यायाधीश ।

एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर ।
काजी ईसा मेंहेदी महंमद, ए जुदे होंए क्यों कर ॥२९॥

केहेनी अकथ इमाम की, खसमें कथाई हम ।
इन कुरान के माएने, ना होवे बिना खसम ॥३०॥

कलाम अल्ला के माएने, कबूं ना खोले किन ।
एही कलाम यों केहेवहीं, ना खुले मेंहेंदी बिन ॥३१॥

सो खसमें खोलाए मुझपे, यों कर किया हुकम ।
कहे तूं आगे रूहें फरिस्ते, जिन प्यारे हक कदम ॥३२॥

हरफ हरफ के माएने, तामें गुझ मता अनेक ।
खोल तूं आगे अर्स रूहें, जो प्यारी मुझे विसेक ॥३३॥

अब तुम सुनियों मोमिनों, सुनते होइयो श्रवन ।
पीछे विचार होए विचारियो, तब मगज पाइए वचन ॥३४॥

सनंधे सनंधे साखियां, तिन साखी साखी पाव ।
तिन पाव पाव के हरफ का, तुम लीजो दिल दे भाव ॥३५॥

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर ।
इत थें दूजे पसरे, पर न होवे काहूं और ॥३६॥

ईसा महंमद मेंहेदीय की, जो लों ना पेहेचान तुम ।
तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम ॥३७॥

सुध नाहीं फरिस्तन की, ना पेहेचान रूहन ।
ना पेहेचान मुतकी की, ना पेहेचान मोमिन ॥३८॥

सुध ना उतरने पुल-सरात, ना सुध सरा[१] तरीकत[२] ।
ना पेहेचान हकीकत[३] की, ना पेहेचान हक मारफत[४] ॥३९॥

पेहेचान आप ना नासूत[५] की, ना पेहेचान मलकूत[६] ।
ना सुध बका जबरूत[७] की, ना सुध अर्स लाहूत[८] ॥४०॥

१. कर्म । २. उपासना । ३. ज्ञान । ४. विज्ञान । ५. मृत्यु लोक । ६. वैकुंठ । ७. अक्षर धाम । ८. परमधाम ।

ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून ।
ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून ॥४१॥

ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत ।
जिन से आए काफर, ना सुध तिन जुलमत[1] ॥४२॥

ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत है बुजरक ।
जिन को हिदायत[2] हक की, तिन सोहोबतें पाइए हक ॥४३॥

ना सुध निराकार की, ना सुध निरगुन सुंन ।
ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन ॥४४॥

ना सुध ब्रह्मसृष्ट की, सुध सृष्ट ना ईश्वरी ।
हिंदू जो जीव सृष्ट के, तिन ए सुध ना परी ॥४५॥

विजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार ।
वेदों कह्या आखिर जमाने, एही है सिरदार ॥४६॥

इनमें लिखी आखिर, सो सुध ना परी काहू जन ।
पढ़ पढ़ गए कई वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन ॥४७॥

करनी कजा चौदे तबक, देना सबों आकीन ।
कुरान माजजा नबी[3] नबुवत, होए साबित हुए एक दीन ॥४८॥

कहां अर्स कहां हक बका, कहां है नूर मकान ।
क्यों पावे महंमद तीन सूरत, जो लों ना ए पेहेचान ॥४९॥

पेहेले माएने हक कलमें के, सुध हक इमाम रसूल ।
और कजा सब होएसी, पर बड़ी कजा ए मूल ॥५०॥

आसिक मासूक दो लिखे, दोऊ एक केहेलाए ।
दो कहे कुफर होत है, अब काजी क्या फुरमाए ॥५१॥

एक भी कहे ना बने, दो भी कहे न जाए ।
ना भेले ना जुदे कहे, अब फुरमान क्या फुरमाए ॥५२॥

१. निराकार । २. शिक्षा । ३. ईश्वरी दूत ।

सिरदार न होवे एकला, ज्यों हुकम हाकिम संग ।
त्यों महंमद मेंहेंदी हक से, ए दोऊ एकै अंग ॥५३॥

जो कछू कहूं महंमद को, तामें अली जान ।
हुकम छोड़ हाकिम फिरया, सो हाकिम हुकम सुभान ॥५४॥

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए ।
पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए ॥५५॥

जिन कोई कहे पट बीचमें, मासूक और आसिक ।
कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक ॥५६॥

परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए ।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए ॥५७॥

ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान ।
तो बीच कह्या क्यों फरिस्ता, जो जाए आवे दरम्यान ॥५८॥

कह्या हक सेहेरगसे नजीक, सब हैवान या खलक ।
तो रसूल जुदागी क्यों हुई, जो बीच भेज्या जबराईल हक ॥५९॥

जो लों ए सक ना मिटे, तो लों होए ना पेहेचान हक ।
ए भी कीजे जाहेर, सब मोमिन करूं बेसक ॥६०॥

एक सुरत दो बीच में, ए जो फिरे दरम्यान ।
तिनको कहिए फरिस्ता, नूर जोस अंग का जान ॥६१॥

रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन ।
हुकम बजाए पीछा फिरया, तब सोई ऐन का ऐन ॥६२॥

सब सकें दूर कीजिए, साफ कीजे समझाए ।
मासूक क्यों महंमद कह्या, क्यों होए आसिक अल्लाह ॥६३॥

तो कह्या मासूक महंमद, आसिक अपना नाम ।
बांध्या आप हुकम का, केहेवत यों कलाम ॥६४॥

वली पैगंमर फरिस्ते, आए मिले सब संग ।
ज्यों गुन इंद्री जुदे जुदे, उठ खड़े सब अंग ॥६५॥

जब ईसा मेंहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए ।
फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उड़ाए ॥६६॥

हक जो नूर के पार है, तिन खुद खोले द्वार ।
बका द्वार तब पाइया, जब खोल देखाया पार ॥६७॥

पेहेचान मेंहेदी महंमद, और ईसा अली मोमिन ।
ए कजा दिल भीतर, निसां हुई हम सबन ॥६८॥

अब कहो क्यों फरिस्ते, क्यों फना आखिरत ।
भिस्त क्यों कर होएसी, क्यों होसी कयामत ॥६९॥

ए सबे समझाए के, पाक करो हम दिल ।
पीछे बात वतन की, हम पूछसी मोमिन मिल ॥७०॥

॥प्रकरण॥३६॥चौपाई॥१२९५॥

सनंध - फरिस्ते फना आखिरत भिस्त कयामत की

अब कहूं बिध नूरियों, जो जहां जिन ठौर ।
ए माएने इमाम बिना, कोई करे जो होवे और ॥१॥

पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम ।
पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ॥२॥

यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल[1] ।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील ॥३॥

ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार ।
ए असल कतरा[2] नूर[3] का, जिनको एह विस्तार ॥४॥

यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब ।
सरत आखिर असराफील[4], नूर से आया अब ॥५॥

१. जोश । २. बूंद । ३. अक्षरब्रह्म । ४. बुध जी ।

अजाजील[१] असराफील, इन दोऊ की असल एक ।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक ।।६।।

कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए ।
तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज[२] रूह सोए ।।७।।

ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल ।
नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल ।।८।।

यों चारों पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातिर ।
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर ।।९।।

एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन ।
तीसरा किन किन[३] लेवहीं, चौथा उड़ावे सबन ॥१०॥

यों नूर नजर चारों पर, इन बिध हुई पैदास ।
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास ॥११॥

या विध उपजे नूर से, इन से सब विस्तार ।
थिर चर चौदे तबकों, हुआ खेल कुफार ॥१२॥

अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए ।
ले तखत बैठाया छल के, सब फरेब जुगत बनाए ॥१३॥

अजाजील से फरिस्ते, उपजे बिना हिसाब ।
सो दम सबों में इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब ॥१४॥

परदा इन सिरदार पर, ए जो कही जुलमत ।
पीछा हटाया हुकमें, ताए कुफर सेवें कर सत ॥१५॥

ले बैठा हुकमें साहेबी, जाकी असल कतरा नूर ।
सो सरमाए[४] के पीछा हट्या, अपना देख अंकूर[५] ॥१६॥

इनसेती जो उपजे, तिन सिर दिया भार ।
आप तिन से न्यारा रख्या, ए दोए भए सिरदार ॥१७॥

१. विष्णु । २. प्राण लेना । ३. चुन चुन कर । ४. लज्जित होना । ५. मूल स्वरूप ।

एक दाना पानी घास सबको, मेकाईल[१] बुध बल ।
ठौर बैठा आप देवहीं, कर पसारा अकल ॥१८॥

जोर जालिम अजराईल[२], बैठा छल में हुकम ले ।
फिरत दोहाई[३] इन की, तले काफर खेलत जे ॥१९॥

फरामोस सरूप अजराईल, मौत हुकम सिर सबन ।
जिन वजूद धर्‌या खेल में, आए लेत कौल पर तिन ॥२०॥

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल ।
ए खेल समेत फरिस्ते, आखिर उड़ावे असराफील ॥२१॥

ला हवा से तेहेतसरा[४] लग, ए सब खेल में पातसाह एक ।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक ॥२२॥

और जो इनके तले, ठकुराइयां कहावत ।
देखाए दुनी को साहेबी, अपने तले ल्यावत ॥२३॥

एक दूजे के गुमास्ते, वजीर वकील दिवान ।
एक फरिस्ता सबका खावंद, यों खेल बन्या सब जहान ॥२४॥

यामें बुजरक आलम आरफ, तिन करियां कई किताब ।
इन सिर हक एक मलकूत[५], चौदे तबकों लेत हिसाब ॥२५॥

ब्रह्मा सिव या देव जन, कई दुनियां तिन सेवक ।
सो कहे ए सुख देवहीं, खैंचे अपनी तरफ खलक ॥२६॥

करे पातसाही खेल में, ऐसी कर बंदोबस्त[६] ।
देत काफरों दोजख, बंदों कदमों चार भिस्त ॥२७॥

जिन हक बका अर्स न पाइया, तिन खुदा हवा या मलकूत ।
सो कटे पुलसरात में, जिन पकड़े वजूद नासूत ॥२८॥

सो ले न सके भिस्त कदमों, तिन अरवाहों देत दोजख ।
और हिसाब सुख दुख हैं कई, ए खेल कह्यो चौदे तबक ॥२९॥

१. ब्रह्माजी । २. रूद्र, शिव । ३. प्रभुत्व की घोषणा । ४. पाताल । ५. वैकुंठ । ६. व्यवस्था ।

ए जो खेल पैदा की सब कही, इनों सिर अर्स मलकूत ।
ला मकान जिमी तहेतसरा[१], ए सब फना तले जबरूत ॥३०॥

ए जो तले ला हवा के, जो खेल कह्या फना ।
इनों सुध ना जबरूत[२] लाहूत[३], ए बका[४] वह सुपना ॥३१॥

लोक जिमी आसमान के, सुरिया[५] ना उलंघत ।
कह्या चौदे तबक का पलना, बीच हवा के झूलत ॥३२॥

चार लाख कोंम आजूज[६] माजूज[७], ए जो आवे जाए रात दिन ।
गिनती कौल पूरा कर, आखिर एही काल सबन ॥३३॥

जबरूत लाहूत अर्स कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत ।
ए बका मता दोऊ अर्सों का, सो महंमद पे मारफत ॥३४॥

रूहें अर्स अजीम की, फौज असराफील फरिस्तन ।
दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्सों से, खेल फरिस्तों का देखन ॥३५॥

पेहेले कही सब खेल की, और कहे देखनहार ।
रूहें फरिस्ते खेल देखहीं, पकड़ ख्वाब आकार ॥३६॥

अजाजील खेल खावंद, ए भी न्यारा रह्या सबन ।
ए खेल कुफार इन भांत का, तो ऐसा किया इन ॥३७॥

ऐसी छोड़ साहेबी अजाजील, पीठ दई आप बचाए ।
ए खेल ऐसा कुफार का, बिना काजी कौन बताए ॥३८॥

मोमिनों को देखलावने, किया खेल कुफार ।
अब जो अर्स रूहें होवहीं, सो क्यों चलें इन लार ॥३९॥

खेल कुफार इन भांत का, सब खेलें हक बका भूल ।
इनमें फुरमान ल्याइया, मेरे मासूक का रसूल ॥४०॥

आया रसूल पुकारता, राह सीधी बका वतन ।
ए माएने कौन लेवहीं, बिना अर्स रूह मोमिन ॥४१॥

१. पाताल । २. अक्षर धाम । ३. परमधाम । ४. अखंड । ५. ज्योति स्वरूप । ६. दिन । ७. रात ।

हम उतरे लैलत-कदर में, माहें उरझे खेल कुफार ।
दसों दिस हम ढूंढ़िया, पर काहूं न पाइए पार ॥४२॥

रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए ।
जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए ॥४३॥

कोई भूली राह बतावहीं, ताए बड़ा सवाब ।
ढिंढोरा फिराइया, कर कर एह जवाब ॥४४॥

हम ढूंढ़ ढूंढ़ कुफार में, गए जो तिनमें भूल ।
ऐसे मिने खसम के, पाए दसखत हाथ रसूल ॥४५॥

इन फुरमान में इसारतें, लिखियां जो खसम ।
निसान अर्स अजीम के, पाए हमारे हम ॥४६॥

हम ढूंढ़ें हक वतन, और रसूल ढूंढ़ें हम ।
यों करते सब आए मिले, मोमिन रसूल खसम ॥४७॥

सुनो मोमिनों बेवरा, ए जो आपन देख्या खेल ।
जो तीनों देखे आलम, उतर के मांहें लैल ॥४८॥

हकें बचाए कोहतूर[१] तले, तोफान हूद[२] महत्तर[३] ।
दूसरे तोफान नूह[४] के, बचाए किस्ती पर ॥४९॥

साल हजार पीछे रसूल के, मांहें उतरे लैलत-कदर ।
हुआ अर्स बका दिन जाहेर, सदी अग्यारहीं के फजर ॥५०॥

एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत ।
सो ए हुए सबे जाहेर, जिनको दुनी ढूंढ़त ॥५१॥

सीधी राह वतन की, अब लों न पाई किन ।
पैगंमर ना फरिस्ते, ना अहंमद मेंहेदी बिन ॥५२॥

खेल फरिस्ते अर्स बका, हक मता पाया हम सब ।
आखिर भिस्त कयामत, ए कजा कहिए अब ॥५३॥

१. गोवर्धन पर्वत । २. नंदजी । ३. श्रेष्ठ । ४. वसुदेव ।

ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखिरत ।
ज्यों पावें सुख भिस्तमें, उठ के रूह कयामत ॥५४॥

ए कजा हुई दुनियां मिने, खोले हकीकत मारफत ।
तिन मता बका अर्स का, जाहेर करी न्यामत ॥५५॥

बका सूरत पर बंदगी, करी इमामें इमामत ।
दोऊ अर्स बताए दोऊ गिरोह को, करी महंमद सिफायत[1] ॥५६॥

ए नूर कजा का या बिध, जिन टाली फेर अंधेर ।
जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर ॥५७॥

कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब ।
फैलसी नूर आलम में, काजी कजा का सब ॥५८॥

ए किरने कौन पकरे, इन नूरै के आवाज ।
करत ए सब खसम, अर्स अरवाहों काज ॥५९॥

काजी कजा के नूर की, बजसी कई करनाल ।
नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल ॥६०॥

कई करोर करनाइयां, कई करोर निसानों घोर ।
यों गरज्या आलम में, सो कह्या न जाए सोर ॥६१॥

याही सब्द के सोर से, पेहेले उड़सी इंड अंधेर ।
कुदरत बुरका[2] गफलत[3], उड़ाया फरिस्तों फेर ॥६२॥

आकास जिमी जड़ मूल से, पहाड़ आग जल वाए ।
फिर्या कतरा नूर का, और दिया सब उड़ाए ॥६३॥

इन घाव के पड़घाव से, उड़सी चौदे तबक ।
और आवाज के नूर से, बैठे भिस्त में कर हक ॥६४॥

पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे ।
काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले ॥६५॥

१. सिफारिश । २. पर्दा । ३. अज्ञानता ।

क्यों बरनों सुख भिस्त के, हो बैठे नूरी नेहेचल ।
रेहेमत इन रेहेमान की, रच दिया और मंडल ॥६६॥

अपने अपने ताएफें[1], अरवाहें मिली सब धाए ।
महंमद मेंहेदी की मेहेर से, भिस्त में बैठे आए ॥६७॥

पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन ।
साफ किए सब नूर ने, यों भिस्त भई वतन ॥६८॥

निमख में नूर नजरों, उठे अंग उजास ।
बरस्या नूर सबन में, कायम सुख में बास ॥६९॥

ए कायम नूर नजर की, सिफत या जुबां कही न जाए ।
पाक हुए सब खेलहीं, जरा खतरा न पाइए ताए ॥७०॥

खाना पीना दिल चाहता, सब बिध का करार ।
नूर सरूपें होए के, भिस्त में बसें नर नार ॥७१॥

रूप रंग सब नूर के, गुन अंग इंद्री नूर ।
वस्तर भूखन नूर सबे, नूरै दिए अंकूर ॥७२॥

मेवा मिठाई सेज सुख, सकल बिध भर पूर ।
इस्क सबों में अति बड़ा, दिल हिरदे नूर हजूर ॥७३॥

या भिस्त में इन सुख को, केतो कहूं विस्तार ।
दिल चाह्या सब पावहीं, सब बिध सुख करार ॥७४॥

लागी बरखा नूर की, चौदे तबक चौफेर ।
अंतर माहें बाहेर, कहूं पैठ न सके अंधेर ॥७५॥

चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल ।
खेल चाल दिल चाहते, नूर अरवा नूर बल ॥७६॥

सुन्य चाही तिन सुन्य दई, भिस्त चाही तिन भिस्त ।
नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त ॥७७॥

१. जमातें ।

मात हुई मात चाहते, बुध बाबा आलम ।
मन चाह्या सबको दिया, अर्स रूहों के खसम ॥७८॥

मोमिन रूहें कदमों लिए, फरिस्ते नूर समाए ।
तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छांए ॥७९॥

भिस्त भी बरकत मोमिनों, दई दुनियां को अविनास ।
पर सुख बड़े मोमिन के, लिए कदमों अपने पास ॥८०॥

पैदास कतरे नूर की, ए जो हुई चल विचल ।
फेर समेत समानी नूर में, सो नूर सदा नेहेचल ॥८१॥

असराफील बुध नूर की, ए जो आई काजी हजूर ।
सो नूर में जाए झिल मिली, ऐसी हुई कजा के नूर ॥८२॥

उड़ाया कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर ।
फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर ॥८३॥

कजा हुई सबन की, पर मोमिन बड़े अंकूर ।
इन को खेल देखाए के, लिए कदमों अपने हजूर ॥८४॥

यों कजा करी सबन की, बांट दिए सब ठौर ।
ए सुध इन काजी बिना, कोई देवे जो होवे और ॥८५॥

काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन ।
पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन ॥८६॥

माएने इन कुरान के, या जाहेर या बातन ।
दई सबों को हैयाती, खोल के इलम रोसन ॥८७॥

कुदरत की सारी कही, बुरका जो गफलत ।
दोजख भिस्त फरिस्ते, आखिर कही कयामत ॥८८॥

ए सब्द तो लों कहे, जो लों आए जुबांए ।
सब्द न अब आगे चले, आवे नहीं कजाए ॥८९॥

आखिर हुई इन जिमी, इन जिमी आया कागद ।
जिन कोई हिसबो[1] खेल में, याको ना लगे सब्द ॥९०॥

इन जिमी में महंमद, होए आया कासद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द ॥९१॥

ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इस्क प्याले मद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द ॥९२॥

करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द ॥९३॥

नूर अकल असराफील, ले पोहोंच्या पार बेहद ।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द ॥९४॥

नूर इन आखिर का, और रोसन काजी सुभान ।
क्योंकर इन जुबां कहूं, रसूल नूर फुरमान ॥९५॥

काजी नूर सोहागनियों, इस्क प्याला ले ।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, ए जो भर भर सबको दे ॥९६॥

नूर इस्क इन मद का, ए जो चढ़सी सबन ।
ताए लेसी असलू[2] नूर में, क्यों करे जुबां बरनन ॥९७॥

अर्स रूहें मोमिन, ए सब रूहें सोहागिन ।
क्यों बरनू मैं इस्क इन का, ए जो रूह अल्ला के तन ॥९८॥

ए झूठी जिमी जो ख्वाब की, खाकी बुत सब रद ।
ताए भी मद ऐसा चढ़्या, जो लगे न काहू को सब्द ॥९९॥

लिखे हरफ सारे कहे, ए जो लिखे हरफ नांहें ।
अब सो ए करूं मैं जाहेर, जो रसूल के दिल मांहें ॥१००॥

ए जो रसूलें कानों सुने, पर लिखे नहीं फुरमान ।
सो गुझ मोमिनों को देऊंगी, अर्स अजीम के निसान ॥१०१॥

१. मूल्यांकन करना । २. वास्तविक नूर ।

क्यों वतन क्यों खसम, कौन ठौर क्यों नूर ।
ए सेहेरग से देखे नजीक, जो मोमिन सदा हजूर ॥१०२॥

दोऊ अर्स बका जाहेर किए, जबरूत नूर जलाल[१] ।
हादी रूहें लाहूत[२] में, हक सूरत नूर जमाल[३] ॥१०३॥

अब कहूं हुकम की, जिन से सब उतपत ।
खेल फरिस्ते हुकमें हुए, हुकमें हुई कयामत ॥१०४॥

हुकमें झूठे सांच कर, ताए सुख दिए नेहेचल ।
अब हुकम कजा में न आवहीं, पर तो भी कहूं नेक बल ॥१०५॥

॥प्रकरण॥३७॥चौपाई॥१४००॥

सनंध - हुकम की

हुकमें परदा उड़ाइया, कर देऊं सब पेहेचान ।
तुमसों गोसे बैठ के, देऊंगी सब निसान ॥१॥

हुकमें बात वतन की, जो है गुझ खसम ।
गोसे[४] तुमको कहूंगी, जो हुआ मुझे हुकम ॥२॥

निसान बका[५] हक[६] अर्स[७] के, सो सब देऊंगी तुम ।
पर पेहेले नेक ए कहूं, जो तुम वास्ते हुआ हुकम ॥३॥

कहूं हुकम हक के, जो बैठे कदमों मोमिन ।
सो हमेसा अर्स में, ताए मेहेर बड़ी बातन ॥४॥

खसमें हमारे दिल पर, ऐसे किया हुकम ।
तो यों दिल में उपज्या, मांगें खेल खसम ॥५॥

तब हम मोमिन मिल के, खेल मांग्या हादी हक पे ।
तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में ॥६॥

तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल ।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल ॥७॥

१. अक्षर धाम । २. परम धाम । ३. अक्षरातीत, पूर्ण ब्रह्म । ४. एकांत । ५. अखंड । ६. धनी । ७. धाम ।

हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमिन मिल ।
ढूंढ़ें अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल ।।८।।

ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम मांहें ।
हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नांहें ।।९।।

एक हुकमें बुजरक, दूजे न खाक समान ।
बेसुध कर सब हुकमें, खेलावत है जहान ॥१०॥

हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़ ।
हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़ ॥११॥

एक चलाए पांउसों, एक उड़ाए पर ।
पेटें हुकम चलावहीं, एक खड़े रखे जड़ कर ॥१२॥

कई दीन फिरके मजहब, खेल फरिस्ते दम ।
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम ॥१३॥

भेख भाखा जातें जुदियां, ना तो सोई दम सोई देह ।
खैंचा-खैंच कर हुकमें, खेल बनाया एह ॥१४॥

एकों को हुकम हुआ, तिन लई राह मुस्लिम ।
पीछे जुदी जुदी जिनसों, ए सब खेलें खेल हुकम ॥१५॥

हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इस्क ले ।
हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे ॥१६॥

चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम ।
बिना हुकम रूह सबके, मुख ना निकसे दम ॥१७॥

करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम ।
भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम ॥१८॥

दाना[१] दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस ।
दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस ॥१९॥

१. स्याना, बुद्धिमान ।

हुकमें जोग जो लेवहीं, हुकमें देवे भोग ।
हुकमें रोग जो आवहीं, हुकमें देवे सोग ॥२०॥

लेवे देवे सब हुकमें, नेकी बदी हुकम ।
मरे मारे सब हुकमें, या चीजें या दम ॥२१॥

दुस्मन हुकमें सज्जन, सज्जन हुकमें वैर ।
खूंनी मेहेर सीधा उलटा, हुकमें मीठा जेहेर ॥२२॥

जिमी हद न छोड़हीं, ना हद छोड़े जल ।
रूत रंग सब हुकमें, होवे चल विचल ॥२३॥

वाओ बादल बीज गाजहीं, जिमी जल न समाए ।
पल में हुकम यों करे, पल में देवे उड़ाए ॥२४॥

जल को थल उलटावहीं, थल को उलटावे जल ।
कायर सूरे खाली भरे, सब में हुकम बल ॥२५॥

पात ना रेहेवे बन में, हुकमें फल फूल बास ।
हुकमें उजाला अंधेर, हुकमें अंधेर उजास ॥२६॥

ताता सीरा फिरे हुकमें, ससि सूर नखत्र[1] ।
इन जुबां बल हुकम के, केते कहूं विचित्र ॥२७॥

सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल ।
जल थल चौदे तबकों, कोई जरा ना हुकमें भूल ॥२८॥

कई कोट इंड ऐसे पल में, करके पैदा उड़ाए ।
बल जरा इन हुकम का, इन जुबां कह्यो न जाए ॥२९॥

सरूप रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम ।
हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम ॥३०॥

इन हुकम की इसारतें[2], कई फरिस्ते उपजत ।
कई समावें सुन्य में, कई डारें ले गफलत ॥३१॥

१. नक्षत्र । २. संकेत ।

जिन कहो अजाजील[1] को, इनने फेरया हुकम ।
इन हुकम की इसारतें, हादी वास्ते करी खसम ॥३२॥

अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए ।
ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए ॥३३॥

तो पीछा फेरे हुकम, जो कोई दूसरा होए ।
हुकम सबों समझावहीं, हुकमें न समझे कोए ॥३४॥

नूरी फरिस्ता हुकमें, ले डारया उलटाए ।
ए मोमिनों खातिर हुकम, कई विध खेल बनाए ॥३५॥

पाँउ ना उठे हुकम बिना, मुख ना निकसे दम ।
दिल चितवन भी ना करे, फरिस्ता बिना हुकम ॥३६॥

तले खड़ा हुकम के, नाम जो नूरी जिन ।
माएने जाहेर ना किए, हुकमें एते दिन ॥३७॥

बुरका डाल अजाजील पर, हुकमें किया रद ।
सिजदा कराया आदम पर, जित मेंहेदी मोमिन महंमद ॥३८॥

बेसुध हुकमें करके, खेल कराया छल ।
ताए जो सिजदा करावहीं, पर हुकम बस अकल ॥३९॥

फरिस्ता कतरे नूर से, लानत दीनी ताए ।
सो मोमिन जाहेर करके, हुकमें सिजदा कराए ॥४०॥

जिन आदम में महंमद, हुकमें आए मोमिन ।
अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन ॥४१॥

हुकमें आवे लदुन्नी, हुकमें आवे किताब ।
सोई खोले हक हुकमें, जिन सिर दिया खिताब ॥४२॥

नफा नुकसान सब हुकमें, हुकमें भिस्त दोजख ।
झूठा सांच करे हुकमें, हुकम करे सबों हक ॥४३॥

१. विष्णु ।

हकमें मोमिनों वास्ते, कई चीजें करी पैदाए ।
अर्स अरवाहें पेहेचान, कई विध हुकम कराए ॥४४॥

हुकमें मुसाफ इसारतें, करें मोमिनों पेहेचान ।
खोले बातून मोमिन हुकमें, याद आवे अर्स निसान ॥४५॥

ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल ।
हुकमें मोमिन आए के, गए खेल में भूल ॥४६॥

आप हुकम आया इत, चलाया हुकम ।
हुकमें छलतें छोड़ाए के, जाहेर किए खोल इलम ॥४७॥

रूहों को खेल देखाइया, विध विध हुकम कर ।
आप बांध्या हुकम का, होए रसूल आया आखिर ॥४८॥

बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए ।
कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए ॥४९॥

हुकमें सब जुदे जुदे, खेल किए विवेक ।
मोमिनों को देखाए के, आखिर किया दीन एक ॥५०॥

अबलों बेसुध हुकमें, खेली सकल जहान ।
तिनों सुध हुई हुकमें, यों खुली इसारते फुरमान ॥५१॥

अजाजील दम सबन में, लगी लानत दम तिन ।
लोक जाने लगी अजाजील को, वह तो हुकमें कही सबन ॥५२॥

पीछे हुकमें जाहेर करी, अबलीस सब दिलों पातसाह ।
हुआ सबों का दुस्मन, ना करने देत सिजदाए ॥५३॥

एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत ।
पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत ॥५४॥

असल आदम रसूल, कह्या सिजदा इन पर ।
चीन्ह्या न नबी को लानती, तो दुनी रही सिजदे बिगर ॥५५॥

हुकमें चिन्हाया रसूल, तब आया सबों आकीन ।
किया सबों ने सिजदा, जब हुकमें हुआ एक दीन ॥५६॥

लानत उतरी अजाजील से, सब कायम हुए तले नूर ।
हुई हैयाती सबों हुकमें, उग्या रोसन अर्स बका सूर ॥५७॥

हुकमें हम आए इत, लें हुकमें हक इलम ।
मैं खासा मोहोल खसम का, कर हुकम केहेलाया तुम ॥५८॥

जाहेर किया हुकमें, हुकमें किया हक ।
हुकमें लीन्ही अंदर, जुबां रही इत थक ॥५९॥

हुकम न आवे सब्द में, तो भी कह्या नेक सोए ।
अब केहेनी जुबां बदले, सो मेंहेदी बिना न होए ॥६०॥

अब लेने अर्स अजीम में, बोलसी जुबां इमाम ।
सो तो अपने आप को, केहेने हैं कलाम ॥६१॥

अब बातें अंदर की, पूछसी सब मोमिन ।
जाहेर देऊं निसानियां, ज्यों देखो अर्स वतन ॥६२॥

समझो एक इसारतें, ऐसा कर दें हम ।
तब फेर इत का पूछना, रहे उमेदां तुम ॥६३॥

जब समझे तब देखिया, याद जो आवे दिल ।
बीच खिलवत बातें हकपे, जो मांग्या तुम मिल ॥६४॥

याद आए आंखां खुलें, तब तुमें रहे उमेद ।
ज्यों मकसूद[1] सब होवहीं, अब कहूं तिन भेद ॥६५॥

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम ।
ना तो लेते अंदर, केती बेर है हम ॥६६॥

॥प्रकरण॥३८॥चौपाई॥१४६६॥

१. आशा (उद्देश्य) ।

सनंध - नूर नूर - तजल्लाकी

कह्या जाहेर रसूलें, मैं हरफ सुने हैं कान ।
सो आए केहेसी इमाम, मैं लिखे नहीं फुरमान ।।१।।
जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान ।
और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान ।।२।।
बोलें न मेंहेंदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख ।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख ।।३।।
खेल में मेंहेंदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर ।
आगे तो नूर-तजल्ला[१], तहां जुबां बोल है और ।।४।।
खातिर मोमिन रसूलें, कई निसान लिखे प्यार कर ।
सो मैं ठौर ठौर हक बका, कर देऊं सब खबर ।।५।।
इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच ।
गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित ।।६।।
अब केहेनी आई असल की, नैन जुबां असल ।
बातें करूं असलू, असल की अकल ।।७।।
अब कहूं अर्स रूहन को, अर्स हक खिलवत बात ।
गोसे[२] अपनी रूहोंसों, बैठ करूं अपन्यात ।।८।।
हक बातें तो इत सुनसी, पर हम जो करत गुजरान ।
पेहेले कहूं आगे नूर-तजल्ला, जो ले खड़ा हक फुरमान ।।९।।
आगे नूर फुरमान के, खड़ा हक नूर का नूर ।
जिन से पैदा मलायक[३], चुआ कतरा जिनों अंकूर ॥१०॥
अब नेक कहूं इन नूर की, इन नूर से पैदा नूर ।
पेहेले कहूं तिन नूर की, जित रूहें खेली मांहें जहूर ॥११॥

१. अक्षरातीत । २. एकांत । ३. फरिस्ते ।

अब कहूं रास जहूर की, इन खेल से न्यारा इंड ।
सो नूर नजर ऐसा हुआ, नूर सारा ब्रह्मांड ॥१२॥

इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अर्स रूहों विलास ।
है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास ॥१३॥

ए हमारी अर्स न्यामतें, याके हमपे सहूर ।
कह्या कतरा नूर का, चुआ है अंकूर ॥१४॥

इत सब्द न पोहोंचे दुनी का, नेक इन की देऊं खबर ।
कायम[1] हुआ साइत में, जो आया नूर नजर ॥१५॥

ए जो बात बका अर्स नूर की, सो केहेनी या जिमी मांहें ।
क्यों सुनसी दुनी इन कानों, जो कबहूं ना सुनी क्यांहें ॥१६॥

कोट हिस्से एक हरफ के, हिसाब किया मिहीं कर ।
एक हिस्सा न पोहोंच्या इन जिमी लग, ए मैं देख्या दिल धर ॥१७॥

एक जरा इन जिमी का, ताके नूर आगे सूर कोट ।
सो सूर न आवे नजरों, इन जिमी जरे की ओट ॥१८॥

सोने जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त ।
सोभा जो नूर बन की, सो कही न जाए मुख हस्त ॥१९॥

जो कहूं रोसनी एक पात की, सो भी कही न जाए ।
कोट चांद जो सूर कहूं, तो एक पातै तले ढंपाए ॥२०॥

नूर ससि बन पसु पंखी, जिमी नूरै रेजा रेज ।
थिर चर नूर सबों मिने, सब चीजें नूर तेज ॥२१॥

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो याही जिमी माफक ।
जिन जिमी जरे की रोसनी, कही न जाए रंचक ॥२२॥

सुख जो अर्स अरवाहों के, जो लिए जिमी इन ।
सो तुम देखो सहूर कर, कहे न जाए मुख किन ॥२३॥

१. अखंड ।

जिन जिमी की ए रोसनी, ऐसे बाग के दरखत ।
तो इत सुख ऐसे ही चाहिए, अर्स बका की न्यामत ॥२४॥

ए जिमी बाग पांचों चीजें, ए जो पैदा किए नूर ।
एक पल लेहेरें कायम किए, नूर का ऐसा जहूर ॥२५॥

इत खेलत रूहें अर्स की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर ।
सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर ॥२६॥

ए नूह तोफान कह्या रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन ।
किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध ना परी पोहोंची बाग किन ॥२७॥

बात बड़ी इन नूर की, ए तो नेक कह्यो प्रकास ।
इत खेलें रूहें हकसों, बिध बिध के विलास ॥२८॥

कह्या जाए ना नूर इन बाग जिमी, हुआ सब रोसन भरपूर ।
जिन ऐसा रोसन किया पल में, सिफत क्यों कहूं असल नूर ॥२९॥

हद सब्द दुनी में रह्या, पोहोंच्या नहीं नूर रास ।
तो क्यों पोहोंचे असल नूर को, जिनकी ए पैदास ॥३०॥

बड़ी भिस्त भी याही से, जो कही कजा के मांहें ।
तिन भिस्त के नूर की, बात बड़ी है तांहें ॥३१॥

नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए ।
बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए ॥३२॥

सोभा भिस्त जिमीय की, और सोभा भिस्त दरखत ।
पुरों पुरों नूरी बसें, ए क्यों होए खूबी सिफत ॥३३॥

सोभा भिस्त मोहोल मंदिरों, और सोभा नूरियों अंग ।
नूर असल अंग भेदिया, ए नाहीं नूर तरंग ॥३४॥

निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब ।
भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब ॥३५॥

रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर ।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर ॥३६॥

ए जो नूर मकान आगूं अर्स के, नूर बका असल ।
ए रूहें असलू कानो सुनियो, असल तनों के दिल ॥३७॥

ए असल नूर मकान की, ए नूर सागर साबित ।
देखे नूर के तरंग, रास भिस्त कही तित ॥३८॥

नूर लेहेरें दायम उठें, पाउ पल में बिना हिसाब ।
कोई लेहेर कायम करे, कई उड़ावें कर ख्वाब ॥३९॥

नूर मकान जिमी असल, असल बन चौफेर ।
पसु पंखी असल, खेलत घेरों घेर ॥४०॥

नूर जिमी बन नूर जल, आकास वाए सब नूर ।
नूर पसु पंखी द्वारने, नूर सब ससि सूर ॥४१॥

एक पात ना खिरे बन का, ना गिरे पंखी का पर ।
नया पुराना न होवहीं, जंगल या जानवर ॥४२॥

दरबार मोहोल नूर सबे, सब नूरै नूर विस्तार ।
ए नूर कहूं मैं कहां लग, कहूं याको वार न पार सुमार ॥४३॥

ए सब नूर एक होए रह्या, रोसनी न काहूं पकराए ।
बिना नूर कछू ना देखिए, रह्या बाहेर मांहें भराए ॥४४॥

रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध ।
आगे तो नूर तजल्ला, सो ए देऊं नेक सुध ॥४५॥

जहां पर जले जबराईल, इत थें आगे न सके चल ।
दरगाह अर्स अजीम की, हक हादी रूहें असल ॥४६॥

अब नूर कहूं अंदर का, नूर मोहोल मंदिरों नहीं पार ।
एही भूल है अपनी, सोभा ल्याइए मांहें सुमार ॥४७॥

नूरजमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार ।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारें हजार ॥४८॥

सुख जो अर्स अजीम के, सो होए नहीं मजकूर ।
ए अर्स तन से बोलत, मांहें खिलवत हक हजूर ॥४९॥

जो रूह होवे अर्स की, सो सुनियो अर्स तन कान ।
अर्स अकलें विचारियो, मैं केहेती हों अर्स जुबान ॥५०॥

हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन ।
असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जानें हक बिन ॥५१॥

हम सब में इस्क हक का, ऊपर बरसे हक का नूर ।
हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर ॥५२॥

पेहेले कह्या नूर मकान जो, सो नूर मांहें वाहेदत ।
हक हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत सब निसबत ॥५३॥

बाग जिमी जो अर्स की, और पसु जानवर ।
कहा कहूं सुख साहेबी, जिन पर हक नजर ॥५४॥

और जरा न हक बका बिना, खेल सदा होत नूर से ।
एक पल में कई पैदा करे, इंड उड़ावे पल में ॥५५॥

हम रूहें खेल जानें नहीं, जो नूर से उपजत ।
ओ खेले अरवा गफलत में, ऊपर भी गफलत ॥५६॥

हम जानें इस्क बड़ा हमपे, बड़ी रूह और हक से ।
बड़ी रूह जाने सब से, बड़ा इस्क है हम में ॥५७॥

हकें कह्या हादी रूहन से, तुम नहीं मेरे माफक ।
तुम तेहेकीक मेरे मासूक, मैं तुमारा आसिक ॥५८॥

होत हांसी हमेसा, सब बड़ा जाने अपना प्यार ।
ए बेवरा वाहेदत में होए नहीं, जित नाहीं जुदागी लगार ॥५९॥

तब हकें कह्या फरामोस का, खेल देखावें हम ।
मैं जुदे भी तुमें ना करूं, देखाऊं तले कदम ॥६०॥

हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल मांग्या हम एह ।
तब हमको खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह ॥६१॥

तो खेल हम देखिया, ना तो कैसा खेल कौन हम ।
क्यों उतरें रूहें अर्स से, छोड़ के एह कदम ॥६२॥

खेल हुआ हम वास्ते, हम पर हादी ल्याए फुरमान ।
हम वास्ते कुंजी रूहअल्ला, दई इमाम हाथ पेहेचान ॥६३॥

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन ।
आखिर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन ॥६४॥

अर्स हक की लज्जत, दई खेल में हम को ।
हक साहेबी हक इस्क, हमारे लाड़ पाले कुंजीसों ॥६५॥

हम बैठे देख्या वतन में, हकें ऐसी करी हिकमत ।
आए न गए हादी हम, ऐसा देख्या मांहें खिलवत ॥६६॥

हक न्यामत मैं देत हों, जो होसी अर्स अरवाए ।
ए सुनते निसानियां अर्स की, लगसी कलेजे घाए ॥६७॥

पेहेचान हक अर्स रूहन की, ए केहेते आवसी इस्क ।
ए सुन रूहें ना सेहे सकें, बिछोहा अर्स हक ॥६८॥

हम उतरें चढ़ें तो खेल में, जो जरा दूसरा होए ।
ए देखो हक इलम से, अर्स अरवा न उरझे कोए ॥६९॥

हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम ।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम ॥७०॥

हम खेल देख्या लग मुद्दत, जेते रूहअल्ला के तन ।
खेल देख पीछे फिरें, जानें बेर न लगी अधखिन ॥७१॥

ए देख्या बैठे वतन में, हक सुख लिए हम इत ।
सो इन देह इन जिमिऐं, लिए सुख हक निसबत ॥७२॥

फेर फेर हक वाहेदत, फेर फेर हक खिलवत ।
फेर फेर सुख निसबत के, फेर फेर ए लई न्यामत ॥७३॥

महामत कहें मोमिन की, मिट गई दुनियां चाल ।
देखिए हक दिल अर्स में, तो अबहीं बदले हाल ॥७४॥

॥प्रकरण॥३९॥चौपाई॥१५४०॥

सनंध - खंडनी जाहेरियों की

लिख्या है कतेब में, पाया न किन ठौर ।
ना फरिस्तों ना नबियों, तो क्यों पावे कोई और ॥१॥

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम ।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम ॥२॥

खुद तो किन को ना मिल्या, अब काजी कजा चलाए ।
कहें जो चाहे खुद[1] को, हम मिलावें ताए ॥३॥

पढ़े मुल्लाँ आगूं हुए, सो तो खाए गुमान ।
लोकों को बतावहीं, कहें हम पढ़े कुरान ॥४॥

दुनी बदले दीन खोवहीं, चलें सो उलटी रीत ।
सुपने के सुख कारने, लोभें किए फजीत ॥५॥

राह बतावें दुनी को, कहें ए नबिएँ कहेल ।
लिख्या और फुरमान में, ए खेलें औरै खेल ॥६॥

ए जो मोहोरे खेल के, धरें भेख विवाद ।
एक भान दूजा धरें, कहें हमें होत सवाब[2] ॥७॥

ओ राजी एक भेख में, ताए मार छुड़ावें दाब ।
ओ रोवे सिर पीटहीं, ए कहें हमें होत सवाब ॥८॥

१. खुदा (परमात्मा) । २. पुण्य की प्राप्ति ।

एक खाई ग्रहतें काढ़के, ले डारें दूजी खाड़ ।
ज़ब्हे करें जोरावरी, कहें हमें होत सवाब[1] ।।९।।

हिंदू मुए जलावहीं, और ए आए तिन गाड़ ।
मिल तिन की जारत करें, कहें हमें होत सवाब ॥१०॥

मार डार पछाड़हीं, ओ रोए पीट होवे ताब ।
इन विध जातां बदलें, कहें हमें होत सवाब ॥११॥

जैसे मछ गलागल[2], ना किनकी मरजाद ।
यों खैंच लेवें आप में, कहें हमें होत सवाब ॥१२॥

करें जुलम गरीब पर, कोई न काहूं फरियाद[3] ।
कर सुंनत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥१३॥

कोई जालिम जीव जनम का, खुराकी गोस्त सराब ।
तिनको लेवें दीन में, कहें हमें होत सवाब ॥१४॥

सिरोपाव दे गज चढ़ावहीं, ओ जाने हुआ खराब ।
ए बजाए बाजे कूदहीं, कहें हमें होत सवाब ॥१५॥

काफर को मुस्लिम करें, मिनें लेवें दीन हिसाब ।
सिर मूढ़ दाढ़ी रखें, कहें हमें होत सवाब ॥१६॥

खाना खिलावें आप में, देखलावें मसीत मेहेराब ।
लेकर कलमा पढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥१७॥

चित दे एक चुनावहीं, हिंदू जो आद के आद ।
सो जोरा करके ढ़हावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥१८॥

हिंदू मसीताँ ढ़हावहीं, मुसलमान सों वाद ।
दें सोभा इष्ट दीन को, कहें हमें होत सवाब ॥१९॥

सुध इष्ट ना दीन की, मोह माते उनमाद[4] ।
ज्यों ज्यों वैर बढ़ावहीं, कहें हमें होत सवाब ॥२०॥

१. नफा, लाभ । २. निगलना । ३. शिकायत । ४. मस्ती से भरे ।

गरक[1] हुए मोह गुमानमें, जनम गमावत वाद ।
या बिध खैंचें आप में, कहें हमें होत सवाब ॥२१॥
यों पढ़े राह बतावहीं, खेलें मिने ख्वाब ।
जाहेर जुलम होवहीं, कहें हमें होत सवाब ॥२२॥
पर सवाब तो तिन को होवहीं, छोटा बड़ा सब जिउ ।
एकै नजरों देखहीं, सब का खावंद पिउ ॥२३॥
जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान ।
नबिऐं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान ॥२४॥
कोई बूझे ना इसलाम को, ना लगें नबी के बान ।
ना सुध सल्ली ना बंदगी, कहें हम मुसलमान ॥२५॥
कौन दीन क्यों चलना, और क्यों रेहेनी फुरमान ।
क्यों अंतर मांहें बाहेर, कहें हम मुसलमान ॥२६॥
ना सुध उजू निमाज की, ना रोजे रमजान ।
ना तसबी[2] ना नाम की, कहें हम मुसलमान ॥२७॥
सुध नहीं दिल साफ की, ना कछू सब्द पेहेचान ।
ना सुध छल ना वतन, कहें हम मुसलमान ॥२८॥
मैं कौन आया किन ठौर से, कहा देखत हों जहान ।
कौन नबी भेज्या किने, कहें हम मुसलमान ॥२९॥
हक को कबूं ना याद करें, हुए नहीं गलतान ।
खुद कबूं ना सुपने, कहें हम मुसलमान ॥३०॥
ए तो आग है जलती, ताए लई सुख मान ।
देखाए भी अंधे न देखहीं, कहें हम मुसलमान ॥३१॥
बाहेर के देखावहीं, अंदर आंख न कान ।
सो कहा सुने कहा देखसी, कहें हम मुसलमान ॥३२॥

१. डूबना । २. माला फेरना ।

विध भी देखावें बाहेर की, सुध नहीं वृध[1] हान[2] ।
ना पेहेचान जो रूह की, कहें हम मुसलमान ॥३३॥

गुन ना देखें काहू को, अवगुन लेवें सिरतान ।
आप पड़े बस इंद्रियों, कहें हम मुसलमान ॥३४॥

जुलम करें कई जालिम, मूंदी आँखें गुमान ।
खून करते ना डरें, कहें हम मुसलमान ॥३५॥

नीयत ना नीकी कबहूं, जनम दगाई[3] जान ।
निस दिन चाहें छल को, कहें हम मुसलमान ॥३६॥

मने उड़ाए तूल ज्यों, न पावें ठौर ठेहेरान ।
सो सारे गफलतें फिरें, कहें हम मुसलमान ॥३७॥

ले गरब[4] खड़े होवहीं, जाने हम ही मेर[5] समान ।
ना सुध भारी हलके, कहें हम मुसलमान ॥३८॥

कहे अंग तो काम क्रोध के, गोस्त खान मद पान ।
हक हराम न जानहीं, कहें हम मुसलमान ॥३९॥

सुपेत हुए स्याही गई, स्याही अंदर बढ़ती जान ।
काट गला लोहू पीवहीं, कहें हम मुसलमान ॥४०॥

दुख ना देखें और को, ऐसे हिरदे निपट पाखान ।
दुख देते ना सकुचें, कहें हम मुसलमान ॥४१॥

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक ।
दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक ॥४२॥

कुफर न काढ़ें आपको, और देखें सब कुफरान ।
अपना अवगुन ना देखहीं, कहें हम मुसलमान ॥४३॥

ज्यों सुपनें में मनुआ, आप भाव सब ठौर ।
तरंग जैसा आप में, सोई देखे मिने और ॥४४॥

१. लाभ । २. हानि (नुकसान) । ३. विश्वास घाती, कपटी । ४. गर्व (अहंकार) । ५. पर्वत ।

बदी[1] न छोड़ें एक पल, डर न रखें सुभान ।
फैल करें चित चाहते, कहें हम मुसलमान ॥४५॥

ना परतीत[2] जो और की, यों पढ़े काजी कुरान ।
राह बतावें और को, कहें हम मुसलमान ॥४६॥

हिरदे फूटे ऐसे बेसुध, एता भी न रहे याद ।
खुद काजी आखिर होएसी, तब देसी कहा जवाब ॥४७॥

कलाम अल्ला काजी पढ़े, पर होत नहीं आकीन ।
कैसा डर कौन आवहीं, तो हलका[3] किया दीन ॥४८॥

तिनों तो सस्ता[3] किया, जिनों नहीं भरोसा निदान ।
या विध आपे अपना, हलका करें कुरान ॥४९॥

महामत केहेवे यों कर, ए पढ़े बड़े कुफर ।
बातून नजर इन को नहीं, तो कजा की न हुई खबर ॥५०॥

॥प्रकरण॥४०॥चौपाई॥१५९०॥

सनंध - पत्री बड़ी

तुमको देऊँ सुख जागनी, साथजी मेरे आधार ।
भेख धरे जो वासना, छोटे बड़े नर नार ॥१॥

सुनियो भीम मकुंदजी, ऊद्धव केसो स्याम ।
हम पाती पढ़ी महंमद की, सब पाई हकीकत धाम ॥२॥

अपने घर की इसारतें, और न समझे कोए ।
और कोई तो समझे, जो कोई दूसरा होए ॥३॥

वतन की बातें सबे, पाई हमारी हम ।
सो ए रोसन करत हों, कहियो साथ को तुम ॥४॥

किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान ।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान ॥५॥

१. बुराई (दुष्कर्म) । २. प्रतीती (विश्वास) । ३. महत्व कम करना ।

जमुना जरी किनार पर, कई द्योहरियाँ तलाब ।
भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव ।।६।।

नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत ।
पसु कई विध खेलहीं, यों कागद निसानी देत ।।७।।

सबज[1] बन कई रंग के, जवेर कई झलकत ।
सैयां बरनन इसारतें, कई पंखी मिने घूमत ।।८।।

कह्या मैं तारतम तुमको, मूल वचन जिन पर ।
सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर ।।९।।

ऊपर से तले आए के, सब बैठियाँ खेल देखन ।
भेली रूह भगवान की, हुकम हुआ सबन ॥१०॥

हुई रात[2] सबन को, तिन फेरे खेल में मन ।
सोई रात सोई साइत, पर भूल गैयाँ वह दिन ॥११॥

तीन तकरार कहे रात के, तिन तीनों के बयान ।
बृज रास और जागनी, ए कई विध लिखे निसान ॥१२॥

फुरमान उसी साइत का, पिया भेज्या हम पर ।
सारी विध सोई लिखी, जो कही बाई सुन्दर ॥१३॥

धाम रास और बृज की, कही सुन्दरबाईऐं जेह ।
ए तो कागद नेक देखिया, देत साख सब एह ॥१४॥

काल माया जोग माया, तीसरी लीला जागन ।
सुन्दरबाईऐं ना कहे, ए आगम के वचन ॥१५॥

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों[3] मांहें ।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नांहें ॥१६॥

और सुख कई विध के, कई विध किए प्यार ।
सुन्दरबाई के संगतें, कई औरों पाए दीदार ॥१७॥

१. हरा । २. अज्ञानता (फरामोशी) की रात्रि का अंधेरा । ३. अन्तरात्मा की आँख (ध्यान) द्वारा ।

अंतरगत आरोगते, तीन बेर पिया आऐं ।
आप भी मेवे मिठाइयाँ, कई हम को आन खिलाऐं ॥१८॥

विध विध के सुख और कई, देत दायम अनेक ।
पर लीला जो जागन[1] की, कदी[2] वचन न पाया एक ॥१९॥

लरी सुन्दरबाई पिउसों, इन आगम के कारन ।
पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी सुकन ॥२०॥

इन पड़ उत्तर वास्ते, बाईजीऐं किए उपाए ।
विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें पोहोंचाए ॥२१॥

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर ।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर ॥२२॥

सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान ।
जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन ॥२३॥

अव्वल मध और आखिर, यामें तीनों की हकीकत ।
पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत ॥२४॥

ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचंदजी के पास ।
सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास ॥२५॥

फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात ।
जरा एक ना घट बढ़, सब अंग निसानी जात ॥२६॥

श्री देवचंदजी सों जुध किया, कुली दज्जाल जिन पर ।
ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर ॥२७॥

श्री देवचंदजी सों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन ।
सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन ॥२८॥

बोहोत बातें कई और हैं, सो केते लिखों निसान ।
साथ हम तुम मिलके, हँस हँस करसी बयान ॥२९॥

१. सामूहिक आत्म जागृति (क्यामत) की निश्चित अवधि । २. कदाचित ।

कई विध की निसानियां, जिन विध हुई जागन ।
हँसते हरखे जागसी, सुख देसी सब सैयन ॥३०॥

बाल लीला और किसोर, तीसरी बुढ़ापन ।
तीन अवस्था तीन ब्रह्मांड, देखाए मिने एक खिन ॥३१॥

बाबा बूढा होए खेलावसी, दे मन चाह्या सुख सब ।
तीन अवस्था एक साइत में, देखाए के हँससी अब ॥३२॥

तीन ठौर लीला करी, देखाए तीन ब्रह्मांड ।
सो तीनों एक पलमें, देखाए के उड़ावसी इंड ॥३३॥

खेले एकै रात में, बृज रास जागन ।
बेर[१] साइत[२] भी ना हुई, यों होसी सब सैयन ॥३४॥

बीच ब्रह्मांड ना जुग कोई, बरस मास ना दिन ।
खिन में सब देखाए के, दोए[३] साखें करी जागन ॥३५॥

दाना एक खस खस का, तामें देखाए चौदे भवन ।
सो दाना फेर होएसी, तुम देखोगे सब जन ॥३६॥

पट कर बड़ा देखाइया, चौदे तबक बनाए ।
तुम पर हाँसी करके, देसी पट उड़ाए ॥३७॥

ज्यों ज्यों होसी जागनी, त्यों त्यों उड़सी एह ।
देखोगे सब नजरों, पिया हाँसी करी है जेह ॥३८॥

पियाजीएँ कई हाँसी करी, सो लिखी मिने किताब ।
जब सैयां सबे मिली, तब होसी बिना हिसाब ॥३९॥

और भी कहूं सो सुनो, जाहेर महंमद बात ।
और सबे उड़ाए के, एक रखी कदर की रात ॥४०॥

सब रोसनाई इनमें, सांची कहियत हैं जेह ।
उतरी है पिया पास थें, रात नूर भरी है एह ॥४१॥

१. देरी । २. एक पल । ३. दोनों धर्म ग्रन्थ (वेद - कतेब) की साक्षी (प्रमाण) ।

वतन थें पिउ प्यारियां, आइयां सबे मिल ।
इसी रात के बीच में, करने को सैल ॥४२॥

पिया भेजे मलायक[१], रखोपे[२] रूहों कारन ।
सो संग अंदर रेहेवहीं, करत सदा रोसन ॥४३॥

तबक चौदे इन में, जिमी और आसमान ।
रात बड़ी कदर की, कोई नाहीं इन समान ॥४४॥

फिरत चिरागां[३] इन में, एक चांद दूजा सूर ।
ए तो सोर सेहेरन का, नहीं रोसन वतनी नूर ॥४५॥

रसूलें ए जाहेर कह्या, दिन रोसन पिया वतन ।
और अंधेर सब दज्जाल, जो गोविंद भेड़ा फितन ॥४६॥

नींद को रात कदर कही, दुनी ढूंढ़ें खेल में रात ।
कहे जो आजूज माजूज, ए तिन में गोते खात ॥४७॥

दरिया रूप अंधेरी, आदम रूप दज्जाल ।
एही सरूप कुलीय का, वैर विखे लानती चाल ॥४८॥

आदम रूप वैराट, अनेक विध खेलत ।
झूठ कुफर कुली पसरया, सब सचराचर पसु मत ॥४९॥

सुन्दरबाइऐं याको कह्या, गोविंद भेड़ा मंडल ।
सोई कलजुग दज्जाल, व्याप रह्या सकल ॥५०॥

खेल कह्या है नींद का, सब खेलें बीच अंधेर ।
ए जो आइयां खेल देखने, ताए खैंच लिया दिल फेर ॥५१॥

जंग किया सैयां तिनसों, जो आगे कछुए नांहें ।
ए भी कहें ओ ना कछू, पर उरझ रहियां तिन मांहें ॥५२॥

लई लड़ाई सैयां तिनसों, जाए पड़ियां बंध ।
ना रस्सी ना बांधे जिने, पर छूट ना सके कोई फंद[४] ॥५३॥

१. देवी - देवता (फरिश्ते) । २. रक्षक । ३. दीपक । ४. फंदा (जाल) ।

जुदी जातें भाँतें जुदी, खड़ियां जुदे भेख धर ।
जानत नीके झूठ है, तो भी पकड़ रहियां सत कर ॥५४॥

जुदे जुदे नाम खसम के, एक नारी दूजे नर ।
खुद खसम को भूल के, खेल में बैठियां सत कर ॥५५॥

पिया खजाना खरच के, आए बंध से लैयां छुड़ाए ।
अब सो करें मेहेमांनियां[१], बस्तर भूखन पेहेराए ॥५६॥

कई भोजन मेवे मिठाइयां, तकिए सेज जवेर ।
सेवक सेवा दुनियां, करसी ब्याह सुंदर ॥५७॥

यामें कई विध हाँसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए ।
सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए ॥५८॥

वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सब्द ।
कई विध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद ॥५९॥

याही लीला सब कोई, गावत गुझ अगम ।
गरजसी वैराट में, हुए जाहेर सैयां हम ॥६०॥

वैराट सारा गाएसी, नर नारी चित ल्याए ।
पर गावना सुन महंमद का, रेहेसी सबे अचंभाए ॥६१॥

महंमद बातें बोहोत हैं, सो केती लिखूं तुम ।
ए बातें तब होएसी, जब मिलसी हम तुम ॥६२॥

महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ मांहें ।
मैं चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या नांहें ॥६३॥

मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातिर ।
सो ताला अजूं खुल्या नहीं, तो मैं पोहोंचों क्यों कर ॥६४॥

ताला द्वार कजाए का, आए खोलसी जब ।
कयामत रोसन करके, मिल भेले चलसी सब ॥६५॥

१. अतिथि वत् (मेहमान की तरह) सत्कार ।

बाईजीएँ घर चलते, जाहेर कहे वचन ।
आड़ी खड़ी इन्द्रावती, है इनके हाथ जागन ॥६६॥

जुदी हम से भगवान[1] की, रूह फिरी एक सोए ।
जब फिरे[2] सुनसी हम[3] को, तब घरों आवसी रोए ॥६७॥

ए जो भिस्त हमों करी, फेर एही भानसी दुख ।
बुध असराफील पोहोंचहीं, तब ताए भी देसी सुख ॥६८॥

रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम ।
मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम ॥६९॥

काजी कजा ऐसी करी, रही ना किसी की हाम ।
हुआ महंमद खिताब मेंहेदी, मिल्या मिने इमाम ॥७०॥

जबराईल पिया हुकमें, रूहों करत रखोपा[4] आए ।
सोई सूरत है अपनी, पिया हुकमें लेत मिलाए ॥७१॥

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक ।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक ॥७२॥

अब सुनो प्यारे साथजी, पिया प्रगट होत सबन ।
सारों को सुख देय के, उड़ावत एह सुपन ॥७३॥

वैराट चौदे तबक, करके नूर नजर ।
कायम दिए सुख मन बंछे[5], ब्रह्मांड सचराचर ॥७४॥

॥प्रकरण॥४१॥चौपाई॥१६६४॥

सनंध - पत्री छोटी

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार ।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार ॥१॥

सैयां सुन दौड़ियो, सई मेरी नाहीं बिलम कछू अब ।
ऐसी खबर दई महंमदें, सैयां सुन दौड़ियो सब ॥२॥

१. महा विष्णु । २. वापिस परम धाम लौटना । ३. ब्रह्मात्माओं का । ४. रखवाला, अंग-रक्षक ।
५. दिल चाहे (मनो वांच्छित) ।

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत ।
सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत ।।३।।

महंमद पाती के वचन, सुनियो भीम मकुंद ।
आगम था पट बीच में, सो काढ़्या पट निकंद[१] ।।४।।

आगम[२] निगम[२] सब लिख्या, हुआ है होसी जेह ।
ए बानी तो बोहोत है, पर नेक कहूं तुमें एह ।।५।।

ए खेल है जो नींद का, तामें आधी दई उड़ाए ।
बाकी उड़ाए देत हों, तुम साथ को लीजो बुलाए ।।६।।

तारीख तीन ब्रह्मांड की, केहेती हों कर हेत ।
नींद एक आधी दूसरी, तीसरी में सावचेत[३] ।।७।।

बरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस ।
होसी नेहेचल[४] नूर नजरों[५], जित दिन हजार बरीस ।।८।।

यामें नव सै छेहंतर जब हुए, तब हुआ नूह तोफान ।
जल ऊपर तले से उमड़या, हो गया एक जिमी आसमान ।।९।।

पार हुई तहां से रूहें, और सब हुए गरक ।
फेर तीसरा ए पैदा हुआ, यों देत साहेदी हक ॥१०॥

आद आदम के छपन सै, बीते जब सैंतीस ।
तबहीं दस सदी पर, होसी नब्बे बरीस ॥११॥

महंमद हुआ मेंहेदी, सैयद केहेलाया सही ।
खिताब दिया जब खसमें, तब भेली इमाम भई ॥१२॥

रूह अल्ला ईसा रोसन, असराफील अकल ।
सूरत साफ जबराईल, आए मेंहेंदी में मिले सकल ॥१३॥

हुआ हिंदुओं में जाहेर, हिंद से पाक मरद ।
इस्क राह चलावसी, चालीस बरस लों हद ॥१४॥

१. हिसाब । २. भविष्य में होने वाली अलौकिक घटनाएँ । ३. पूर्ण जागृत अवस्था । ४. अखंड होना ।
५. अक्षरब्रह्म की द्रष्टि में ।

काबिल[1] हिंद के बीच में, होसी इमाम रोसन ।
ए लीजो प्रगट इसारतें, दोए रूहों का मिलन ॥१५॥

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेंदी पाक पूरन ।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन ॥१६॥

असलू जुथ रूहें चालीस, तिनमें बारे हजार ।
बारे भेलियां रास में, इत चौबीस सहस्त्र कुमार ॥१७॥

दस बरस लों खेलहीं, होसी विनोद कई हाँस ।
सबके मनोरथ पूरने, करसी बड़ो विलास ॥१८॥

सत वैराट में पसरया, काढ़्या कुली जालिम ।
चौदे तबक सचराचर, नूर इस्क हमारा हम ॥१९॥

एक जरा जुलम न रेहेवहीं, सुबुध सबों में धरम ।
बरत्यो सुख संसार में, विकार काटे सब करम ॥२०॥

जब पूरन सदी अग्यारहीं, तब जागनी रास तमाम ।
मन चाह्या सुख दे सबों, हँसते उठे घर धाम ॥२१॥

पीछे सदी अग्यारहीं के, जब होसी तीस बरस ।
बनी आदम पसु पंखी, नूर इस्क पिलाया रस ॥२२॥

रोसनाई नूर बुध की, रही न किसी की हाम ।
बारहीं सदी संपूरन, ब्रह्मांड ने पायो इनाम ॥२३॥

अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर ।
बीसा सौ बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर ॥२४॥

ए तलबे[2] तुम वास्ते, मैं नेक देखी किताब ।
ए दिन दिलमें आन के, तुम साथ मिलाओ सिताब ॥२५॥

बेरिज[3] करी वैराट की, ए पढ़ियो चित दे ।
खेलाए रास जागनी, झलकाओ नूर ए ॥२६॥

१. योग्य (भारत की उत्तर - पश्चिमी सीमा से लगता एक राज्य, अफगानिस्तान की राजधानी) ।
२. मांग (याचना) जानने का अनुरोध करना । ३. पूरा हिसाब, विवरण ।

मेंहेंदी[१] हदां[२] कर दई, घर इमाम बताई राह ।
पोहोंचे अर्स मेयराज[३] को, हँस मिलियां रूहें खुदाए[४] ॥२७॥

॥प्रकरण॥।४२।।चौपाई।।१६९१।।

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण २१४, चौपाई ६३६०

।। सनंध सम्पूर्ण ।।

१. महामति श्री प्राणनाथजी (इमाम मेंहेदी) । २. सीमाँ निर्धारित करना । ३. साक्षात्कार हेतु । ४. हक - श्री राज जी ।